श्री बगलामुखीतत्त्व विमर्श

(श्रीसुक्त एवं बगला कवच सहित)

श्री बगलामुखी देवी

लेखक

डॉ. लक्ष्मीनारायण शास्त्री

संदेश

श्रीमती वसुन्धरा राजे

मुख्य मंत्री राजस्थान

माननीय डॉ. शास्त्री जी मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि आपके द्वारा लिखित 'बगलामुखी-तत्त्व-विमर्श' ग्रन्थ का प्रकाशन राजस्थान वैदिक तान्त्रिक शोध संस्थान, जयपुर द्वारा प्रकाशित हो रहा है।

मेरा मानना है कि सर्वोत्तम सिद्धि तो यह है कि जीव मात्र में हमें शिव के दर्शन हों और सबके प्रति निःस्वार्थ सेवाभाव से शुभ कार्य करने की सतत् प्रेरणा हमारे मन में बनी रहे।

तन्त्र साधकों एवं उपासकों के लिए इस ग्रन्थ में षट्कर्मो का वर्णन और तन्त्र शास्त्रों में निहित विधि विधानों का प्रतिपादन किया गया है। आशा है, भावी पीढ़ी के लिये यह पुस्तक उपयोगी रहेगी।

शुभकामनाओं सहित,

सद्भावी

वसुन्धरा राजे

For Worded Free of Cost, With,
The Compliments of Rashtriya
Sanskrit Sansthan, New Delhi.

राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान
पुस्तकालय
परिग्रहण सं. 23727
दिनांक 16.06.08

"श्री बगलामुखीतत्त्व विमर्श"

राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान
पुस्तकालय
परिग्रहण सं. 23727
दि. 16.06.08
नई दिल्ली

लेखक

डॉ. लक्ष्मीनारायण शास्त्री

"श्री बगलामुखीतत्त्व विमर्श"

।। श्री बगलामुखी देवी।।

"श्री बगलामुखीतत्त्व विमर्श"

सर्वाधिकार सुरक्षित © लेखक - डॉ. लक्ष्मीनारायण शास्त्री

प्रथम संस्करण सन् 2007

मुल्य रू. 300/- (तीन सौ रूपये)

प्रकाशक एव प्राप्ति स्थान :

राजस्थान वैदिक तांत्रिक शोध संस्थान
4एफ एफ, जे.डी.ए. फ्लेट्स, चित्रकूट, अजमेर रोड़, जयपुर
मोबाईल - 91-9414228995

कम्प्यूटर डिजाइनिंग एवं मुद्रक :

रेही कम्प्यूटर्स एण्ड प्रिन्टर्स
340, कृष्ण भवन, चांदी की टकसाल, जयपुर
दूरभाष - 0141-2634328

प्राचीन पक्षीराज

समर्पणम्

परम् श्रद्धेय 1008 श्री स्वामी जी महाराज

सत्यमेव जयते

मुख्य मंत्री

राजस्थान

अ.शा.पत्र क्रमांक:मुम/जसप्र/2007

जयपुर, दिनांक:

18 APR 2007

माननीय डॉ. शास्त्री जी

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि आपके द्वारा लिखित 'बगलामुखी–तत्त्व–विमर्श' ग्रन्थ का प्रकाशन राजस्थान वैदिक तान्त्रिक शोध संस्थान, जयपुर द्वारा प्रकाशित हो रहा है।

मेरा मानना है कि सर्वोत्तम सिद्धि तो यह है कि जीव मात्र में हमें शिव के दर्शन हों और सबके प्रति निःस्वार्थ सेवाभाव से शुभ कार्य करने की सतत् प्रेरणा हमारे मन में बनी रहे।

तन्त्र साधकों एवं उपासकों के लिए इस ग्रन्थ में षट्कर्मों का वर्णन और तन्त्र शास्त्रों में निहित विधि विधानों का प्रतिपादन किया गया है। आशा है, भावी पीढ़ी के लिये यह पुस्तक उपयोगी रहेगी।

शुभकामनाओं सहित,

सद्भावी,

वसुन्धरा राजे

(वसुन्धरा राजे)

डॉ. लक्ष्मीनारायण शास्त्री,
अध्यक्ष,
राज.वैदिक तान्त्रिक शोध संस्थान,
4एफ एफ जे.डी.ए. फ्लेट्स,
चित्रकूट, अजमेर रोड़, जयपुर (राज.)

समर्पणम्

परम् श्रद्धेय प्रो. सी. एल. मिश्रा

दामोदर शर्मा
आई.ए.एस.
शासन सचिव

टेलीफोन (ऑ) 0141-2703368
0141-2710362
(नि.) 0141-2245526
फैक्स : 0141-2704359

संस्कृत शिक्षा विभाग,
राजस्थान सरकार, जयपुर
एवं
सभापति, निष्पादक परिषद्
राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल
प्रशासनिक ब्लॉक : डॉ. एस. राधाकृष्णन् शिक्षा संकुल
जवाहर लाल नेहरू मार्ग, जयपुर

शुभाशंसा

सॉख्यायन तन्त्र शास्त्र में भगवती पीताम्वरा का महत्वपूर्ण स्थान है। अथर्ववेद के पंचम काण्ड में छठे अनुवाक में पीताम्वरा सूक्त से सम्बन्धित मन्त्र उपलब्ध होते हैं। पीतामवरोपनिषद्, रूद्रयामल तन्त्र आदि में मॉ भगवती का माहात्म्य वर्णित है। देवासुर संग्राम में जब देवता परास्त होने लगे तो मॉ भगवती ने ही विराट स्वरूप को धारण कर देव विजय प्रदान की ।

" बगलामुखी तत्त्व विमर्श " नामक ग्रन्थ के पॉच अध्यायों में पीताम्वरा तन्त्र का विशद् विवेचन किया गया है।

इस ग्रन्थ के अवलोकनोपरान्त यह स्पष्ट है कि तन्त्र शास्त्र के मर्मज्ञ विद्वान डॉ0 लक्ष्मीनारायण शास्त्री ने ग्रन्थ में तन्त्र शास्त्र के षट्कर्म प्रयोगों को प्रायोगिक विधि के साथ प्रकाशन किया है। यह तन्त्रशास्त्र में प्रशंसनीय प्रयास है। मैं डॉ0 शास्त्री के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

(दामोदर शर्मा)
संस्कृत शिक्षा सचिव
राजस्थान सरकार

समर्पणम्

परम् पूज्य स्व. श्री भीमसेन जी द्विवेदी

प्रो. सत्यदेव मिश्र
कुलपति
राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय
जयपुर

फोन : 0141-2710047 (का.)
0141-2352259 (नि.)
0141-2711050 (फैक्स)
ई-मेल : sdmve@yahoo.com
2-2ए, झालाना डूंगरी
जयपुर-302 004 (राजस्थान)

शुभाशंसा

सांख्यायन तन्त्र तथा चामुण्डा तन्त्र में उल्लिखित दश महाविद्याओं में देवी बगलामुखी का महत्त्वपूर्ण स्थान है। यजुर्वेद के आभिचारिक प्रकरण में श्री बगलादेवी के वैदिक रूप के दर्शन से, अथर्ववेद के पञ्चम काण्ड के छठें अनुवाक में इनसे सम्बन्धित सूक्त की प्राप्ति से, तथा पीताम्बरोपनिषद् रूद्रयामल तन्त्र, मेरू तन्त्र, सांख्यायन तन्त्र, षट्कर्मदीपिका और अग्निपुराण आदि ग्रन्थों में इनके माहात्म्य के विस्तृत वर्णन से यह प्रमाणित होता है कि भारतवर्ष में इनकी उपासना मारण, मोहन, उच्चाटन, शत्रुकृत उपद्रव के शमन एवं मुकदमें में विजय प्रभृति उद्देश्यों से की जाती है।

साधकों को ऐसी पुस्तक की अपेक्षा थी जिसमें श्री बगलादेवी की उपासना के सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक पक्षों का एकत्र विवरण प्राप्त हो सके। यह प्रसन्नता का विषय है कि तन्त्रशास्त्र के मर्मज्ञ विद्वान् डॉ. लक्ष्मीनारायण शास्त्री ने अपनी पुस्तक ''श्री बगलामुखीतत्त्व विमर्श'' में उपर्युक्त आवश्यकता की पूर्ति का प्रशंसनीय प्रयास किया है।

मुझे विश्वास है कि भविष्य में भी डॉ. शास्त्री ऐसी साधनापरक पुस्तकों के लेखन से समाज का उपकार करते रहेगें।

सत्यदेव मिश्र

निवास : 131, नेमी नगर, डी.ए.वी. स्कूल के सामने, दयानन्द मार्ग, वैशाली नगर, जयपुर-302 021

समर्पणम्

स्व. श्री पं. केशवदेव शास्त्री

स्व. श्री पं. गौरीशंकर शास्त्री

।। श्री बगलामुखी तत्त्व विमर्श ।।

क्र.स.	विषय	पृ.स.
1.	संदेश-मुख्य मंत्री, राजस्थान सरकार	
2.	शुभाशंसा-संस्कृत शिक्षा सचिव, राजस्थान सरकार	
3.	शुभाशंसा-डॉ. सत्यदेव मिश्र पू. कुलपति संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर	
4.	प्राक्कथन -	
5.	भूमिका : प्रो. सी.एल. मिश्रा (पीताम्बरा पीठाधीश्वर-जयपुर)	
6.	1. प्रथम अध्याय :-	1-27
	ध्यान एवं दीक्षा विधि -	
	सद्गुरू व त्याज्य शिष्य -	
	विद्या प्राप्ति के उपाय -	
	बगलामुखी पूजन -	
	(अभिषेकार्थ मास, वार, नक्षत्र)	
	बगलामुखी यन्त्र लेखन विधि -	
	बगलामुखी यन्त्र -	
	बगलामुखी अभिषेक के प्रकार एवं फल -	
	व्यापार वृद्धि एवं स्थिर लक्ष्मी प्रयोग -	
	बगलाकवचम् -	
7.	2. द्वितीय अध्याय :-	28-41
	श्री बगलामुखी देवी पूजन विधि -	
	श्री बगलामुखी देवी पूजन सामग्री -	
	दश दिक्पाल पूजनविधि -	
	बगला अष्टोत्तरशत नामावली -	
	स्तम्भन विद्या -	

क्र.स.	विषय	पृ.स.
	साँख्यायन तन्त्रगत एकाक्षरी मन्त्र -	
	श्री बगलामुखी नानाविध प्रयोग एवं फल -	
	श्री बगलामुखीहरिद्रार्चन एवं हवन -	
8.	3. तृतीय अध्याय :-	42-72
	सर्वविध शान्ति स्तवक उपाय (प्रयोग) -	
	विद्वेषण स्तवक- प्रयोग विधि सहित -	
	वशीकरण स्तवक - प्रयोग विधि सहित -	
	स्तम्भन स्तवक - प्रयोग विधि सहित -	
	उच्चाटन स्तवक - प्रयोग विधि सहित -	
9.	4. चतुर्थ अध्याय :-	73-78
	मारण स्तवक - प्रयोग विधि सहित -	
	चमत्कारिक विशिष्ट प्रयोग -	
	बलीवर्द प्रयोग एवं विधि -	
	श्री बगलायन्त्र एवं बलीवर्द -	
	बिल्वफल का प्रयोग एवं विधि -	
	कुष्माण्ड प्रयोग एवं विधि -	
10.	5. पञ्चम अध्याय :-	79-108
	वज्रपञ्जर कवच स्तोत्रम् -	
	श्री पीताम्बरा रत्नावली स्तोत्रम् -	
	अथ बगलामुखी त्रैलोक्यनामविजय कवचम् -	
	नानाविध सांख्यायन बगला मंत्र -	
	हवनार्थ कुण्डों का प्रयोग -	
11.	श्री बगलामुखी देवी की आरती -	109

'' प्राक्कथन ''

मंगलाचरण

लावण्यामृतपूरिते तव कृपापाङ्गे निमग्ना नरा,
बृह्मेशादिदिगीशवृन्दमपिते जानन्ति गुञ्जोपमम्।
येषांचेतसि संस्थिताऽसि बगले ते विश्वरक्षा-क्षमाः,
प्रारब्धं द्रढयन्ति सत्वरतरं विघ्नैरविघ्नीकृताः ॥

अखिल ब्रह्माण्डनायक गुणगणाविशिष्ट भगवत श्रीमन्नारायण की परम अनुकम्पा से श्रीपीताम्बरा पीठाधीश्वर जगद्गुरू दतियाँ स्वामी जी महाराज एवं बगलामुखी साधना केन्द्र, मालवीय नगर, जयपुर के प्रधान पीठाधीश्वर स्वामी प्रो. सी.एल. मिश्रा जी के परमाशीर्वाद से बहुविध्नोपरान्त भी मातेश्वरी पीताम्बरा के प्रभावमयी तन्त्रशास्त्र को ''श्री बगलामुखी तत्त्व विमर्श'' नामक ग्रन्थ को लिखकर प्रकाशन करने की परम शक्ति मुझे प्राप्त हुई । यह भी स्वामी जी महाराज व पीताम्बरा देवी की महती कृपा है।

प्राचीनकाल से ही वेदवेदाङ्गो में तन्त्रशास्त्र सर्वोपरि रहा है। तथा भारतवर्ष के मूर्धन्य समस्त विद्वान व पीठाधीश्वर यन्त्र, मन्त्र, तन्त्रशास्त्र के मर्मज्ञ रहे है। तथा तन्त्रशास्त्र के माध्यम से समाज में असाध्य रोगों, कष्टों व बन्धनों से युक्त भक्तजनों को मोक्ष प्राप्ति हुई है। आज का समाज अनेक प्रकार के बाह्य एवं आन्तरिक दुःखों से पीड़ित है जिससे मुक्ति हेतु तन्त्रशास्त्र में षट् प्रकार के प्रयोग बताये है।

''मारणंमोहनंवश्यंस्तम्भनोच्चाटनादिकम्''

''बगलामुखी तत्व विमर्श'' नामक ग्रन्थ में बगलामुखी देवी के गूढ रहस्यों का प्रकाशन, बाह्य वायु दोषादि, विद्वेषण, वशीकरण, स्तम्भन, उच्चाटन, मारण, मोहनादि सात्विक तन्त्र विधि व प्रयोगों

का प्रकाशन किया गया है। जिसके प्रयोग करने से भक्तजनों की मनोकामना पूर्ण होगी। इस ग्रन्थ के प्रकाशन से पूर्व तन्त्रशास्त्र के प्रकाशन हेतु गुरू आज्ञा प्राप्त कर ही ग्रन्थ का प्रकाशन किया गया है। तन्त्रशास्त्र के मूर्धन्य विद्वान गुरू (पितामह) स्व. श्री पं. भीमसेन शास्त्री जी, पिताश्री स्व. श्री पं. केशवदेव शास्त्री एवं माता श्रीमती गंगादेवी निवासी-बगचौलीखार, जिला-धौलपुर तथा माननीय मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे (राजस्थान सरकार) एवं संस्कृत शिक्षा सचिव श्री दामोदर शर्मा (राजस्थान सरकार) का विशेष आभारी हूँ जिन्होने अतिव्यस्त समय में भी अपना संदेश प्रकाशनार्थ प्रेषित किया। प्रो. सी.एल. मिश्रा, प्रो. शङ्कर प्रसाद शुक्ल, डॉ. सत्यदेव मिश्र, पूर्व कुलपति (राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर) व राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) परिसर जयपुर के धर्मशास्त्र विभागाध्यक्ष डॉ. कमलनयन शर्मा, प्रो. आनन्द पुरोहित प्राचार्य (राज. महाराज आचार्य संस्कृत कॉलेज, गांधीनगर, जयपुर), श्री मोतीलाल शर्मा, निवासी-सदरवन, जिला आगरा एवं समस्त गुरूजनों के प्रति नमस्काराञ्जलि प्रदान करता हूँ। जिन्होने कि इस ग्रन्थ के प्रकाशन में यथोचित सहयोग प्रदान किया।

प्रो. विनोदी बिहारी शर्मा, डॉ. रमाकान्त शर्मा (धौलपुर), डॉ. अशोक झा, श्री अशोक दहिया एवं डॉ. सुमन दहिया का भी हृदय से आभारी हूँ जिन्होने ग्रंथ के मुद्रण में सहयोग किया।

ॐ ऐं हं श्रीं श्रीमत्पीताम्बरादेवीबगलाबुद्धिवर्द्धिनी।
यातु मामनिशं सक्षात् सहस्त्रार्कयुतद्युतिः॥

लेखक :

डॉ. लक्ष्मीनारायण शास्त्री
व्याख्याता न्यायदर्शन
राज.महा.आ.संस्कृत कॉलेज,गांधीनगर, जयपुर

भूमिका

बगलामुखी की उत्पत्ति –

श्लोक :- अथ वक्ष्यामि देवेशि बगलोत्पत्तिकारणम् ।
पुरा कृतयुगे देवि वातक्षोभ उपस्थिते ॥

भावार्थ :- भगवान शिव कहते हैं कि देवी अब मैं बगलामुखी देवी की उत्पत्ति का कारण कहूँगा । पहले सत्ययुग में वातक्षोभ उपस्थित हुआ अर्थात् भयंकर आँधी आयी ।

श्लोक :- चराचर विनाशाय विष्णुश्चिन्तापरायणाः ।
तपस्यया च सन्तुष्टा महाश्रीत्रिपुराम्बिका ॥

भावार्थ :- वह वातक्षोभ चराचर सृष्टि का विनाशक सिद्ध हुआ। इस तरह सृष्टि विनाश को देखकर अत्यन्त चिन्ता मग्न तब विष्णु ने त्रिपुराम्बा की तपस्या कर उसे सन्तुष्ट किया।

श्लोक :- हरिद्राख्यं सरो दृष्ट्वा जलक्रीडापरायणा ।
महापीत "ह्रस्यान्ते सौराष्ट्रे बगलाम्बिकां ॥

भावार्थ :- भगवान विष्णु की तपस्या से सन्तुष्ट होकर सौराष्ट्र में हरिद्राख्य सरोवर में जलक्रीडा परायण भगवती बगलामुखी का महापीत तालाब में एक श्रीविद्या से उत्पन्न तेज (प्रकाश) इधर उधर चारों दिशाओं में फैलने लगा जैसा कि अधो लिखित श्लोक से स्पष्ट है।

श्लोक :- श्रीविद्या सम्भवो तेजो विजृम्भति इतस्ततः ।
चतुर्दशी भौमयुता मकारेण समन्विता ॥

अर्थात् चतुर्दशी भौमवार (मंगलवार) के दिन मकार से समन्वित है।

श्लोक :- तस्यामेवार्द्धरात्रौ तु पीत "ह्रद निवासिनी ।
ब्रह्मास्त्रा विद्या सञ्जाता त्रैलोक्यस्तम्भिनीपुरा ॥

भावार्थ :- पीत सरोवर में निवास करने वाली देवी उस चतुर्दशी की अर्द्धरात्रि को प्रादुर्भाव हुआ। जो कि तीनों लोको का स्तम्भन करने में सक्षम हुई, जिसको ब्रह्मविद्या के नाम से जाना गया।

श्री बगलामुखी माहात्म्य :-

ऐसा प्रतीत होता है कि निगम शास्त्रोक्त वल्गा ही आगमशास्त्रों की बगलामुखी है। कुञ्जिका तन्त्र में बगला शब्द का निर्वचन इस प्रकार किया गया है।

श्लोक :- वकारे वारुणी देवी गकारे सिद्धिदा स्मृता ।
लकारे पृथिवी चैव चैतन्या या प्रकीर्तिता ॥

अर्थात् वकार से वारूणी देवी गकार से सिद्धिदा, लकार से पृथिवी रूपा होने से जो शक्ति, चैतन्य स्वरूपा है वही बगलादेवी है।

श्लोक :- ब्रह्मास्त्रास्तम्भिनी विद्या स्तब्धमाया मनुस्तथा ।
प्रवृन्तिरोधिनी विद्या बगला चेति कुमारक ॥

भावार्थ : तन्त्रशास्त्र में भगवती बगलादेवी को ब्रह्मास्त्रस्तम्भिनी विद्या, स्तब्धमाया, प्रवृत्तिरोधिनी इत्यादि नामों से अभिहित किया है।

श्लोक :- मन्त्र जीवन विद्या च प्राणिप्राणापहारिका ।
षट्कर्माधार विद्या च ये ते पर्यायवाचकाः ॥

मन्त्र जीवन विद्या, प्राणापहारिका, षट्कर्माधार क्रिया आदि नाम भी बगला देवी के ही हैं।

श्लोक :- परानुष्ठानहरणं परकीर्ति विनाशनम् ।
पराजयकृद् विद्याया परेषां भ्रमकारणम् ॥

ये वा विजयमिच्छन्ति ये वा जेतुं क्षयं कलौ ।
ये वा क्रूरमृगेन्द्राणां क्षयमिच्छन्ति मानवाः ॥

येच्छन्त्याकर्षशान्त्यादि वश्यं सम्मोहनादिकम्।
विद्वेषोच्चाटनं प्रीति तेनोपायस्त्वयं मनुः ॥

भावार्थ : दूसरे के अनुष्ठान को प्रभाव रहित करना, दूसरे के यश का विनाश करना, किसी को पराजित कराना, भ्रमित करना, किसी को जीतना, किसी की जीत को नष्ट करना, क्रूर सिंहादिकों का क्षय करना, आकृष्ट करना, शान्ति करना, वशीभूत करना, सम्मोहित करना, परस्पर मन-मुटाव कराना, उच्चाटन करना, परस्पर प्रेम कराना इत्यादि अनेक कार्य भगवती बगलामुखी की उपासना से शीघ्र सिद्ध होते हैं। ऐसा अत्युत्तम माहात्म्य बगलामुखी देवी का शास्त्रों में प्रतिपादित किया है। किंबहुना बगलामुखी उपासना से व्यक्ति त्रैलोक्य विजयी हो सकता है।

महाविद्याओं में बगलामुखी व स्वरूपः-

प्राणतोषिणी ग्रन्थ में दशमहाविद्याओं का उल्लेख है जो अद्योलिखित है। :-

श्लोक :- काली तारा महाविद्या षोडशी भुवनेश्वरी।
भैरवी छिन्नमस्ता च विद्या धूमावती तथा ॥1॥

बगला सिद्धविद्याः मातङ्गी कमलात्मिका।
एता दश महाविद्याः सिद्धविद्या प्रकीर्तिताः ॥2॥(प्र.सं.717)

भावार्थ : अर्थात् काली, तारा, षोडशी, भुवनेश्वरी, भैरवी,

छिन्नमस्ता, धूमावती, बगला, मातङ्गी, कमलात्मिका इत्यादि दश महाविद्याएं है, जिनमें बगला देवी का भी उल्लेख है। इसके माहात्म्य के विषय में कहा है कि-

श्लोक :- विद्या च बगलानाम्नी मुनिगुह्यम् सुपावनम् ।
विना च स्तम्भिनी विद्यां न विद्या च प्रभासते ॥

भावार्थ : अर्थात् सुपावन गोपनीय बगला नामक विद्या एक स्तम्भिनी विद्या है, बिना स्तम्भिनी विद्या के किसी का भी प्रभाव नहीं रहता है। अतः प्रभावशाली बनने का इच्छुक बगला देवी की उपासना अवश्य करें।

श्लोक :- पर विद्याछेदनं यच्च पर यन्त्रविदारणम् ।
पर मन्त्र प्रयोगेषु सदा विध्वंसकारणम् ॥

भावार्थ : अर्थात् दूसरे की विद्या का छेदन करना, पर मन्त्र का प्रभाव नष्ट करना, किसी का विध्वंस करना, मन्त्र का प्रभाव नष्ट करना इत्यादि इसके विशिष्ट प्रयोजन हैं।

श्री बगलामुखी महाविद्या का माहात्म्य अनुपम है अद्वितीय है। अधोलिखित श्लोक में बहुत ही सुन्दर भाव व फल वर्णित है।

श्लोक :- वादीमूकति रङ्कति क्षितिपतिर्वैश्वानरः शीतति ।
क्रोधी शांतति दुर्जनः सुजनति क्षिप्रानुगः खञ्जति ॥

गर्वी खर्वति सर्वविच्च जडति त्वद्यंत्रिणा यन्त्रितः।
श्रीनित्यं बगलामुखि प्रतिदिनं कल्याणि! तुभ्यं नमः ॥

भावार्थ : बगलामुखी देवी का अद्भुत विस्मयकारी महत्व को जैसे प्रकृष्ट वक्ता मूक भाव को प्राप्त हो जाता है। राजा, रङ्कता अर्थात् गरीबी का दास हो जाता है अर्थात निर्धन हो जाता हैं। अग्नि देव हिमवत् अर्थात बर्फ की तरह शीतलता को धारण कर लेते है।

क्रोधी व्यक्ति शान्त हो जाता है, दुर्जन, सज्जनता का व्यवहार करने लगता है।

अहंकार नष्ट हो जाता है अर्थात् बौनेपन का शिकार हो जाता है। सर्वज्ञ व्यक्ति जड़वत् हो जाता है। भगवती बगला देवी के यन्त्र से यन्त्रित करने पर अलौकिक कार्यों का सम्पादन होता है।

प्रोफेसर सी.एल.मिश्रा

बगलामुखी साधना केन्द

सत्कार शोपिग सेन्टर-3

मालवीय नगर, जयपुर

प्रथमोअध्यायः

ध्यानम्-

जिह्वाग्रमादाय करेणदेवी, वामेन शत्रून् परिपीडयन्तीम् ।
पीतम्बरां पीनपयोधराढ्यां, सदास्मरेऽहं बगलाम्बिकाहृदि ॥

दीक्षा विधि व महत्व :-

श्लोक :- दीक्षा विधिं बिनामन्त्रं यो जपेत् कोट कोटयः ।
न स सिद्धिंमवाप्नोति, सिन्धु सैकत वर्षवत् ॥1॥

भावार्थ :- जो साधक दीक्षा विधि के बिना किसी भी मन्त्र का चाहे करोड़ो मन्त्रों का जाप करें फिर भी उसका कोई फल प्राप्त नही होता है। जैसे कि समुद्र में रेत की वर्षा करने से कोई लाभ नही होता है।

श्लोक :- पुस्तके लिखितान् मन्त्रानवलोक्य जपेत्तुयः ।
सजीवन्नेव चाण्डालो मृतःश्वानो भविष्यति ॥2॥

भावार्थ :- जो साधक साधना के समय ग्रन्थ में लिखे हुए मूल मन्त्रों को देखकर जप करता है अर्थात् बिना किसी गुरू दीक्षा के जपादि करता है तो वह जीवित रहते हुऐ चाण्डाल के समान व मृत्यु के उपरान्त कुत्ते की योनि को प्राप्त करता है। अतः साधकों को मन्त्र दीक्षा के उपरान्त ही जप करना चाहिए।

गुरूलक्षण :-

श्लोकः- वेदवेदाङ्ग पारङ्गं वेदान्तार्थसुनिश्चितम् ।
वैदिकाचार संयुत्तफं, कुर्यात् गुरूमतन्द्रितः ॥

भावार्थ :- सांख्यायन तन्त्र के अनुसार साधक को गुरू का चयन करते समय गुरू,योग्यता में वेदों का ज्ञाता हो, षड् वेदाङ्ग (शिक्षा, निरूक्त,छन्द, ज्योतिष, व्याकरणादि) शास्त्रों का परिज्ञाता हो, उपनिषद विद्याओं का ज्ञाता, वैदिक पद्धति को आचरण करने वाला हो तथा आलसी गुरू न हो । ऐसे लक्षण युक्त गुरूओं से गुरूदीक्षा ग्रहण करनी चाहिए। नित्य अनित्य का विवेक रखता हो ऐसे व्यक्ति को शिष्य बनाना चाहिए।

श्लोक :- प्रस्थान ज्ञान पारीणम् नीतिशास्त्रार्थकोविदम्।
श्रीविद्या मन्त्रयन्त्रज्ञं, कुर्यात् गुरूमतन्द्रितः॥

भावार्थ :- श्री भगवती बगलामुखी की मन्त्र दीक्षा हेतु गुरू का चयन करते समय गुरू प्रस्थानत्रयी का ज्ञाता (वेदान्त दर्शन, गीता व उपनिषद्), नीतिशास्त्र एवं श्रीविद्या (भगवती बगलामुखी) के मन्त्र व यन्त्र का विधिपूर्वक ज्ञाता होना चाहिए। तथा आलस रहित गुरू होना चाहिए।

विद्याप्राप्ति के उपाय :-

गुरूशुश्रूषया विद्या पुष्कलेन धनेन वा।
अथवा विद्यया विद्या चतुर्थं नोपलभ्यते॥

प्रथम उपाय सेवा शुश्रूषादि, द्वितीय पर्याप्त द्रव्य राशि, तृतीय विद्या द्वारा विद्या इत्यादि तीन उपाय शास्त्रकारों ने विद्या प्राप्ति के बतायें है। जिनमें सर्वोत्तम उपाय शुश्रूषा द्वारा विद्या प्राप्त करना बताया गया है। जैसा अधोलिखित श्लोक से स्पष्ट है।

मोक्षार्थी च गुरुं यत्नात् शुश्रूषेणैव तोषयेत्।
शुश्रूणेव यल्लब्धं सा विद्या सर्वसिद्धिदा ॥

मुमुक्षु शिष्य का परम कर्त्तव्य है कि वह यत्न पूर्वक सेवा करके गुरूदेव को सन्तुष्ट करें क्योकि सेवा द्वारा जो विद्या प्राप्त होती है वह सात्विक व सर्वसिद्धि प्रदायक होती है।

सत् शिष्य के लक्षण :-

निर्भत्सरं निरालम्बं नीतिशास्त्र विशारदम्।
नित्यानित्य विवेकं च शिष्यत्वेनोपकल्पयेत्॥

भावार्थ :- जो ईर्ष्यालु न हो, निराश्रित हो, नीतिशास्त्र का ज्ञाता हो त्याज्य शिष्य :-

कामुकं काञ्चनासक्तं करूणालय वर्जितम्।
सर्वदा वर्जयेच्छिष्यं गुरु सेवाभि मानिनम्॥

जो कामुक हो, लालची हो, अर्थात् धन का लोभी हो जिसके हृदय में

दया नही हो जो गुरू सेवाभिभानी हो, ऐसे शिष्य को दीक्षित नही करना चाहिए, अन्यथा गुरू पिशाचता को प्राप्त होता है। कहा भी है "प्राप्नुयात् सः पिशाचताम्" इत्यादि ।

बगलामुखी अभिषेकार्थ उत्तम मास :-

आश्विने कार्तिके चैव चैत्रमासे कुमारक ।
कुर्युस्तमभिषेकं च मानवाः सिद्धिकांक्षिणः ॥

भावार्थ :-आश्विन मास (क्वार का महिना) कार्तिक मास, चैत्र मास तथा वैशाख मास भी भगवती बगलामुखी के अभिषेक समर्चन हेतु सर्वश्रेष्ठ है। इन महीनों में अभिषेक करने से साधक सद्यः सिद्धि को प्राप्त होता है।

पूजा में ग्राह्यवार :-

रवौ गुरौ भृगाब्जेवावासरे च कुमारक।
मन्त्राभिषेक कर्त्तव्यं सततं सिद्धिकांक्षिभिः ॥

भावार्थ :- रविवार, गुरूवार, शुक्रवार, सोमवार इत्यादि चार वार भगवती बगलामुखी की पूजा में सिद्धिदायक है।

पूजा में ग्राह्य नक्षत्र :-

रोहिणी श्रवणे चैव पुष्ये चैव विशाखयोः।
मन्त्राभिषेकं कर्त्तव्यं सद्यः सिद्धिकरं भुवि ॥

भावार्थ :- रोहिणी, श्रवण, पुष्य, विशाखादि नक्षत्रों में अभिषेक करने से साधक शीघ्र सिद्धि प्राप्त करता है।

यन्त्र लेखन विधि :-

देवस्येशान भागे तु गोमयेनोपलेपितम् ।
रङ्गचल्या लिखेद्यन्त्रं रक्त पीतासितासितैः ॥

भावार्थ :- देवता के ईशान भाग में गोमय से लीपकर अनार की कलम से यन्त्र को लिखे स्याही लाल, पीली, श्वेत अथवा काली होनी चाहिए। श्वेतार्क दूध के द्वारा यन्त्र लिखने का भी विधान है । दूध में हरिद्रा मिलाकर भी लिखने का विधान है।

षोडशाङ्गुलमानं तु लिखेद् बिन्दून्मनन्यधीः ।
ततो (तदु) परि लिखेद् वृत्तंमष्ट पत्रं तु शोभनम् ॥

भावार्थ :- उस यन्त्र के ऊपर सोलह अङ्गुल परिमित बिन्दु अनन्यभाव से बनाये और उस बिन्दु पर सुन्दर अष्टदल बनाना चाहिए।

प्रियङ्गुशालिगोधूम चणकाटकमाषकैः ।
कुलत्थमुद्गनीवारैः क्रमाद् मध्यादि विन्यसेत् ॥

भावार्थ :- अष्ट दल के ऊपर यव, चावल, गेहूँ, चना, उडद, कुलत्थ, मूंग, धान्य इत्यादि अनाज रखें।

अष्ट पत्रे न्यसेत् पुत्र कलशाष्टकमादरात्।
क्षालितं चासितं शुद्धं कलशं च समर्पयेत् ॥

भावार्थ :- अष्ट दल पर आठ कलश रखें जो कि काले नहीं हो व शुद्ध होने चाहिए। तथा एक कलश और रखें इस तरह नौ कलश रखने चाहिए।

षोड़शैरुपचारैश्च धूपाद्यनेव विन्यसेत्।
आपो वानेन पूर्येत नदी जलमकल्मषम् ॥

भावार्थ :- उन कलशों में शुद्ध नदी का जल भरकर उनकी षोड़शोपचार पूजा करनी चाहिए। तथा उनके चारों तरफ धूपबत्ती जलाकर रखनी चाहिए।

निः क्षिपेन्नवभाण्डेषु नवरत्नान् कुमारक।
कस्तूरी चन्दनोपेतान् नवभाण्डेषु निः क्षिपेत् ॥

भावार्थ :- नौ कलशों में नवरत्न प्रक्षिप्त करें तथा कस्तूरिका चन्दनादि भी नव कलशों में डालें है।

मध्ये देवीं समावाह्य चिन्मयीं बगलामुखीम्।
प्राणस्थापन मार्गेण केरलोक्त विधानतः ॥

भावार्थ :- मध्य में चेतनतामयी भगवती बगलामुखी का आवाहन कर प्राण प्रतिष्ठा पूर्वक केरलोक्त विधान से पूजा करें।

अर्चयेत्पूर्ववत् केरलोक्तेनेव विधानतः ।
नवीन नवसंख्याक वस्त्रेणैव तु वेष्टयेत् ॥

भावार्थ :- केरलोक्त विधान से ही नव संख्याक कलशों की पूजा क्रमशः करके वस्त्र से वेष्टित करें।

वेदवेदांगपारीणमष्टौ ब्राह्मणमादरात्।

भावार्थ :- तत्पश्चात आदर पूर्वक वेद वेदांग पारीण आठ ब्राह्मणों को वस्त्राभूषण से अर्चना करके प्रार्थना करें। तदनन्तर शिष्य को वस्त्राभूषण से सजाकर मण्ड़प के मध्य में लाए (अलंकृत्वा तु शिष्यं तमानीय्रमण्डपान्तरे)।

वामोरुपरि विन्यस्य मूर्ध्निमाघ्राय सादसत्।
एकैकं च पुरश्चर्यामूलमन्त्रं कुमारक॥

भावार्थ : - बायी जंघा पर रखकर प्रेम पूर्वक शिर सूंघकर एक एक मूल मंत्र का उपदेश करें।

एवं मन्त्रभिषेकञ्च कुर्याद् ब्रह्मास्त्र विद्यया।
सद्यः सिद्धिर्भवेत्पुत्र पुरश्चर्यां बिना भुवि ॥

इस तरह ब्रह्मास्त्र विद्या द्वारा मन्त्राभिषेक करके बिना पुरश्चरण के व्यक्ति सिद्धि प्राप्त कर लेता है। मन्त्र प्राप्ति के बाद मन्त्र सन्ध्या का विधान है क्यो कि बिना मन्त्र सन्ध्या के सम्पूर्ण कार्य निष्फल माना जायगा।

मन्त्र सन्ध्याविहीनश्च सर्वं तन्निष्पफलं भवेत्।

अतः मन्त्र सन्ध्या की विधि को अवश्य जानना चाहिए।

अभिषेक के प्रकार :-

त्रिमध्वक्त तिलैर्होमो नृणां वश्यंकरोत्यतः।
मधुरत्रितयाक्तैः स्यादाकर्षो लवणैर्ध्रुवम् ॥1॥

तैलाभ्यक्तैनिम्बपत्रैर्होमो विद्वेषकारकः ।
तालंलोण हरिद्राभिर्दिषां संस्तम्भनं भवेत् ॥2॥

अंगार धूमं राजीशंच माहिषं गुग्गलं निशि।
श्मशानपावके हुत्वा नाशयदचिरादरान् ॥3॥

ग गरुतो गृध्रकाकानां कटुतैलं विभीतकम् ।
गृहधूमं चितावनै हुत्वाप्रोच्चाटयेद्रिपून् ॥4॥

त्रिमधु (शर्करा, मधु, शहद) तिल से होम करने से राजा वश में होता है। त्रिमधु लवण से होम करने पर आकर्षण होता है। तैल निम्बपत्र से होम करने से विद्वेषण होता है। हरताल, लवण, हरिद्रा से होम करें तो शत्रू का स्तंभन होता है। अंगार, धूम, राई, भैंस का धृत, गुग्गल, धूप इनसे शमशानाग्नि में हवन करे तो शत्रुओं का नाश होता है।

गृध काकपक्ष से सर्षप तेल के साथ मिला कर चिताग्नि में हवन करे तो शत्रु का उच्चाटन होता है।

व्यापार वृद्धि व स्थिर लक्ष्मी प्रयोग एवं बगला लक्ष्मी स्तोत्र

(एकाक्षरी महामन्त्र के हवन के विविध फल)

स्थिर लक्ष्मी प्राप्ति हेतु :-

लक्ष्मीः शान्तिस्तथः पुष्टि विघ्नाविघ्ननिवारणै।
चतुरस्रे हुनेत् कुण्डे तन्त्रावित् परिशोधिते ॥

भावार्थ : - लक्ष्मी प्राप्ति हेतु शान्ति तथा समृद्धि प्राप्त्यर्थ समस्त विघ्न विनाशनार्थ तन्त्रवित् साधक को चतुरस कुण्ड में परिशोधित करके हवन करना चाहिए। भोजपत्र, बिल्वफल, हरिद्रा, सरसों के तेल व घृत से मिश्रित हवन सामग्री का हवन करावें । मन्त्रों की संख्या आचार्य से स्पष्ट करें।

व्यापार में अधिक लाभ प्राप्ति हेतु :-

वशीकरण सम्मोहे वाणिज्ये द्रव्य संग्रहे।
कीर्तिकामस्तु जुहुयात् भगाकारे चकुण्डके॥

भावार्थ :- व्यापार में अधिक लाभार्थ वशीकरणार्थ सम्मोहनार्थ कीर्तिलाभार्थ योनि कुण्ड में होम करें।

विद्वेषणे तु जुहुयात् वर्तुले कुण्डमध्यमे।
उच्चाटने तु जुहुयात् षट्कोणाख्ये तु कुण्डके॥

भावार्थ :- विद्वेषणार्थ वर्तुलाकार कुण्ड में, उच्चाटनार्थ षट्कोण कुण्ड में होम करना चाहिए।

मारणे चाष्टकोणे तु तत् तत् कर्मानुसारतः।

भावार्थ :- मारण प्रयोगार्थ तत् तत् कर्मानुसार अष्टकोण कुण्ड में हवन करना चाहिए।

वशीकरणार्थ :-

हरिद्राखण्ड होमेन अयुतेन कुमारक।
वशीकरण सम्मोहं भवेच्छंकर भाषणम्॥

भावार्थ :- वशीकरणार्थ सम्मोनार्थ दश हजार हरिद्राखण्ड की मूल मन्त्र से आहुति देने से उक्त कार्यो की सिद्धि होती है। ऐसा भगवान शंकर का वचन है।

बगला लक्ष्मी स्तोत्र :-

ताम्र पात्रो जलं ग्राह्यं श्रीसूत्तफेनैव मन्त्रायेत।
शतं वार्द्धशतं वाथ त्रिासप्तमथ पुत्राक॥

तुलसी मञ्जरीभिश्च नार्जयेद् रोगपीडितः।
आरोहादव रोहेण ऋचान्ते मार्जनं तथा॥

त्रिकालमेककालं वी मार्जयेद् ध्यान पूर्वकम्।
त्रिभोथं च यद्रोगं नाशमाप्नोति निश्चितम्॥

श्रीसूत्तफेनैव जिह्वायां मार्जयेत् तुलसीदलैः।
त्रिसप्तं प्रातरुत्थाय जिह्वास्तंभन शान्तिकृत्॥

श्रीसूक्तम्
Sri Suktam

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्त्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥1॥

Om hiranya varnam harinim suvarnarajatsrajam |
Candram hiranamayim lakshmim jatavedo ma a vaha ||1||

तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥2॥

Tam ma a vaha jataveds laksmimanayagaminim |
Yasyam hiranyam vindeyam gamasvam purusanaham ||2||

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम् ।
श्रियं देवीमुप ह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥3॥

Asvapurvam rathamadhyam hastinadapramodinim |
sriyam devimupa hvaya srirma devi justam ||3||

कां सोस्मितां हिरण्यप्रकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम् ॥4॥

kam sosmitam hiranyapradaramardram jvalantim trptam tarpayantim |
padmesthitam padmavarnam tamihopa bvaye sriyam ||4||

चन्द्रां प्रभासा यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मिनीं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे॥5॥

Candram probhasam yasasa jvalantim sriyam loke devajustamudaram |
tam padminimim saranam pra padye alaksmirme nasyatam tvam vrne ||5||

आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ विल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु य अन्तरा याश्चबाह्या अलक्ष्मीः॥6॥

Adityavarne tapaso'dhi jato vanaspatistava vrkso'tha bilvah |
tasya phalani tapsa nudentu ya antara yasca bahya alaksmih ||6||

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातुमे ॥7॥

Upaitu mam devasakhah kirtisca maninasaha |
pradurbhuto'smi rastre'smin kirtimrddhim dadatume ||7||

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्॥8॥

Ksutpipasamalam jyesthamalaksmim nasayamyahem |
abhutimasamddhim ca sarvam nirnuda me grhat ||8||

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोप ह्वयेश्रियम् ॥9॥

Gandhadvaram duradharsam nityapustam karisinim |
isvarim sarvabhtanam tamihopa hvayasriyam ||9||

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥10॥

Manasah kamamakutim vacah satyamasrmahi |
pasunam rupamannasya mayi srih srayatam yasah ||10||

कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भवकर्दम ।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥11॥

Kardamena prajabhuta mayi sambha vakardam |
sriyam vasaya me kule mataram padmamalinim ||11||

आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥12॥

Apah srijantu snigdhani ciklita vasa me grhe |
ni ca devim mataram sriyam vasaya me kule ||12||

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह॥13॥

Ardram puskarinim pustim pingalam padmamalinim |
candram hiranmayim laksmim jatvedo maa vaha ||13||

आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥14॥

Ardram yah karinim yastim suvarnam hemamalinim |
suryam hiranmayim laksmim jatavedo ma a vaha ||14||

तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगमिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयंपुरूषानहम्॥15॥

Tam ma a vaha jatavedo laksmimanpagaminim |
yasyam hiranyam prabhutam gavo dasyo'svan vindeyampurusanaham ||15||

यः शुचिः प्रयतोभूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥16॥

Yah sucih prayatebhutvā juhuyadajyamanvaham |
suktam pancadasrcam ca srikamah satatam japet ||16||

पद्मानने पद्मविपद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि।
विश्वप्रिये विष्णु मनोऽनुकूले त्वत्पादपद्मं मयिसंनिधत्स्व॥17॥

Padmanane padmavipadmpatre padmapriye padmadalayataksi |
visvapriye visnumanukule tvatpadapadmam mayi sannidhatsva ||17||

पद्मानने पद्मऊरू पद्माक्षि पद्मसम्भवे।
तन्मे भजसि पद्माक्षि येनसौख्यं लभाम्यहम् ॥18॥

Padmanane padmauru padmaksi padmasambhave |
tanme bhajasi padmaksi yena saukhayam labhamyaham ||18||

अश्वआयि गोआयि धनदायि महाधने ।
धनं मे जुषतां देवि सर्वकामांश्च देहिमे॥19॥

Asvadayi godayi dhanadayi mahadhane |
dhanam me justam devi sarvakamansca dehime ||19 ||

पुत्रपौत्रधनंधान्यं हस्त्यश्वाश्वतरी रथम् ।
प्रजानां भवसि माता आयुष्मन्तं करोतु मे ॥20॥

Putrapautradhanam dhanyam hastyascasvatari ratham |
prajanam bhavasi mata ayusmantam keratu me ||20 ||

धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्योधनंवसुः ।
धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्वरुणो धनमश्विना ॥21॥

Dhanamagnirdhanam vayurdhanam suryodhanam vasuh |
dhanamindro brhaspatirvaruno dhanamasvina ||21||

वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा ।
सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं ददातु सोमिनः ॥22॥

Vainateya somam piba somam pibatu vrtraha |
somam dhanasya samino mahyam dadatu sominah ||22||

न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः ।
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्त्या श्रीसूक्तजापिनाम् ॥23॥

Na krodho na ca matsryam na lobho nasubha matih |
bhavanti krtapunyanam bhaktya srisuktajapinam ||23||

सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुकगन्धमाल्यशोभे ।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम् ॥24॥

Sarasujanilye sarojahaste dhavalataramsukagndhamalyasobhe |
bhagavati hariballabhe manojne tribhuvanabhutikari prasida mahyam ||24||

विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम् ।
लक्ष्मीं प्रियसखीं भूमिं न माम्यच्युतवल्लभाम् ॥25॥

Visnupatnim ksamam devim madhavim madhavapriyam |
laksmim priyasakhim bhumim namamyacyutavallabham ||25||

महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि ।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात ॥26॥

Mahalaksmyai ca vidmahe visnupatnyai ca dhimahi |
tanno laksmih pracodayat ||26||

आनन्दः कर्दमः श्रीदश्चिक्लीत इति विश्रुताः ।
ऋष्यः श्रियः पुत्राश्च श्रीर्देवीर्देवता मताः ॥27॥

Anandah kardamah sridasciklita iti visrutah |
rsayah sriyah putrasca srirdevidevta matah ||27||

ऋणरोगादि दारिद्र्यपापक्षुद्रपमृत्यवः ।
भयशोकमनस्ताचा नश्यन्तु मम सर्वदा ॥28॥

Rnarogadi daridryapapaksudrapamrtyavah |
bhayasokamanastapa nasyantu mama sarvada ||28||

श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविद्याच्छोभमानं महीयते ।
धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः ॥29॥

Srirvarcasvamayuusyamarogyamavidhacchobhamanam mahiyate |
dhanam dhanyam pasum bahuputralabham satasamvatsaram dirghamayuh ||29||

॥ इति श्रीसूक्तं समाप्तम् ॥

धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्योधनंवसुः ।
धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्वरुणो धनमश्विना ॥21॥

Dhanamagnirdhanam vayurdhanam suryodhanam vasuh |
dhanamindro brhaspatirvaruno dhanamasvina ||21||

वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा ।
सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं ददातु सोमिनः ॥22॥

Vainateya somam piba somam pibatu vrtraha |
somam dhanasya samino mahyam dadatu sominah ||22||

न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः ।
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्त्या श्रीसूक्तजापिनाम् ॥23॥

Na krodho na ca matsryam na lobho nasubha matih |
bhavanti krtapunyanam bhaktya srisuktajapinam ||23||

सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुकगन्धमाल्यशोभे ।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम् ॥24॥

Sarasujanilye sarojahaste dhavalataramsukagndhamalyasobhe |
bhagavati hariballabhe manojne tribhuvanabhutikari prasida mahyam ||24||

विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम् ।
लक्ष्मीं प्रियसखीं भूमिं न माम्यच्युतवल्लभाम् ॥25॥

Visnupatnim ksamam devim madhavim madhavapriyam |
laksmim priyasakhim bhumim namamyacyutavallabham ||25||

महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि ।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात ॥26॥

Mahalaksmyai ca vidmahe visnupatnyai ca dhimahi |
tanno laksmih pracodayat ||26||

आनन्दः कर्दमः श्रीदश्चिक्लीत इति विश्रुताः ।
ऋष्यः श्रियः पुत्राश्च श्रीर्देवीर्देवता मताः ॥27॥

Anandah kardamah sridasciklita iti visrutah |
rsayah sriyah putrasca srirdevidevta matah ||27||

ऋणरोगादि दारिद्र्यपापक्षुद्रपमृत्यवः ।
भयशोकमनस्ताचा नश्यन्तु मम सर्वदा ॥28॥

Rnarogadi daridryapapaksudrapamrtyavah |
bhayasokamanastapa nasyantu mama sarvada ||28||

श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविद्याच्छोभमानं महीयते ।
धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः ॥29॥

Srirvarcasvamayuusyamarogyamavidhacchobhamanam mahiyate |
dhanam dhanyam pasum bahuputralabham satasamvatsaram dirghamayuh ||29||

॥ इति श्रीसूक्तं समाप्तम् ॥

श्री बगलामुखी पद्धति

ॐ अस्य बगलामुखी मंत्रस्य नारदऋषिः बृहती छंदः बगलामुखी देवता सर्वाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः॥

पूजन पद्धतिः – प्रातः नित्यनैमित्तिक कार्यं कृत्वा प्राणयामान्तं विधाय ऋष्यादिन्यासं कुर्यात् ।

अथ बगलामुखी प्रयोगविधिः –

ऋष्यादिन्यासः– ॐ नारदऋषये नमः शिरसि। ॐ बृहती छन्दसे नमः मुखे। ॐ बगलामुखी देवतायै नमः हृदि। ॐ ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये।। ॐ स्वाहा शक्तये नमः पादयोः॥

नारदोऋृष्य ऋषिर्मूर्ध्नि त्रिाष्टुप्छन्दश्च तन्मुखे।
बगलामुखी देवतायै हृदये विन्यसेत्ततः॥
ह्लीं बीजं गुह्यदेशेतु स्वाहा शक्तिस्तु पादयोः।

करन्यासः – ॐ ह्लीं अगुष्ठाभ्यां नमः॥ ॐबगलामुखी तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां हुम्। ॐ जिह्वांकीलय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ॐ बुद्धिं विनाशय क्लीं। ॐ स्वाहा करतल करपृष्ठाभ्यां फट्।

हृदयादि न्यासः – ॐ ह्लीं हृदयाय नमः॥ ॐ बगलामुखी शिरसे स्वाहा। ॐ सर्वदुष्टानां शिखायै वषट्। ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय हुम्। ॐ जिह्वां कीलय नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा अस्राय फट्॥

ध्यानम् -

मध्ये सुधब्धि मणिमण्डप रत्नवेदी,
सिंहासनो करिगतां परिपीतवर्णाम्।
पीताम्बराभरणमाल्य विभूषिताङ्गी,
देवीं स्मरामि धृतमुद्गर वैरिजिह्वाम्॥

जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं वामेन शत्रून् परिपीड़यन्तीम।
गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्यां द्विभुजानमामि॥

एवं ध्यात्वा मानसोपचारैः सम्पूज्यः (ध्यानकर के नीचे लिखे मन्त्रों से मानसोपचार से पूजा करें।)

मानसोपचार पूजन :-

ॐ लं पृथिव्यात्मकेन गंधं समर्पयामि।

ॐ हं आकाशात्मकेन पुष्पं समर्पयामि।

ॐ यं वायव्यात्मकेन धूपं समर्पयामि।

ॐ रं तेजात्मकेन दीपं दर्शयामि।

ॐ वं अमृतात्मकेन नैवेद्यं परिकल्पयामि।

ॐ सं सर्वात्मकेन मंत्रपुष्पांजलिं नमस्काराणि समर्पयामि॥

बहिपूजामारभेत (बाह्यपूजा करे)

अष्टांगुलं च तुरस्त्रं विधाय ईशानादिकोणेषु पूर्वादिदिक्षु च कुसुमाक्षत रक्तचंदनैः॥ ॐ ग्लौं गणपतये नमः॥ गणेशं सम्पूज्य-जलेन मधुना अर्घपात्रमापूरयेत् ततो त्रिवारं विद्यया सम्पूज्य अंगानि विन्यसेत्। ततो धेनु-योनिमुद्रां प्रदर्शयेत्। मूलमुच्चार्य- आधारशक्तिं पूजयेत् -

आठ अंगुल का चौकोर यंत्र लिखें या बनवावें ईशानादिकोणों से पूर्वादि क्रम से कुसुम (पुष्प) अक्षत रक्त चन्दन से "ग्लौं गणपतये नमः" से गणेश का पूजन कर अर्घपात्र को जल मधु से पूर्ण कर तीन बार विद्या मंत्र से संपूज्य अर्घ देकर अंगों का विन्यास कर धेनु और योनिमुद्रा का प्रदर्शन कर मूलमंत्र का उच्चारण कर आधार शक्तियों का पूजन करें -

आधारशत्तिफ कमलासनायनमः। एवं शत्तिफ पङ्कासनाय नमः। पूर्वाध्यात्वार पीठे आवरणं आवाह्य षडङ्गानि न्यसेत्। ततो मुद्राम्प्रदर्शय-पुरतः षङ्केन मण्डलं यजेत्। ततो मूलमंत्रं मंत्रायित्वा-धेनु-योनिमुद्रां प्रदर्श्य आत्मविद्या, शिवैस्तवैः विंदुत्रायम्मुखंक्षिप्त्वा तर्जन्यंगुष्ठयोगेन सांगावरणां बगलामुखीं तर्पयेत्। ततो यथो पचारैः सम्पूज्य आवरणपूजां आरभेत-

आधारशक्ति कमलासनाय नमः एवं शक्ति पद्मासनाय नमः से पूजन कर पूर्व की तरह ध्यान आवरण पूजन आवाह्य- आवाहन करे, षडङ्गन्यास करें, मुद्राओं का प्रदर्शन करे, फिर षडङ्ग से मंडल का पूजन करे। मूलमंत्र से अभिमंत्रित करें। धेनु मुद्रा, योनि मुद्रा का प्रदर्शन करें। आत्मविद्या, शिवविद्या, स्तव-पूजन, बिंदुत्रय मुख पर तर्जनी अंगुष्ठ योग से सांगावरण बगलामुखी का तर्पण करे और यथा मिलितोपचार द्रव्यों से पूजन करे। आवरण देवता का पूजन प्रारम्भ करें।

षट्कोणेषु-पूर्वे-ॐ सुभगायै नमः। आग्नेये-ॐ भगसर्पिण्यै नमः। ईशाने-ॐ भगवाहायै नमः। पश्चिमे-ॐ भगसिद्धायै नमः। नैर्ऋते-ॐ भगपातिन्यै नमः। वायवे-ॐ भगमालिन्यै नमः।

ततोऽष्टदलपत्रेषु-बाह्यष्टौ शक्तिः पूजयेत्-पत्राग्रेषु पूर्वतः ॐ जयायै नमः। ॐ विजयायै नमः। ॐ अजितायै नमः। ॐ अपराजितायै नमः। ॐ स्तंभिन्यै नमः। ॐ जृम्भिन्यै नमः। ॐ मोहिन्यै नमः। ॐ आकर्षिण्यै नमः।

ततो द्वारेषु-ॐ भैरवाय नमः॥ तद्बाह्य-इन्द्रादीन् वज्रादींश्च पूजयेत्-पूर्वादि क्रमेण गणेशादीन् पूजयेत्-यथापूर्वे-ॐ गणेशाय

नमः। दक्षिणे - ॐ बटुकाय नमः। पश्चिमे - ह्रीं योगिन्यै ततो बाह्ये सायुधायइन्द्रादीन् दशदिक्पालान्पूजयेत्। पूर्वे-ॐ इन्द्राय नमः, वज्राय नमः। आग्नेय-ॐ अग्नये नमः। दक्षिणे-ॐ यमाय नमः, दण्डाय नमः। नैऋते-निर्ऋतये नमः खड्गाय नमः। पश्चिमे-ॐ वरुणाय नमः पाशाय नमः। वायवे-ॐ वायवे नमः अङ्कुशाय नमः। पूर्वेशानयोर्मध्ये - ॐ अनन्ताय नमः, चक्राय नमः। निर्ऋतिवरुणयोमध्ये - ॐ ब्रह्मणे नमः, पद्माय नमः॥

ततो मूलमंत्रेण धूपादिकं दत्वा यथाशक्ति जपं कुर्यात्-त्रिशूलमद्रां प्रदर्श्य पुष्पाञ्जलित्रयं दत्वा देव्यै योनिमुद्रां प्रदर्शयेत्। ततो भैरवाय बलिंदद्यात्। ततो विसर्जनान्तं कर्म समापयेत्। अस्याः पुरश्चरणं लक्षमात्रं जपः।

।। इति पद्धतिः ।।

॥ अथ बगलामुखी कवचम् ॥

श्रुत्वा च बगला पूजां स्तोत्रं चापि महेश्वर ।
इदानीं श्रोतुमिच्छामि कवचं वद मे प्रभो ! ॥1॥

हे महेश्वर-मैने बगलामुखी देवी की पूजा तथा स्तोत्र सुना अब मै (शरीर रक्षार्थ) कवच सुनना चाहता/चाहती हूँ।

वैरिनाशकरं दिव्यं सर्वाऽशुभ विनाशनम्।
शुभदं स्मरणात्पुण्यं त्राहिमां दुःख नाशनम्॥2॥

जिससे शत्रुओं का तथा सभी प्रकार के अशुभ (अनिष्टों) का विनाश किया जाने वाला हो। जिसके केवल स्मरण मात्र से सर्व प्रकार के पुण्य मिलते हैं और दुःख का नाश होता है। भैरव उवाच :-

कवचं शृणु वक्ष्यामि भैरवि प्राणवल्लभे ।
पठित्वा धारयित्वा तु त्रौलोक्ये विजयी भवेत्॥3॥

भैरव ने कहो - हे प्राणवल्लभ भैरवी! मैं कवच को तुमसे कहता हूँ उसे सुनो। जिसे पढ़ तथा धारणकर मनुष्य तीनों लोकों में विजयी होता है। इस विनियोग को पढ़कर जल छोड़े। वनियोगः -

ॐ अस्य श्री बगलामुखी कवचस्य नारद ऋषिः अनुष्टुप् छंद॥ श्री बगलामुखी देवता लं बीजम् । ऐं कीलकं। पुरुषार्थ चतुष्टय सिद्धयर्थं जपे विनियोगः॥

कवचारम्भः -

शिरो मे बगला पातु हृदयैकाक्षरी परा।
ॐ ॐ में ललाटे च बगला वैरिनाशिनी॥1॥

शिर की रक्षा बगला देवी करें, हृदय की एकाक्षरी रक्षा करें। ललाट की रक्षा त्रयक्षरी वैरिनाशिनी बगला देवी करें।

गदा हस्ता सदा पातु मुखं मे मोक्षदायिनी।
वैरि जिह्वाधरा पातु कण्ठं मे बगलामुखी ॥2॥

गदा हस्त है जिसके ऐसी मोक्षदायिनी मुख की रक्षा करें। वैरियों की जिह्वा को पकड़ने वाली कण्ठ की रक्षा बगलामुखी करें।

उदरं नाभिदेशे च पातु नित्यं परात्परा।
परात्परतरां पातु मम गुह्यं सुरेश्वरी ॥3॥

पेट की और नाभि की रक्षा तथा मेरे गुप्तांगों की रक्षा परात्परा बगलामुखी देवी करें।

हस्तौ चैव तथा पातु पार्वती परिपातु मे।
विवादे विषमे घोरे संग्रामे रिपुसंकटे ॥4॥

पीताम्बराध्रापातु सर्वाङ्ग शिवनर्तकी।
श्रीविद्या समयं पातु मातंगी पूरिता शिवा ॥5॥

हाथों-पैरों की रक्षा पार्वती, विवाद समय में कठिन स्थान में शत्रुसंकट प्राप्ति होने पर, संग्राम में मेरे सभी अङ्गों की पीतवस्त्रधारी पीताम्बरा, शिवनर्तकी रक्षा करें। श्रीविद्या, समय पाकर पास से मेरी रक्षा करें। सभी की पूर्ति मातंगी और शिवा करें।

पातु पुत्रं सुतांश्चैव कलत्रं कालिका मम।
पातु नित्यं भ्रातरं मे पितरं शूलिनी सदा ॥6॥

पुत्र स्त्री की रक्षा कालिका-देवी करें। नित्य भाई-पिता की रक्षा शूलिनी देवी करें।

रंढेहि बगला देव्याः कवचं मन्मुखोदितम्।
न वै देयममुख्याय सर्वसिद्धि प्रदायकम् ॥7॥

हे भैरवि-मेरे मुख के द्वारा कहे इस बगलाकवच को-जो सर्वसिद्धि को देने वाला है - अनाधिकारी को न बतावे।

पठनाद्धारणादस्य पूजनाद्वाञ्छितं लभेत्।
इदं कवचमज्ञात्वा यो जपेद् बगलामुखीम् ॥8॥

पिबन्ती शोणितं तस्य योगिन्यः प्राप्य सादराः ।
वश्ये चाकर्षणे चैव मारणे मोहने तथा ॥9॥

महाभये विपत्तौ च पठेद्वा पाठयेत्तु यः ।
तस्यसर्वार्थ सिद्धिः पार्वती ॥10॥

इस कवच को पढ़ने तथा, धारण करने, पूजन करने से सर्वप्रकार का वाञ्छित फल प्राप्त करता है। जो इस कवच को नहीं जानकर जपता है। उसके रक्त को योगिनियाँ प्रसन्नता से पान करती है। हे पार्वती ! वश करने में, आर्कषण में, मारण, मोहन, महाभय तथा विपत्ति आने पर इस कवच को जो पढ़ता है, वह इस कवच की भक्ति के द्वारा सम्पूर्ण मनोरथ को प्राप्त करता है।

।। इति रुद्रयामले बगलामुखीकवचं भाषाटीकासहितं सम्पूर्णम्।।

॥ अथ बगलामुखीस्तोत्र पाठविधिः ॥

अब स्तोत्र का पाठ करने के पूर्व नीचे लिखे विनियोग को पढ़कर जल छोड़े -

ॐ अस्य श्रीबगलामुखीस्तोत्रस्य भगवान्नारदऋषिः बगलामुखी देवता ममसन्निहितानां दुष्टानां विरोधिनांवाङ्मुख-मदजिह्वाबुद्धीनां स्तम्भनार्थे श्रीबगलामुखीवरप्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः ॥

करन्यास नीचे लिखे बीज मन्त्रों से करें।

(करन्यासः)- ॐ ह्लीं अगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ बगलामुखी तर्जनीभ्यां नमः। ॐ सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां वषट्॥ ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां हुम्। ॐ जिह्वां कीलय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्॥ ॐ बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा-करतलकरपृष्ठाभ्यां फट॥

हृदयादिन्यास-नीचे लिखे बीज मन्त्रों से करें।

(हृदयादिन्यासः)- ॐ ह्लीं हृदयाय नमः। ॐ बगलामुखी शिरसे स्वाहा। ॐ सर्वदुष्टानां शिखायै वषट्। ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय हुं। ॐ जिह्वां कीलय नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ बुद्धि विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम् :-

सौवर्णासनसंस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकाल्लासिनीं,
हेमाभांग रुचि शशांकमुकुटां स्रक्चम्पकस्रग्युतां।

हस्तैर्मुद्गरपाशबद्धरसनां संबिभ्रतीं भूषणै-
र्व्याप्तांगींबगलामुखींत्रिजगतां संस्तंभिनींचिन्तये ॥1॥

सुवर्णासन पर तीन नेत्रों वाली, पीताम्बरा, सुवर्णकान्ति सदृश चन्द्रमुकुट धारिणी, चम्पा की माला पहने, हाथ में-मुद्‌गर, पाश, जिह्वा बांधें, प्रत्येक अंगों को आभूषणों से सज्जित कर तीनों लोकों को स्तंभित करने वाली जो पीताम्बरा देवी बैठी है मै उनका चिन्तन करता हूँ।

यथाशक्ति या कामनानुसार मंत्र का जप करें।

अथ मन्त्रः -

"ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तंभय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।।"

ॐ मध्ये सुधाब्धिमणिमण्डलरत्नवेद्यां,
सिंहासनोपरिगतां परिपीतवर्णाम्।

पीताम्बरा भरणमाल्यविभूषितांगीं,
देवीं भजामि धृतमुद्‌गरवैरिजिह्वाम्॥1॥

समुद्र के अमृतमणियों से सजी हुई मण्डप की रत्नजड़ित चौकी पर स्वर्ण सिंहासन पर बैठी पीतवर्णा, पीताम्बरा सर्वाभरणाभूषणों से सुशोभित सुन्दर अंङ्गो वाली शत्रु की जिह्वा पकड़े, मुद्‌गर हाथ में लिये हैं ऐसी पीताम्बरा देवी को मै भजता हूँ।

जिह्वाग्रमादाय करेण देवी,
वामेन शत्रून् परिपीडयन्तीम्।
गदाभिघातेन च दक्षिणेन,
पीताम्बराढ्यां द्विभुजां भजामि॥2॥

वामहस्त से शत्रुजिह्वा का अग्रभाग तथा दक्षिणहस्त में मुद्‌गर से शत्रु को पीड़ा देने वाली पीताम्बर से सुशोभित दो भुजाओं वाली भगवती पीताम्बरा देवी को मैं भजता हूँ।

चलत्कनककुण्डलोल्लसित चारु गण्डस्थली,
लसत्कनकचम्पकद्युतिमदिन्दु बिम्बाननाम्।

गदाहतविपक्षकांकलितलोलजिह्वाञ्चलाम् ,
स्मरामि बगलामुखीं विमुखवाङ्मनस्स्तंभिनीम् ॥3 ॥

स्वर्ण कुण्डलों के कम्पन होने से सुशोभित कपोलोंवाली, स्वर्णप्रभ चम्पा पुष्प सेद्युतियुक्त, चन्द्रबिंब सदृश मुखवाली, गदा से मारा है शत्रु को तथा शत्रु की चंचल जिह्वा को नष्ट कर दिया है तथा शत्रु की वाणी,मन,मुख का स्तंभन किया है जिसने एसी बगलामुखी पीताम्बरा को मैं भजता हूँ।

पीयूषोदधिमध्यचारुविलसद्रक्तोत्पले मण्डपे,
सत्सिंहासनमौलिपातितरिपुं प्रेतासनाऽध्यासिनीम् ।

स्वर्णाभांकरपीडितारिरसनां भ्राम्यद्गदां विभ्रमा,
मित्थं ध्यायति यान्ति तस्य विलयं सद्याऽद्य सर्वापदः ॥4 ॥

समुद्र मध्य में रक्त कमल के मण्डप में सिंहासन पर विराजी शत्रुओं के शीशों को गिरा, प्रेतासनों पर बैठी, स्वर्ण समान प्रकाश युक्त शत्रु-जिह्वा को पीड़ित करने वाली, गदा को घुमाती हुई भगवती पीताम्बरा बगलामुखी का ध्यान मात्र से ही संपूर्ण आपत्तियों का क्षणमात्र में नाश होता है ऐसी पीताम्बरा को मैं भजता हूँ।

देवि त्वच्चरणाम्बुजार्चनकृते यः पीतपुष्पाञ्जलीन् ।
भक्त्या वामकरे निधायचपुनः मन्त्रं मनोज्ञाक्षरम् ॥

पीठध्यानपरोऽथ कुम्भकवशाद्बीजं स्मरेत् पार्थिवः ।
तस्यामित्रमुखस्य वाचि हृदये जाड्यं भवेत् तत्क्षणात् ॥5 ॥

हे देवि ! जो भक्ति श्रद्धा के साथ आपके चरणों के पूजन में पीतपुष्प की अंजली अर्पण करता है और सुन्दर स्पष्टाक्षरों से मन्त्र का ध्यान करता है तथा आपके कुंभक वशाद् बीजमन्त्रों का स्मरण करता है उस मनुष्य को शत्रु की पीड़ा-वाणी-मन एवं हृदय से जिस प्रकार की हो उसी क्षण नष्ट हो जाती है।

वादी मूकति रंकति क्षितिपतिर्वैश्वानरः शीतति ।
क्रोधी शाम्यति दुर्ज्जनः सुजनति क्षिप्रानुगः खंजति ॥

गर्वी खर्वति सर्वविच्च जडति त्वद्यन्त्रणायंत्रितः।
श्रीर्नित्ये बगलामुखि प्रतिदिनं कल्याणि तुभ्यं नमः ॥ 6 ॥

हे देवि ! आपके द्वारा-शत्रु की वाणी मूक होती है। राजा भी रंक हो जाता है, प्रज्वलित अग्नि ठण्डी पड़ती है। क्रोधी का क्रोध शान्त होता है। दुर्जन सज्जन होता है। शीघ्रगामी लँगड़ा होता है। घमण्डी का घमण्ड चूर होता है। सर्वज्ञ शत्रु भी जड़वत् हो जाता है। आपका नियंत्रण संपूर्ण विश्व को नियन्त्रित करता है। हे लक्ष्मी ! हे नित्ये ! हे बगलामुखि ! हे कल्याणी ! तुमको प्रणाम करता हूँ।

मन्त्रस्यात्मबलं विपक्षदलनं स्तोत्रं पवित्रं च ते,
यन्त्रं वादिनियन्त्रणं त्रिजगतां जैत्रं च चित्रं च ते।

मातः श्रीबगलेतिनामललितं यस्यास्ति जन्तोर्मुखे,
त्वन्नामग्रहणेन संसदि मुखस्तम्भो भवेद्वादिनाम् ॥7 ॥

हे मातः ! आपके मन्त्र के आत्मबल से शत्रुओं का दलन होता है। आपका स्तोत्र अत्यन्त पवित्र है एवं आपका यह मन्त्र वादी दल को नियन्त्रित करने वाला है। अति विचित्र त्रैलोक्य को जीतने वाला है, आपका यह अत्यन्त सुन्दर बगलामुखी नाम जिस जंतु के मुख में रहता है अथवा जो प्राणी आपका तथा आपके इस मंत्र का स्मरण करता है उसके शत्रुओं के मुख का अवश्य स्तंभन हो जाता है।

दुष्टस्तम्भनमुग्रविघ्नशमनं, दारिद्र्यविद्रावणम्,
भूभृन्द्वीशमनं चलन्मृगदृशाञ्चेतः समाकर्षणम्।

सौभाग्यैकनिकेतनं समदृशां कारुण्यपूर्णाऽमृतम्,
मृत्योर्मारणमाविरस्तु पुरतो मातस्त्वदीयं वपुः ॥8 ॥

हे मातः ! दुष्टों को स्तंभन करने वाला, कठिन विघ्नों का विनाश करने वाला, दरिद्रता को दूर करने वाला, राजाओं के भय का नाश करने वाला, सुन्दरियों के मन को आर्कषण करने वाला तथा सौभग्यदायक भवन, करुणा से भरा अमृत रूप मृत्यु का नाश करने वाला आपके शरीर का मैं दर्शन करूँ।

मानंभञ्जय मे विपक्षवदनं जिह्वां च संकीलय,
ब्राह्मीं मुद्रय नाशयाशुधिषणामुग्रां गतिं स्तम्भय।

शत्रूंश्चूर्णय देवि ! तीक्ष्णगदया गौरांगि पीताम्बरे !,
विघ्नौघं बगले हर प्रणमतां कारुण्यपूर्णेक्षणे ! ॥9॥

हे मातः ! मेरे शत्रु के मुख को तोड़ उनकी जिह्वा को कीलित करो, उनकी समस्त बुद्धि के विकास को नष्ट कर दो तथा वाणी एवं शीघ्रगामी गति का शीघ्र स्तंभन करो। हे देवि! हे गौरांगि, ! हे पीताम्बरे, ! हे करुणापूर्ण नेत्रो ! हे भगवति बगले! अपनी कठिन गदा के प्रहार से शत्रुओं का चूर्ण कर हमारे सभी विघ्नों का नाश कर दो।

मातर्भैरवि भद्रकालि विजये वाराहि विश्वाश्रये,
श्रीविद्ये समये महेशि बगले कामेशि रामे रमे।

मातंगि त्रिपुरे परात्परतरे स्वर्गापवर्गप्रदे,
दासोऽहं शरणागतः करुणया विश्वेश्वरि त्राहिमाम ॥10॥

हे मातः! हे भैरवि! हे भद्रकालिः! हे विजये! हे वाराहि! हे विश्वाश्रये! हे लक्ष्मि! हे श्री! हे विद्ये! हे समये! हे महेशि! हे बगले! हे कामेशि! हे रामे! हे रमे! हे मातङ्गि! हे त्रिपुरसुन्दरि! हे मरात्परतरे! हे स्वर्गापवर्गप्रदे! हे विश्वेश्वरि! मैं तुम्हारा दास हूँ तुम्हारी शरणागत हूँ। देवी पीताम्बरा आप मेरी रक्षा करो।

फलस्तुति :-

संरम्भे चौरसंघे प्रहरणसमये बन्धने वारिमध्ये,
विद्यावादे विवादे प्रकुपितनृपतौ दिव्यकाले निशायाम्।

वश्ये वा स्तम्भने वा रिपुवधसमये निर्जने वा वने वा,
गच्छंस्तिष्ठंस्त्रिकालंयदि पठति शिवंप्राप्नुयादाशुधीरः ॥11॥

युद्ध में, चौरों के संघ में, प्रहार के समय में, बन्धन में, जल के मध्य में, शास्त्रार्थ में, विवाद में, राजा के कुपित होने में, रात्रि में, सुन्दर अवसर वशीकरण में, स्तम्भन समय में, निर्जन स्थान में, वन में। चलते-बैठते हर समय जो त्रिकाल इस स्तोत्र का पाठभक्ति श्रद्धा से करता है वह निश्चय ही हर आपत्तियों से छुटकारा पाता है।

नित्यं स्तोत्रमिदं पवित्रमिह यो देव्याः पठत्यादराद्-
धृत्वा यन्त्रमिदं तथैव समरे बाहौ करे वा गले।
राजानोऽप्यरयो मदान्धकरिणः सर्पाः मृगेन्द्रादिका-
स्तेवैयान्ति विमोहितां रिपुगणाः लक्ष्मीः स्थिरांसिद्धयः ॥12 ॥

जो मनुष्य इस पवित्र स्तोत्र का सम्मान सहित नित्यप्रति पाठ करता है। इस यंत्र को तथा मंत्र को अपनी भुजा तथा गले में धारण करता है। उसके सामने राजा-शत्रु-मतवाला हाथी-सर्प-सिंह सब वश में होते हैं। उसके शत्रु स्वयं मोहित होते हैं, लक्ष्मी भी स्थिर होती है। स्थिर सिद्धि प्राप्त होती है।

त्वं विद्या परमा त्रिलोकजननी विघ्नौघविच्छेदिनीं,
कोषाकर्षणकारिणी त्रिजगतामानन्द सम्वर्धिनी।
दुष्टोच्चाटनकारिणीं जनमनस्संमोह संदायिनी,
जिह्वाकीलनभैरवि ! विजयते ब्रह्मादिमन्त्रो यथा ॥13 ॥

हे मातः ! तुम परम विद्या हो, त्रिलोक की माता हो, विघ्नों का नाश करने वाली हो, तुम खजानों को भरने वाली हो, आकर्षणं करने वाली हो। त्रिलोक में व्याप्त हो। सर्वत्र आनन्द को बढ़ाने वाली हो। दुष्टों का उच्चाटन करने वाली हो, सभी प्राणिमात्र के मन को वश में करने वाली हो। दुष्टों का उच्चाटन करने वाली हो। शत्रुओं की जिह्वा को अति निपुणता से कीलित करती हो। हे भैरवि ! जिस प्रकार ब्रह्मा आदि देवताओं के मंत्र सर्वदा विजयप्रद होते हैं उसी प्रकार आपका भी यह मंत्र सर्वदा विजय कराता है।

विद्या लक्ष्मीः सर्वसौभाग्यमायुः,
पुत्रो पौत्रो सर्व साम्राज्यसिद्धिः।

मानं भोगो वश्यमारोग्य सौख्यं,

प्राप्तं तत्तदभूतलेऽस्मिन्नरेण ॥14 ॥

आपके स्तोत्र को श्रवण करने तथा पाठ करने से विद्या, लक्ष्मी, सभी सौभाग्य, आयु, पुत्र, पौत्र, सभी प्रकार के साम्राज्य, सिद्धि मान-ऐश्वर्य-वशीकरण-आरोग्यता-सुख आदि सभी दुर्लभ वस्तु इस पृथ्वी पर आपकी केवल आराधना मात्र से ही सुलभ होते हैं।

यत्कृतं जपसन्नाहं गदितं परमेश्वरि !।
दुष्टानां निग्रहार्थाय तद्गृहाण नमोऽस्तुते ॥15 ॥

हे देवि ! हे परमेश्वरि ! आपके जप करने वाले तथा मुझसे जो कहा गया मंत्र है उससे दुष्टों का नाश होता है। हे भगवति ! इसे ग्रहण कीजिये। आपको मेरा-बारम्बार नमस्कार है।

ब्रह्मास्त्रमिति विख्यातं त्रिषु लोकेषु विश्रुतम्।
गुरुभक्ताय दातव्यं न अभक्ताय न कश्चन ॥16 ॥

यह आपका स्तोत्र ब्रह्मास्त्र की भांति तीनों लोकों में प्रसिद्ध है। इस स्तोत्र को जो गुरु का भक्त हो उसी को देना चाहिये। अभक्त को नहीं देना चाहिये।

पीताम्बरां च द्विभुजां त्रिनेत्रां गात्रकोज्वलाम्।
शिलामुद्गर हस्ताञ्च स्मरेत्तां बगलामुखीम् ॥17 ॥

हे पीताम्बरा देवी, दो भुजाओं वाली, तीन नेत्रों वाली, उज्ज्वल शरीर वाली, शिला मुद्गर धारण करने वाली है। ऐसी जो बगलामुखी हैं उनका निरन्तर स्मरण करना चाहिए।

॥ सांख्यायन तंत्रोक्त बगलामुखी स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

(इति शुभम्)

॥ अथ द्वितीयोअध्यायः ॥

श्री बगलामुखी देवी पूजा विधि :-

बायें हाथ में जल लेकर दायें हाथ से अपने शरीर पर डालते हुए निम्नलिखित मन्त्र पढ़े।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोपिवा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

भावार्थ :- मनुष्य अपवित्र हो या पवित्र अथवा किसी भी दशा में स्थित हो जो पुण्डरीकाक्ष (कमलनयन) भगवान विष्णु का स्मरण करता है। वह बाहर और भीतर सब ओर से शुद्ध हो जाता है।

ॐ पृथ्वीत्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुनाधृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥

भावार्थ :- हे पृथ्वी देवी तुमने सम्पूर्ण लोको को धारण कर रखा है। और भगवान विष्णु ने तुमको धारण किया है। हे देवी! तुम मुझे धारण करो और मेरे आसन को पवित्र कर दो। इसके बाद पीला तिलक अपने ललाट पर लगायें, तत् पश्चात्

ॐ केशवाय नमः स्वाहा,

ॐ नारायणाय नमः स्वाहा,

ॐ माधवाय नमः स्वाहा

इन तीन मन्त्रों को पढ़कर प्रत्येक से एक एक बार पवित्र जल से आचमन करें।

ॐ गोविन्दाय नमः

यह मन्त्र पढ़कर हाथ धोले। शिखा बन्धन मन्त्र - शिखा बांधकर सभी कर्म करने चाहिये। इसलिए नीचे लिखे मन्त्र से या गायत्री मन्त्र से शिखा बांधे। यदि शिखा न हो तो शिखा स्थान का स्पर्श करें।

चिद्रूपिणि ! महामाये ! दिव्य तेजसमन्वित।
तिष्ठ देवि शिखामध्ये तेजो वृद्धिं कुरुष्व मे॥

हाथ में पीत पुष्प लेकर स्वस्ति वाचन करें।

स्वस्तिनऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः, स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्द्दधात॥

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्य कोटि समप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव! सर्व कार्येषु सर्वदा॥

पुष्पों को गणेश जी पर चढ़ाकर हाथ में जल, पीत अक्षत, पुष्प लेकर संकल्प करें। संकल्प :-

हरिः ॐ विष्णः, विष्णुः विष्णुः तत्सदद्यैतस्य श्री ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तैक-देशान्तर्गते पुण्यक्षेत्रे कलियुगे कलिप्रथम चरणे अमुक संवत्सरे अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे अमुक गोत्रोत्पन्न भगवत्याः बगलामुखी देवी कृपाकटाक्ष प्राप्त्यर्थं गणेश पूजन पूर्वकं यथामीलितोपचार द्रव्यैः बगलामुखी देव्याः पूजनमहं करिष्ये। इति संकल्पः

ॐ गंणपतये नमः मानसोपचार पूजन कुर्यात्

ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि,

ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि,

ॐ यं वायव्यात्मकं धूपं आघ्रापयामि,

ॐ रं तेजात्मकं दीपं दर्शयामि,

ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं परिकल्पयामि,
सं सर्वात्मकं मन्त्र पुष्पं समर्पयामि।

प्रार्थनां :-

लम्बोदरं परं सुन्दरंमेकदन्तम्,
पीताम्बरं त्रिनयनं परमं पवित्रम्।

उद्यद् दिवाकर निभोज्वलकान्ति कान्तम्,
विघ्नेश्वरं सकल विघ्न हरं नमामि ॥

अनेन पूजनेन गणेशाम्बिके प्रीयेताम् न मम।

॥ बगलामुखी आवाहन मन्त्र ॥

ॐ आद्याशक्ति कमलासनायै नमः एवं शक्ति पद्मासनायै नमः इत्यादि मन्त्रों से आसन का पूजन करे।

मूल मन्त्र :-

ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं स्वाहा, भगवत्यै बगलामुख्यै नमः आवाहयामि।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै आवहेति च कश्चन ॥

प्रतिष्ठापयामि बोलकर देवी की प्रतिमा पर चावल छोड़े।

रम्यं सुशोभजं दिव्यं सर्वसौख्यकरं शुभम्।
आसनञ्च मया दत्तं गृहाण परमेश्वरि ॥

उच्चारण करके भगवती का पीत पुष्प का आसन देवें।

पाद्य :-

उष्णोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्धि संयुतम्।
पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रति गृह्यताम् ॥

पाद्यं समर्पयामि अर्थात् चरणों में चावल समर्पित करें।

अर्घ्यम :-

अर्घ्यं गृहाण देवेशि गन्धपुष्पाक्षतैः सह ।
अरुणं कङ्कुमं देवि गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते ॥

अर्घ्यं समर्पयामि। उपर्युक्त श्लोक पढ़कर अर्घ्य देना चाहिए।

आचमन :-

सर्वतीर्थ समायुक्तं सुगन्धिं निर्मलं जलम्।
आचम्यतां मया दत्तं गृहाण परमेश्वरि ॥

आचमनीयं जलं समर्पयामि।

स्नान :-

गंङ्गा सरस्वती रेवा पयोष्णी नर्मदाजलैः।
स्नापितोऽसि मया देवि तथा शान्तिं कुरुष्वमे ॥

स्नानीयं जलं समर्पयामि।

पञ्चामृत :-

पयोदधि धृतं चैव मधुच शर्करा युतम् ।
पञ्चामृतं मया नीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

वस्त्र :-

सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जा निवारणे।
मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम् ॥

वस्त्रं समर्पयामि।

उपवस्त्र :-

सुजातो ज्योतिषां सह शर्म वरूथमाऽसदत्स्वः।
वासोऽअग्ने विश्वरूपं छ सः व्ययस्व विभावसोः ॥

उपवस्त्रं समर्पयामि।

पीत चन्दन :-

पीत चन्दन सम्मिश्रं पारिजात समुद्भवम्।
मया दत्तं गृहाबाशु चन्दनं गन्ध संयुतम्॥

पीत चन्दनं समर्पयामि।

अक्षत :-

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठकुंकुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वरि॥

अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्प :-

पुष्पैनानाविधैर्दिव्यैः कुमुदैरथ चम्पकैः।
पूजार्थं नीयते तुभ्यं पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम्॥

पुष्पाणि समर्पयामि।

आवरण पूजा :- बायें हाथ में चन्दन पुष्प अक्षत लेकर दायें हाथ से यन्त्र पर समर्पित करें।

षटकोणेषु : पूर्वे ॐ सुभगायै नमः, आग्नेये भगसर्पिण्यै नमः, ईशाने ॐ भगवादाय नमः, पश्चिमे भगसिद्धायै नमः, नैर्ऋते ॐ भगपातिन्यै नमः, वयवे ॐ भगभालिन्यै नमः। ततो अष्टदल पत्रेषु शक्तिः पूजयेत् पूर्वतः

ॐ जयायै नमः ॐ विजयायै नमः ॐ अजितायै नमः ॐ पराजितायै नमः ॐ स्तम्भिन्यै नमः ॐ जृम्भिन्यै नमः ॐ मोहिन्यै नमः ॐ आकर्षिण्यै नमः

ततो द्वारेषु :- ॐ भैरवाय नमः इन्द्रादीन् व्रजादीशंच पूजयेत्।

गणेशदीन् पूजयेत् :- पूर्वे ॐ गणेशाय नमः, दक्षिणे वटुकाय नमः, पश्चिमे ह्रीं योगिन्यै नमः, उत्तरे क्षेत्रपालाय नमः ।

दशदिकपालान् पूजयेत् :-

पूर्वे ॐ इन्द्राय नमः वज्राय नमः, आग्नेये ॐ अग्नये नमः शक्तये नमः, दक्षिणे ॐ यमाय नमः दण्डाय नमः, नैर्ऋते ॐ निर्ऋतये नमः खड्गाय नमः, पश्चिमे ॐ वरुणाय नमः पाशाय नमः, वायवे ॐ वायवे नमः त्रिशूलाय नमः, पूर्वेशानयोर्मध्ये ॐ अनन्ताय नमः चक्राय नमः, निर्ऋति वरुणयोर्मध्ये ॐ ब्रह्मणे नमः पद्माय नमः।

इसके पश्चात् भगवती बगलामुखी देवी को 108 पीले पुष्प अग्रलिखित 108 नामों से समर्पित करें। प्रत्येक नाम का उच्चारण करते हुए एक एक करके क्रमशः ध्यान करते हुए पीत पुष्प अथवा हरिद्रार्चन करें। विनियोग करें :-

अस्य श्रीबगलाष्टोत्तर नाम मन्त्रस्य सदा शिव ऋषिः बृहतीछन्दः श्रीबगलामुखी देवता सर्वाभीष्ट प्राप्तये पीत पुष्प समर्पणे विनियोगः

अथ ध्यानम् :-

नमस्ते देवदेवेशि जिह्वास्तम्भन कारिणीम् ।
पानपात्रगदायुक्तां भजेऽहं बगलामुखीम् ॥

आभूषण :-

अलंकारान्महादिव्यान्नानारत्न विनिर्मितान्।
गृहाण देव देवेशि प्रसीद परमेश्वरि ॥

आभूषण समर्पयामि।

अबीर गुलाल :-

अबीरं च गुलालं च चोरा चन्दनमेव च ।
अबीरेणार्चिता देवि अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

अबीर समर्पयामि ।

सुगन्ध तैल :-

चम्पकाऽशोक वकुल मालती मोगरादिभिः ।
वासितं स्निग्धताहेतुं तैलं च प्रतिगृह्ताम् ॥

सुगन्धित तैलं समर्पयामि।

धूप :-

वनस्पति रसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम॥

धूपमाधापयामि।

दीप :-

आज्यञ्च वर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया ।
दीपं गृहाण देवेशि त्रैलोक्यतिमिरापहम् ॥

दीपं दर्शयामि।

नैवेद्य :-

शर्कराघृतसंयुक्तं मधुरं स्वादु चोत्तमम्।
उपहार समायुक्तं नैवद्यं प्रति गृह्यताम्॥

नैवेद्यं निवेदयामि। योनि मुद्रां प्रदर्श्य अर्थात् योनि मुद्रा दिखाकर मध्ये जलं समर्पयामि।

ऋतुफलम् :-

इदं फलं मया देवि स्थापितं पुरतस्तव ।
तेन मे सफलावाप्ति र्भवेत् जन्मानि जन्मनि॥

ऋतु फलं समर्पयामि।

ताम्बूल पूगीफल :-

पूगीफलं महदिव्यं नागवल्ली दलैर्युतम्।
एलाचूर्णादि संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

ताम्बूलं समर्पयामि।

दक्षिणा :-

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसो ।
अनन्त पुण्यफलद मतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥

दक्षिणां समर्पयामि।

आरती :-

चन्द्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्निस्तथैव च ।
त्वमेव सर्व ज्योतींषि आर्तिक्यं प्रतिगृह्यताम् ॥

आरातिक्यं समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलि :-

नानासुगन्धि पुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च ।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्ता गृहाण परमेश्वरि ॥

पुष्पाञ्जलि समर्पयामि।

प्रार्थना :-

रक्ष रक्ष गणाध्यक्षः, रक्ष त्रैलोक्य रक्षिके ।
भक्तानामभयं कर्त्री त्रात्री भवभवार्णवात् ॥

अनया पूजया बगलामुखी प्रीयताम्।

इसके पश्चात् साधक को दिग्रक्षण करके मन्त्र का जप व पीत कन्नेर के पुष्पों से पुण्यार्चन करना चाहिए।

बगला अष्टोत्तरशत नामावली (हरिद्रार्चन)

क्र.स.	नामावली	क्र.स.	नामावली
01	ॐ बगलायै नमः पीतपुष्पं समर्पयामि	31	ॐ कलाकैवल्य दायिन्यै नमः
02	ॐ विष्णुवनितायै नमः	32	ॐ कैशव्यै नमः
03	ॐ विष्णुशंकरभामिन्यैं नमः	33	ॐ कैशवाराध्यायै नमः
04	ॐ बहुलायै नमः	34	ॐ किशोर्यै नमः
05	ॐ वेदमात्रे नमः	35	ॐ केशवस्तुतायै नमः
06	ॐ महावैष्णव्यै नमः	36	ॐ रूद्ररूपायै नमः
07	ॐ महामत्स्यायै नमः	37	ॐ रूद्रमूर्त्यै नमः
08	ॐ महाकूर्मायै नमः	38	ॐ रूद्रान्यै नमः
09	ॐ महावाराह रूपिण्यै नमः	39	ॐ रूद्रदेवतायै नमः
10	ॐ नरसिंहप्रियारम्यायै नमः	40	ॐ नक्षत्ररूपायै नमः
11	ॐ वामनावटुरूपिण्यै नमः	41	ॐ नक्षत्रायै नमः
12	ॐ जामदग्न्यस्वरूपायै नमः	42	ॐ नक्षत्रप्रपूजितायै नमः
13	ॐ रामाराम प्रपूजितायै नमः	43	ॐ नक्षत्रेशप्रियायै नमः
14	ॐ कृष्णायै नमः	44	ॐ नित्यायै नमः
15	ॐ कपर्दिन्यै नमः	45	ॐ नक्षत्रपति वन्दितायै नमः
16	ॐ कृत्यायै नमः	46	ॐ नागिन्यै नमः
17	ॐ कलहायै नमः	47	ॐ नागजनन्यै नमः
18	ॐ कलिनाशिन्यै नमः	48	ॐ नागराज्यै नमः
19	ॐ बुद्धिरूपायै नमः	49	ॐ प्रवंन्दितायै नमः
20	ॐ बुद्धभार्यायै नमः	50	ॐ नागेश्वर्यै नमः
21	ॐ बौद्ध पाखण्ड खंण्डिन्यै नमः	51	ॐ नागकन्यायै नमः
22	ॐ कल्किरूपायै नमः	52	ॐ नागर्यै नमः
23	ॐ कलिहरायै नमः	53	ॐ नागात्मजायै नमः
24	ॐ कलिदुर्गार्तिनाशिन्यै नमः	54	ॐ नागाधिराजतनयायै नमः
25	ॐ कोटिसूर्य प्रतीकाशायै नमः	55	ॐ नागराजप्रपूजितायै नमः
26	ॐ कोटिकन्दर्पायै नमः	56	ॐ नषीनायै नमः
27	ॐ मोहिन्यै नमः	57	ॐ नीरदायै नमः
28	ॐ केवलायै नमः	58	ॐ पीतायै नमः
29	ॐ कठिनायै नमः	59	ॐ श्यामायै नमः
30	ॐ काल्यै नमः	60	ॐ सौन्दर्यकारिण्यै नमः

बगला अष्टोत्तरशत नामावली (हरिद्रार्चन)

क्र.स.	नामावली	क्र.स.	नामावली
61	ॐ रक्तायै नमः	91	ॐ परमायै नमः
62	ॐ नीलायै नमः	92	ॐ परतन्त्र विनाशिन्यै नमः
63	ॐ धनायै नमः	93	ॐ वरदायै नमः
64	ॐ शुभ्रायै नमः	94	ॐ वरदाराध्यायै नमः
65	ॐ श्वेतायै नमः	95	ॐ वरदानपरायणायै नमः
66	ॐ सौभाग्यदायिन्यै नमः	96	ॐ वरदेशप्रिया वीरायै नमः
67	ॐ सौम्यायै नमः	97	ॐ वीरभूषणभूषितायै नमः
68	ॐ स्वर्णभायै नमः	98	ॐ वसुदायै नमः
69	ॐ स्वर्गतिप्रदायै नमः	99	ॐ बहुदायै नमः
70	ॐ रिपुत्रासकर्यै नमः	100	ॐ वाण्यै नमः
71	ॐ रेखायै नमः	101	ॐ ब्रह्मरूपायै नमः
72	ॐ शत्रुसंहार कारिण्यै नमः	102	ॐ वराननायै नमः
73	ॐ भामिन्यै नमः	103	ॐ बलदायै नमः
74	ॐ तथामायायै नमः	104	ॐ पीतवसनायै नमः
75	ॐ स्तंभिन्यै नमः	105	ॐ पीतभूषणभूषितायै नमः
76	ॐ शुभायै नमः	106	ॐ पीतपुष्पप्रियायै नमः
77	ॐ रागद्वेष कर्त्र्यै नमः	107	ॐ पीतहरायै नमः
78	ॐ रात्र्यै नमः	108	ॐ पीतस्वरूपिण्यै नमः
79	ॐ रौरवध्वंसकारिण्यै नमः		
80	ॐ यक्षिण्यै नमः		
81	ॐ सिद्धानवहायै नमः		
82	ॐ सिद्धेशायै नमः		
83	ॐ सिद्धरूपिण्यै नमः		
84	ॐ लंकापतिध्वंसकरायै नमः		
85	ॐ लंकेशरिपुवन्दितायै नमः		
86	ॐ लंकापत्युः कुलहरायै नमः		
87	ॐ महारावणहारिण्यै नमः		
88	ॐ देवदानव सिद्धौधायै नमः		
89	ॐ परमेश्वर्यै नमः		
90	ॐ पराणुरूपाय नमः		

स्तम्भन विद्या

दिग्रक्षण विधि :- साधक अपने बायें हाथ में पीत सर्षप लेकर दायें हाथ से आच्छादन करके अधोनिर्दिष्ट श्लोकों को पढ़ें ।

बगला पूर्वतो रक्षेदाग्नेय्यां च गदाधरी।
पीताम्बरा दक्षिणे च स्तम्भिनी चैव नैर्ऋते ॥1॥

जिह्वा कीलिन्यतो रक्षेत् पश्चिमें सर्वतोमयी।
वायव्ये च मदोन्मत्ता कौवेरे च त्रिशूलिनी ॥2॥

ब्रह्मास्त्रदैवतैशान्ये पाताले स्तम्भ मातरः ।
ऊर्ध्वं रक्षेन्महादेवी जिह्वास्तम्भनकारिणी,
एवं दश दिशो रक्षेत् बगला सर्वसिद्धिदा ॥3॥

भावार्थ :-

पूर्व दिशा में बगला देवी रक्षा करें आग्नेय दिशा में गदाधरी दक्षिण दिशा में पीताम्बरा, नैऋत्य में स्तम्भिनी, पश्चिम में सर्वतोमयी, वायव्य में मदोन्मत्ता, पाताल में आकाश में महादेवी, जिह्वा स्तम्भन कारिणी, इस तरह सभी दिशाओं में सर्व सिद्धि प्रदान करने वाली बगला देवी हमारी सर्वविध रक्षा करें।

इन श्लोकों को पढ़कर साधक सभी दिशाओं में पीत सर्षपों को डाल दें। यह बगला मुखी अनुष्ठान की दिग्रक्षण विधि बतायी गयी है। इस तरह दिग्रक्षण करके साधक यदि एकाक्षरी मन्त्र का सविधि जप करता है तो सद्यः शत्रुओं को स्तम्भित करने वाला होता है। जप के उपरान्त पीत कन्नेर व हरिद्रा से भगवतीकाणा का पुण्यार्चन व हरिद्रार्चन करें।

संख्यायन तन्त्र गत एकाक्षरी मन्त्र

एकाक्षरी बगलामन्त्र - ह्लीं।

विनियोग :

ॐ अस्य श्री बगलामुख्येकाक्षरी महा मन्त्रस्य ब्रह्म ऋर्षिर्गायत्री छन्द श्री बगलामुखी देवता लं बीज ह्रीं शक्तिः ईं कीलकम् श्री बगलामुखी देवताम्बा प्रसाद सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यासः

ब्रह्मर्षये नमः शिरसि, गायत्री छन्दसे नमः मुखे श्रीबगला देवतायै नमो हृदि लं बीजाय नमो गुह्ये ह्रीं शक्तये नमः पादयोः रं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यास :

ह्लां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॐ ह्लीं तर्जनीभ्यां स्वाहा ॐ ह्लूं मध्यमाभ्यां वषट् ॐ ह्लैं अनामिकाभ्यां हुम् ॐ ह्लौं कनिष्ठकाभ्यां वौषट् ॐ ह्लः करतल कर पृष्ठाभ्यां फट्

हृद्यन्यास :

ॐ ह्लां हृदयाय नमः ॐ ह्लीं शिरसे स्वाहा ॐ ह्लूं शिखायै वषट् ॐ ह्लैं कवचाय हुम ॐ ह्लौं नेत्रत्रयाम वौषट् ॐ ह्लः अस्त्राय फट्

ध्यानम् :

वादी मूकति रङ्कति क्षितिपति वैश्वानरः शीतति,
क्रोधी शान्तति दुर्जनः सुजनति क्षिप्रानुगः खञ्जति।
गर्वी खर्वति सर्वविच्च जड़ति त्वद् यन्त्रिणा यन्त्रितः,
श्रीनित्ये बगलामुखि प्रतिदिनं कल्याणि तुभ्यं नमः॥
एवं ध्यात्वा जपेन्मन्त्रं तत्व लक्षं सुबुद्धिमान्

इस तरह ध्यान करके एकलाख जप करे तो शीघ्र स्तम्भन विद्या को अधिगत कर लेता है।

श्रीबगलामुखी नानाविध हवन व प्रयोग

बगलामुखी देवी का विशिष्ट वस्तुओं द्वारा होम करने पर विशेष फल :-

श्लोक : षटसहस्रं हुनेत् पुत्र दुर्वाहोयमतन्द्रितः।
सम्यम् विषज्वरं हन्ति बगलायाः प्रसादतः ॥1॥

भावार्थ : दूर्वा द्वारा छः हजार आहुति देने पर बगलादेवी की कृपा से विषज्वर से व्यक्ति मुक्ति प्राप्त करता है।

श्लोक : दधिमिश्रं गुडूचीभिः शर्करागुडसम्मितम्।
जुहुयात् षट् सहस्रं तु नानामेह निवारणम् ॥2॥

भावार्थः- दधि मिश्रित गुडूची, शंर्करा गुड द्वारा छः हजार आहुति देने पर मूत्र सम्बन्धी बीमारियों का निवारण होता है।

श्लोक : षट्सहस्रं हुनेत् पुत्र शर्कराज्य समन्वितम्।
पित्तोद्रेकादि सर्वांश्च रोगानाशयति ध्रुवम् ॥3॥

भावार्थ :- शर्करा और धृत की छः हजार आहुति देने पर पित्तादि का प्रकोप पूर्णतः नष्ट हो जाता है। समस्त रोगों का भी नाश करता है।

श्लोक : शालिसक्तुं धृतोपेतं वशीकरणमुत्तमम्।
लाजाहोमं षट्सहस्रं लभेद् वाञ्छित कन्यकाम् ॥4॥

भावार्थ :- चावल, सत्तु, धृत, लाजा (खील) इत्यादि द्वारा होम करने पर अर्थात् छः हजार आहुति देने पर व्यक्ति मन पसन्द कन्या प्राप्त कर लेता है।

हरिद्रार्चन एवं हवन विधि :-

श्लोकः हरिद्राखंड होमं तु षट्सहस्रं सुबुद्धिमान्।
गर्भस्तम्भो भवेन्नारी सातं वश्या भवेत् ध्रुवम् ॥5॥

भावार्थ :- हरिद्रखंड की छः हजार आहुति देने पर स्त्री का गर्भ स्तम्भन हो जाता है। और वह निश्चित् ही वश में हो जाती है।

हुनेत् पद्म दलेनैव नेत्र रोगं विनश्यति।

अर्थात् पद्मदल (कमल) पुष्प से होम करने से नेत्र रोग का नाश होता है।

श्लोक : मल्लिका कुसुमेनैव अविका च मति र्भवेत्।
जातीफलेन जुहुयादुन्मत्तो जायते रिपुः ॥6॥

भावार्थ :- मल्लिका के पुष्प से हवन करने पर बुद्धि का विकास होता है। जायफल का हवन करने पर शत्रु उन्मत्त हो जाता है।

श्लोक : खजूरिण द्रव्येण पुंसामाकर्षणं भवेत्।
तिलतैलेन जुहुयात् सर्वाकर्षणमाप्नुयात् ॥7॥

भावार्थ :- खर्जूर से होम करने पर पुरूषों का आर्कषण होता है। तथा तिल के तेल का हवन करने पर सभी का आर्कषण सम्भव है।

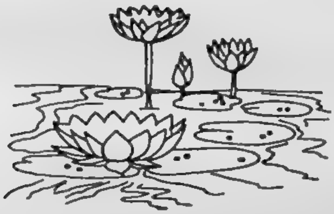

तृतीयअध्याय

बगला शान्तिस्वकः

वास्तुशान्तिः (नानाविधप्रयोग)

सर्वविध शान्त्यर्थ उपाय :-

इस संसार में प्राणिमात्र त्रिविध तापों से संत्रस्त होकर उनके शयन के लिए विविध उपायों का अन्वेषण करता है। कदाचित् भौतिक साधनों, कदाचिद् दैवीय अनुष्ठानों के माध्यम से पीताम्बरा देवी की उपासना, तन्त्र प्रणाली में सर्वोत्कृष्ट स्वीकृत है जिससे व्यक्ति शीघ्र फल प्राप्त कर लेता है।

शान्ति की परिभाषा :- शान्ति शब्द शम् उपशमने धातु से निष्पन्न होता है जिसका अर्थ है किसी के प्रभाव को नष्ट कर देना, यथा ग्रह शान्ति इत्यादि।

नानारोगैः कृत्रिमैश्च नाना चेटक मेव च।
विषभूत प्रयोगषु निरासः शान्ति रुच्यते॥

भावार्थ :- अर्थात् अनेक रोगों से चेटकों से विष से भूत प्रेतादि के आवेश से मुक्ति प्राप्त करना ही शान्ति है। होम द्वारा शान्ति प्राप्त करना :-

दूर्वाहोमं त्रिमध्वक्तं जुहुयादयुतत्रयम्।
रोगहन्ता ग्रहादिभ्यः सद्यः शान्ति करं भवेत्॥

भावार्थ :- अर्थात् शर्करा, शहद, धृत से संपृक्त दूर्वा का हवन करने पर अतिशीघ्र रोग से तथा ग्रह प्रकोप से शान्ति मिलती है। किन्तु -

लक्ष्मीः शान्तिस्तथा पुष्टि र्विघ्नाऽविघ्न निवारणैः।
चतुरस्रे हुनेत् कुण्डे तन्त्रवित् परिशोधिते॥

लक्ष्मी प्राप्ति हेतु तथा शान्ति पुष्टि प्राप्ति हेतु नाना विघ्नों से मुक्ति प्राप्ति हेतु चतुरस्र कुण्ड में ही हवन करें। यदि कुण्ड की व्यवस्था न हो तो चतुरस्र स्थण्डिल पर ही हवन करना चाहिए।

जुहुयात् शान्तिवश्येषु स्थण्डिले चतुरस्रके।

अर्थात् शान्ति करणार्थ तथा वशीकरणार्थ चतुरस्र स्थण्डिल पर ही होम करें। भगवान शिव कहते है कि मन्त्र फलीभूत तब होता है। जब साधक उसका पुरश्चरण कर लेता है।

पुरश्चरणं विना मन्त्रं न प्रसिद्ध्यति भूतले॥

तात्पर्य यह है कि पुरश्चरण के बिना कदापि मन्त्र अपने प्रभाव को नहीं दिखा पाता है। अतः साधक को एक पुरश्चरण करना चाहिए। एक पुरश्चरण 100000 का होता है। (जप संख्या मंत्रनोक्ता लक्षमेकं कुमारक?)

शान्त्यर्थं जुहुयाच्छालि सक्तुराज्य समान्वितम्।
गुणायुतं हुते धीमान् कुण्डे पूर्वोक्तमादरात्॥

भावार्थ :- चावल, सक्तु, रायी का हवन चतुरस्र कुण्ड में करने पर साधक समस्त व्याधियों दुःखों से मुक्ति प्राप्त कर लेता है। आहुति संख्या 30000 के लगभग है।

राजीलवणमादाय मूलमन्त्रेण पुत्रक।
म्रस्तं कृत्वा साध्यनाम जुहुयादयुतं निशि॥

नाना रोग हरं चैव नानाभूत निकृन्तनम्।
नानाकृत्रिमनाशञ्च भवेत् सर्व्वं न संशयः॥

भावार्थ :- रायी, लवण से यदि कोई साधक मूल मन्त्र द्वारा दश हजार आहुति देता है तो समस्त रोगदियों से शान्ति प्राप्त कर लेता है।

यन्त्र पूजा द्वारा शान्ति प्राप्ति :-

कस्तूरीलेपनं कुर्यात् सम्यगर्चित यन्त्रके।
दिव्यं वाण सहस्रं च न्यास ध्यानं च पूर्वकम्।।

मण्डलद्वययोगेन रोग कृत्याग्रहादयः।
तत् क्षणान्नाशमायान्ति तमः सूर्योदये यथा।।

अर्थात् यन्त्र की विधिवत पूजा करके उसका कस्तूरी से सम्यक लेप करे नित्य छः हजार मूलमन्त्र जप करें। इस तरह नित्य प्रति न्यास ध्यान पूर्वक करने पर समस्त दुःख इस तरह शान्त हो जाते है जैसे सूर्योदय होने पर अन्धकार नष्ट हो जाता है।

तर्पण द्वारा शान्ति प्राप्ति :-

पूजयेद्यन्त्रराजं च उपचारैश्च षोडशैः।
तद्यंत्रोपरि सन्तर्प्य तर्पणस्य विधिश्रृणु॥

भावार्थ :- यन्त्रराज की विधिवत् षोडशोव चार पूजा करके उस यन्त्र के ऊपर तर्पण करना चाहिए।

गुडोदकैस्तर्पणं च कुर्यात् पञ्चायुतं तथा।
शान्तिकृत्यं भर्वे शीघ्रं नात्र कार्या विचारणा॥

भावार्थ :- गुड मिश्रित जलद्वारा साधक यदि मूल मन्त्र से 5000 प्रतिदिन के क्रम से लगातार दश दिन तर्पण करे तो सर्वविध शान्ति मिलती है।

बगला-सर्वविध शान्तिस्तवक :

संकल्पः -

ॐ अस्य श्रीबगलामुखी देवता महामन्त्रस्य ब्रह्म ऋषिर्गायत्री छन्दः लँ बीजं ह्रीं शक्तिं ई कीलकं श्रीबगलामुखीदेवताम्बा प्रसाद सिद्ध्यर्थे मम गृहे शान्त्यर्थ शान्ति कवच पाठं विनियोगः।

मन्त्रादौ तव बीजपूर्वकमथ क्लीं ब्लूं म्लूं[1] सौ[2] ग्लौं जपान[3] (तार्वाद्) ध्यानपरायाणः[4] प्रतिदिनं पीत क्षमालाधरः।

साध्याकर्षणवश्यमाशु बगले साध्यस्य शीघ्रं भवेत्,
प्रेताढ्यासनपूर्विके[5] विवसने तत्प्रेमभूमौ निशि ॥1॥

क्रौञ्चभेदन उवाच -

नमः पापविदूराय नमस्ते चन्द्रशेखर।
बगलां[6] चापसंहारविद्यां वद सुपावनी (म्) ॥2॥

ईश्वर उवाच -

ब्रह्मास्त्रस्तम्भिनी काली विद्या चास्त्रसुपावनी[7]।
तस्यास्तत्स्मरणादेव[8] बगला शान्तिमाप्नुयात् ॥3॥

तद्विद्यां च प्रवक्ष्यामि शान्तौ[9] तच्छृणु[10] षण्मुख।
उच्चरेच्छक्तिवाराहं वाराहं[11] तदनन्तरम् ॥4॥

वाग्बीजं च ततोच्चार्य भुवनेशी[12] ततः परम्।
महामायां[13] ततोच्चार्य श्रीबीजं तदनन्तरम् ॥5॥

कालीशब्दद्वयं[14] चोक्त्वा महाकालीपदं[15] वदेत्।
एहि शब्दद्वयं चोक्त्वा कालरात्री (त्रि) पदं वदेत् ॥6॥

स्फुरद्वयं समुच्चार्य्य प्रस्फुरद्वितंय[16] लिखेत्[17] ।।7।।

स्तंभनास्त्रपदं चोक्त्वा शमनीपदमुच्चरेत् ।
हुँ फट् स्वाहा-समायुक्तं मन्त्रमेवं समुद्धरेत्[18] ॥8॥

पंचाशदूर्द्ध्व मंत्रस्य[19] वर्णत्रयविभूषितम्[20] ।
ब्रह्मास्त्रस्तंभिनीकालीमन्त्रमेतन्न संशयः ॥9॥

पलाशमूलमाश्रित्य लक्षमेकं जपेत् स्मयः[21] ।
तर्प्पयेत्तद्दशांशेन[22] कर्पूरमिश्रितं जलैः[23] ॥10॥

पलाशपुष्पैर्जुहुयाच्चतुरस्रे च कुण्डपे ।
ब्राह्मणान् भोजयेत् पुत्र[1] सहस्त्रं शतमेव वा ॥11॥

मन्त्रसिद्धिमवाप्नोति देवता च प्रसीदति ।
ब्रह्मा ऋषिश्च छन्दोऽयं गायत्री समुदाहृतम्[2] ॥12॥

देवता कालिका नाम[3] स्तंभनास्त्रविभेदिनी[4] ।
ध्यानं यत्नात् प्रवक्ष्यामि मन्त्रभेदेन पुत्रक ॥13॥

कालीं करालवदनां कलाधरधरां[5] शिवाम् ।
स्तम्भनास्त्रैकसंहारीं ज्ञानमुद्रासमन्विताम्[6] ॥14॥

वीणापुस्तकसंयुक्तां कालरात्रिं नमाम्यहम् ।
बगलास्त्रीपसंहारीदेवतां[7] विवतोमुखीम्[8] ॥15॥

भजेऽहं कालिकां देवीं जगद्वंशकरां[9] शिवाम् ।
एवं ध्यात्वा तु मन्त्रज्ञः प्रजपेच्छुद्धि[10] मानसः ॥16॥

वक्ष्येऽहं चोपसंहारक्रमं लोकोपकारकम्[11] ।
जम्बीरफलमादाय मन्त्रयेच्छतमादरात् ॥17॥

भक्षयेत् प्रातरुत्थाय निद्रते च कुमारक ।
एवं चार्कदिनं कृत्वा जिह्वास्तम्भादिकृत्त्रिमम् ॥18॥

सद्यो नैर्माल्यमाप्नोति तमः सूर्योदये यथा ।
रवौ श्वेतवचा[12] ग्राह्यं मन्त्रयेच्छतमादरात् ॥19॥

प्रातःकाले भक्षयित्वा त्रिसहस्त्रं मनुं जपेत्।
वाचं[13] मुखं पदं चैव 'जिह्वां बुद्धीन्द्रियाणि च'[14] ॥20॥

स्तम्भितं मन्त्रयोगेन तत्सर्वं शान्तिमाप्नुयात्।
ताम्रपात्रे समादाय नदीजलमकल्मषम्[15] ॥21॥

शतवारं मन्त्रयित्वा प्राशयेच्छान्तिमाप्नुयात्[16] ।
गोमूत्रं चैव संगृह्य मन्त्रयेच्छतमादरात् ॥22॥

एवं कृत्वा जपेन्मन्त्रं उन्मादः शान्तिमाप्नुयात् ।
मन्त्रयेदारनालं च प्रातः प्रातः पिबेन्नरः ॥23॥

मण्डलज्वररोगं च नाशमाप्नोति निश्चितम् ।
'अष्टोत्तरं मन्त्रयित्वा धारोलंवं' पिबेन्नरः ॥24॥

गर्भस्तंभनदोषं च मण्डलाच्छान्तिमाप्नुयात् ।
भस्मं च मन्त्रेयेत् प्रातः त्रिसप्त त्रिशतेन वा ॥25॥

तक्रेण सहितं पीत्वा त्रिसहस्त्रं दिने दिने ।
बगलामंत्रयोगेन एतत्प्राणसमुद्भवः ॥26॥

नाशयेदाशु तत्सर्वं तुलराशिमिवानलः ।
यक्षधूपं समानीता मंत्रयेच्छतमादरात् ॥27॥

धूपयेत्तेन सर्वाङ्गं दशरात्रं कुमारक ।
यक्षधूपेद्भवं चैव प्रयोगं चैव कृत्त्रिमम् ॥28॥

तत्क्षणान्नाशमाप्नोति नात्र कार्या विचारणा ।
रवौ ब्राह्मीं समादाय छायाशुष्कं समाचरेत् ॥29॥

मन्त्रयेत् त्रिसहस्रं तु भक्षयेत् प्रातरेव च ।
एतद्विद्यां जपेन्नित्यं त्रिसहस्रं कुमारक ॥30॥

बगलास्त्रकृतं यद्यत् प्रयोगं दुर्ल्लभम् भुवि ।
तत्सर्वं नाशमाप्नोति मासं मण्डलमात्रतः ॥31॥

ब्राह्मीरसं समादाय मन्त्रयेच्छतधा पुनः ।
शर्करासहितं पीत्वा सहस्रं जपमाचरेत् ॥32॥

नानाकृत्त्रिमदोषं च बगलामन्त्रतः कृतम् ।
अमङ्गल्योद्भवं नाथ भूतले यदि दुर्लभम् ॥33॥

मण्डलान्नशमाप्नोति तमः सूर्योदये यथा ।
एतद्विद्या सम्प्रदायं गुरुक्तान् लब्धमन्त्रवान् ॥34॥

लक्षमेकं जपेन्मन्त्रो प्रयोगं नाशमाप्नुयात् ।
अशक्तश्च स्वयं पुत्र कुर्वते ब्राह्मणामपि ॥35॥

द्विगुणां जपमाप्नोति तमो सूर्योदये यथा ।
एतद्विद्यां सम्प्रदायं वक्षयेत् ब्राह्मणानपि ॥36॥

द्विगुणं जपमात्रेण सर्वशान्तिमवाप्नुयात् ।
एतद्विद्यां विना पुत्र कलौं च बगलामुखि(खीं) ॥37॥

प्रयोगशान्तिर्न भवे(न्) मंत्रयन्त्रौषधादिभिः ।
सप्तकोटिमहामंत्रप्रयोगेषु च पुत्रक ॥38॥

एतद्विद्यापुरश्चर्य्या नाशयेदाशु निश्चयम् ।
नमः श्रीकालिकादेव्यै कालरात्र्यै नमो नमः ॥39॥

उपसंहाररूपिण्यै देव्यै नित्यं नमो नमः ॥40॥

विद्वेषण स्तवक विधिः-

शास्त्रकारों ने चार तरह की नीतियों का प्रयोग शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने हेतु निर्देश किया है। शाम, दान, दण्ड, भेद इनमें भेद नीति को ही तन्त्रकार विद्वेषण शब्द से सम्बोधित करते है। अर्थात परस्पर दो घनिष्ठ मित्रों में कलह (झगड़ा) करा देना ही विद्वेषण है। यदि साधक शत्रु की शक्ति को न्यून करने हेतु तान्त्रिक प्रयोग विद्वेषण का आश्रय लेता है तो सुनिश्चित अतिशीघ्र उसे भगवती पीताम्बरा की महती कृपा से स्वकार्य में सफलता अधिगत होती है।
होम द्वारा विद्वेषण :-

निम्बार्क पत्र होमेन निम्ब तैलेन मिश्रितम्।
नेत्रायुतेन विद्वेषं भवेत् पाषाणयोरपि ॥

भावार्थ :- मूल मन्त्र द्वारा नीम के तेल से मिश्रित नीम और अर्क (आक) के पत्रों से 5000 आहुति के क्रम से लगातार चार दिन होम करने पर पत्थरों में भी विद्वेषण हो जाता है फिर मनुष्यों का कहना ही क्या। किन्तु विद्वेषणार्थ होम करने हेतु वर्तुलाकार कुण्ड ही निर्मित करना चाहिए।

''विद्वेषणे तु जुहुयाद् वर्तुले कुण्ड मध्यये''

अर्थात् विद्वेषण प्रयोग सिद्धि हेतु वर्तुलाकार कुण्ड का ही प्रयोग करें। यदि कदाचित् कुण्ड की व्यवस्था न हो सके तो अष्टकोण का स्थण्डिल बनाना चाहिए।

विद्वेषणे स्तम्भने च जुहुयाद् अष्टकोणके ।

अर्थात विद्वेषण और स्तम्भन करने हेतु अष्टकोण के स्थण्डिल पर हवन करना चाहिए।

यन्त्र पूजा द्वारा विद्वेषण :-

साधक पीताम्बरा देवी के यन्त्र की विधिवत् पूजा नीम और अर्क के पत्तों से करें तो सद्यः विद्वेषण होता है।

निम्बार्क कुसुमेनायं यन्त्र वापि कुमारक।
पूर्ववत् पूजयेत् मन्त्री सद्यो विद्वेषणं भवेत्॥

अथवा

सर्षपास्त्रिक् दूर्वेश्च दुग्धैर्व्रज्रार्क सम्भवैः।
क्षारेण मर्दयेत् सम्यक् यन्त्र लेपन माचरेत्।।

कृत्वार्धमण्डलं चैव षट्सहस्र दिने दिने।
विद्वेषणं भवेत् सिद्धं शिवस्य वचनं यथा ॥

भावार्थ : पीली सर्षप, पीली सरसों का तेल तीन पत्तों से युक्त दूर्वा, दूध, अर्क के पत्ते तथा नमक इत्यादि द्वारा यदि पीताम्बरा यन्त्र का छः हजार बार लेपन करने पर विद्वेषण अतिशीघ्र होता है। ऐसा सांख्यायन तन्त्र में भगवान शिव ने कहा है।

तर्पण द्वारा विद्वेषण :-

निम्बार्क पत्र जद्रावैर्मिश्रितं कूपवारिणा।
पञ्चायुतं तर्पणेन सद्यो विद्वेषणं भवेत्॥

भावार्थ : कूप (कुआ) के जल में निम्ब और अर्क पत्रों द्वारा पञ्चायुत तर्पण करने पर भी सद्य विद्वेषण होता है।

विद्वेषणार्थ श्रीबगलाष्टाक्षरात्मक मन्त्र जप विधिः-

सर्व साधक पीताम्बर देवी का विधिवत् पूजन करें तत् पश्चात दायें हाथ में जल लेकर अधोलिखित विनियोग पढ़े। विनियोग :-

ॐ अस्य श्री बगलाष्टाक्षरात्मक मन्त्रस्य श्री ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छन्दः श्रीबगलामुखी देवता ॐ बीजं ह्रीं शक्तिः क्रों कीलकम् श्रीबगला देवताम्बाप्रसाद सिद्ध्यर्थे अमुक संख्याक जपम् (दोनो का नाम) अमुकयोः विद्वेषणार्थं जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः - श्रीब्रह्मर्षये नमः शिरसि, गायत्री छन्दसं नमो मुखे, श्रीबगलामुखी देवतायै नमो हृदि, ॐ बीजाय नमो गुह्ये, ह्रीं शलये नमः पादयोः, क्रों कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः - ॐ ह्लां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॐ ह्लीं तर्जनीभ्याम् स्वाहा ॐ ह्लूं मध्यमाभ्यां वषट् ॐ ह्लै अनामिकाभ्यां हुँ ॐ ह्लौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् ॐ ह्लः करतल कर पृष्ठाभ्यां फट् ।

हृदयदिन्यासः - ॐ ह्ला हृदयाय नमः ॐ ह्लीं शिरसे स्वाहा ॐ ह्लूं शिखायै वषट् ॐ ह्लैं कवचाय हुम ॐ ह्लौ नेत्रत्रयाय वौषट् ॐ ह्लः अस्त्राय फट्।

ध्यानम् :- युवतीं च मदोद्रिक्तां पीताम्बरधरां शिवाम्।
पीतभूषण भूषाङ्गी समपीन पयोधराम॥

मदिरा मोद वदनां प्रवाल सदृशाधराम्।
पान पात्रं च शुद्धिं च विभ्रतीं बगलांस्मरेत्॥

अथ मन्त्रः

(ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा)

इस मन्त्र का हरिद्रा की माला से आठ लाख जप करने पर व्यक्ति विद्वेषणादि अनेक सिद्धियों को प्राप्त कर लेता है।

उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर अग्रिम प्रयोग करने पर सद्य विद्वेषण होता है। यह अचूक विधि है।

काकोलूक दलं चैव भौमेवा रविवासरे।
संग्रहेत् प्रेतवस्त्रेण वेष्टयद् रविवासरे ॥
निःक्षिपेद् रविवारे तु रिपुगेहे तु बुद्धिमान्।
गेह विद्वेषणं सद्यो जायते नात्र संशयः॥

भावर्थ :-

ॐ आं ह्लीं क्रों हुँ फट् स्वाहा ।

मन्त्र से एक हजार बार अभिमन्त्रित करके काक और उल्लु के पंखों को भौमवार या रविवार के दिन मुर्दे के वस्त्र से वेष्टित करके शत्रु के घर में निक्षेप करें तो शीघ्र ही विद्वेषण होता है।

किन्तु यह ध्यान रहे कि विद्वेषण उसी स्थिति में साधक को करना चाहिए जिसमें समाजहित, लोकहित एवं देशहित हो स्वार्थिक विद्वेषण अच्छा कार्य नही है।

विद्वेषणे तु जुहुयात् पात्रैर्निम्बार्क संयुतैः ।
रात्रौ वेदायुतं धीमन् सद्यो विद्वेषणं परम् ॥

भावार्थ :- रात्रि के समय निम्ब और आक के पत्तों की आठ रात लगातार क्रमशः पाँच हजार आहुति देने पर आठ रात्रि के पश्चात् साधक विद्वेषण सिद्धि प्राप्त कर लेता है। ये आहुतियां पाँच हजार है तथा अष्टाक्षरी मन्त्र से ही देनी चाहिए।

बगला विद्वेषण स्तवक :

संकल्प :-

ॐ अस्य श्री बगलामुखी देवता महामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषि गायत्री छन्दः लँ बीजं ह्रीं शक्तिं ई कीलकं श्री बगलामुखीदेवताम्बा प्रसादसिद्ध्यर्थे (शत्रु का नाम बोले) विद्वेषण कवच पाठे विनियोगः ।

अथ ध्यानम् :-

नमस्ते बगलादेवीमासवप्रियभामिनीम् ।
भ(भ) जेऽहं स्तम्भनार्थं च गदां जिह्वां च बिभ्रतीम् ॥1॥

ईश्वर उवाच :-

पूजयेद्यन्त्रराजं च उपचारैश्च षोडशैः ।
तद्यंत्रेपरि सन्तर्प्य तर्प्पणस्य विधि श्रृणु ॥2॥

गुडोदकैस्तर्पणं च कुर्यात्पंचायुतं तथा ।
शान्तिकृत्यं भवेच्छीघ्रं नात्र कार्या विचारणा ॥3॥

द्रवेण तर्पणं कुर्यात् पूर्वसंख्यासु पुत्रक ।
वश्यं सम्मोहनं चैव भवेत्तर्पणयोगतः ॥4॥

मोहिनीद्रवसंमिश्रं जलेनैव तु तर्पणम् ।
नेत्रायुतप्रमाणेन जिह्वास्तम्भनमाप्नुयात् ॥5॥

गतिगर्भं च वाक्यानि गात्रं श्रोत्रं तथाक्षिकम् ।
क्षुधा तृष्णा च निद्रा च स्तंभनं च भवेद् ध्रुवम् ॥6॥

निम्बार्कपत्रजद्रावैर्मिश्रितं कूपवारिणा ।
पञ्चायुतं तर्पणेन सद्यो विद्वेषणं भवेत् ॥7॥

वज्रार्कक्षीरमिश्रं च 'कान्ता च' तर्पणेन च ।
उच्चाटनं भवेच्छत्रोरयुतत्रयमादरात् ॥8॥

प्रेतान्नं प्रेतभस्मं च प्रेताङ्गारं च पुत्रक ।
समं समं गरं ग्राह्यं जीवेनैव तु मिश्रितम् ॥9॥

नेत्रायुतं तर्पणेन साक्षाद् रिपुविनाशनम् ।
हयारिपत्रजद्रावैर्मिश्रितं मारणं भवेत् ॥10॥

कर्पूरमिश्रितं तोयं पंचाशच्छतमादरात् ।
नित्यं च तर्पयेद् श्रीमान् मासमेकमतन्द्रितः ॥11॥

पुराणज्वरमत्युग्रं पित्तरोगं विनश्यति ।
चन्दनाम्भस्तर्पणेन तापं कृत्रिमजं हरेत् ॥12॥

कस्तूरीमिश्रितं तोयैः राज्यलाभो भवेद् ध्रुवम् ।
यैस्तु तर्पणमंत्रेषु अयुतं रविसंख्यया ॥13॥

कुबेर सदृशः श्रीमान् जायते नात्र संशयः ।
माध्वीद्रव्येण सम्मिश्रं पूजितं शुद्धवारिणा ॥14॥

रत्नायुतं तर्पणेन लक्ष्मीर्वा जायते ध्रुवम् ।
गोक्षीरतर्पणेनैव ईप्सितां सिद्धिमाप्नुयात् ॥15॥

तक्रेण तर्पणं चैव पित्तरोगं व्यपोहति ।
आरनालेन संतर्प्य जलदोषं च शाम्यति ॥16॥

हरिद्राम्भस्तर्पणेन स्त्रीणामाकर्षणं भवेत् ।
शमंतकुसुमेनैव मिश्रितं जलतर्पणम् ॥17॥

पुत्रावान् जायते मर्त्यो अयुतेन न संशयः।
कदलीफलगोक्षीरं शर्करा च समं समम् ॥18॥

वशीकरणस्तवक स्तवक :-

विधि :- तन्त्रशास्त्र मे मनीषियों ने षट् कर्म प्रतिपादित किये है।

शान्तिवश्यस्तम्भनानि विद्वेषोच्चाटनं तथा ।
मारणान्तानि शंसन्ति षट् कर्माणिमनीषिणः ॥

अर्थात् - शान्ति कर्म, वश्य कर्म, स्तम्भन कर्म, उच्चाटन कर्म, मारक प्रयोग इत्यादि है। जिनमें वश्य शब्द से तात्पर्य है

" वश्यं जनानां सर्वेषां वात्सल्यं हृद्गतं स्मृतम् " ।

अर्थात् समस्त मनुष्यों के हृदय में अपने प्रति साधक जब वात्सल्य अर्थात् प्रेम उत्पन्नकर लेता है। सभी को अपने मनोनुकूल कर लेता है तो उसे वश्य शब्द से अभिव्यक्त करते है।

सुमन्त कुसुमैराज्यं कृतं वाणायुतं तथा।
जुहुयान्निशि काले च वश्यं सम्मोहनं भवेत् ॥

भावार्थ - भगवती पीताम्बरा के निमित्त स्यमन्त पुष्प और आज्य से रात्रिकाल में छः हजार आहुति देने पर वशीकरण होता है।

हरिद्राखण्ड होमेन अयुतेन कुमारक ।
वशीकरण सम्मोहं भवेच्छङ्कर भाषणम् ॥

भावार्थ - भगवती पीताम्बरा को प्रसन्नतार्थ दश हजार आहुति हरिद्रा खण्ड की देने पर देवी की कृपा से वशीकरण होता है ऐसा शंकर भगवान ने कहा है।

वशीकरणार्थ कुण्डाकृति :-

वशीकरण सम्मोहे वाणिज्ये द्रव्य संग्रहे ।
कीर्तिकामस्तु जुहुयाद् भगाकारे च कुण्डके ॥

भावार्थ - तीन तरह के कार्यो की सिद्धि के लिए योनि कुण्ड बनाना चाहिए प्रथम वशीकरण, व्यापार में लाभ और कीर्ति कामनार्थ उपर्युक्त कुण्ड में होम करना चाहिए।

हवनात्मक वशीकरण :-

वशीकरण कार्येषु विल्वपत्रं धृतप्लुतम्।
गुणायुतं चामलक प्रमाणं क्रौञ्चभेदन॥

भावार्थ - भगवान शिव कहते है। कि हे क्रौञ्चभेदन वशीकरण कार्यो मे धृतासिक्त विल्व पत्रों की पचास हजार आहुति देने पर वशीकरण होता है। आहुति का प्रमाण ऑवला के बराबर होना चाहिए।

यन्त्र पूजा विधि द्वारा वशीकरण :-

पूजायन्त्रमिदं पुत्र पूजनात् सर्वसिद्धिदम्।
पूजाविधिं प्रवक्ष्यामि मुनिग्राह्यं सुपावनम्॥

भावार्थ - गोपनीय सुपावन यन्त्र की पूजा की प्रक्रिया प्रस्तुत करते है जो कि सर्व सिद्धिदायक है।

मूलमन्त्रेण सम्पूज्य उपाचारैश्च षोडशैः।
शुद्धप्रदेशजां दूर्वां निर्मलां च सुकोमलाम्॥

भावार्थ -बगलामुखी पीताम्बरा देवी के यन्त्र की मूलमन्त्र से षोडशोपचार पूजा करके शुद्ध स्थान पर अंकुरित सुकोमल विशुद्ध दूर्वा लेनी चाहिए।

संग्रहेत् क्षालयेत् सम्यक् मन्त्रराजेन पुत्रक।
मन्त्रान्ते च नमः पूर्वं क्षिपेद् दूर्वांसमादरात्॥

भावार्थ - अर्थात् मन्त्रराज का उच्चारण करके जल से दूर्वा का प्रक्षालन करें और मन्त्र के अन्त नमः शब्द उच्चारित कर, आदर पूर्वक भगवती को दूर्वा समर्पित करें।

तेन पूजा प्रकर्त्तव्या पूर्ववन्मण्डलं सुधीः।
सम्मोहनं च वश्यञ्च द्रव्यलाभं भवेद् ध्रुवम॥

भावार्थ - अर्थात् इस विधि से यन्त्र पूजा करने पर निश्चित ही सम्मोहन होता है। और द्रव्य लाभ भी होता है।

शालिसक्तुं धृतोपेतं वशीकरण मुत्तमम् ।
लाजा होमं षट् सहस्रं लभेद् वान्छित कन्यकाम् ॥

भावार्थ - चावल, सत्तु और घी को सम्मिश्रित कर मूल मन्त्र से छः हजार आहुति देने पर वशीकरण होता है। तथा लाजा (खील) का होम करने पर इच्छित कन्या को प्राप्त करता है।

पूजा द्वारा वशीकरण :- यन्त्रराज की पूजा का फल

त्रैलोक्यं वशमाप्नोति पूजायाश्च प्रभावतः ।
चम्पकेनैव सम्पूज्य पूर्ववत् विजितेन्द्रियः ॥

भावार्थ - चम्पा के पूष्पों से यन्त्रराज की विधिवत् पूजा करने पर जितेन्द्रिय व्यक्ति तीनों लोको के प्राणियों को वश में कर लेता है।

तर्पण द्वारा वशीकरण :-

हरिद्रम्भस्तर्पणेन स्त्रीणामकर्षणं भवेत् ।

अर्थात् हरिद्रा मिश्रित जल से पीताम्बरा देवी का तर्पण करने पर स्त्रियों का वशीकरण होता है।

त्रिमध्वक्त तिलैर्होमो नृणां वश्यं करोत्यतः ।
मधुरत्रितयाक्तैः स्यादाकर्षो लवणैर्ध्रुवम् ॥

भावार्थ - त्रिमधु (शर्करा, मधु, शहद) तिल से होम करने पर मनुष्य वश्य में होते है। त्रिमधु और लवण से होम करे तो आकर्षण होता है।

मन्त्र जप द्वारा वशीकरण :-

श्रीबगलाष्टाक्षरी मन्त्र का जप विधिवत् सम्पन्न करने पर साधक एक साथ वशीकरण व सम्मोहन सिद्धि प्राप्त कर लेता है।

वशीकरण सम्मोहा जायते नात्र संशयः ।
उदम्बर तरोर्मूले पूर्ववज्जपमाचरेत् ॥

भावार्थ :- उदम्बर (गूलर) के वृक्ष के नीचे विधिवत् पीताम्बरा देवी की पूजा करके साधक ॐ आं ह्रीं क्रों हुं फट् स्वाहा मन्त्र का आठ लाख पुरश्चरण पूर्ण मनोयोग से करता है तो उसे उक्त सिद्धि प्राप्त हो जाती है।

वशीकरणस्तवक :-

संकल्प :-

ॐ अस्य श्री बगलामुखी देवता महामन्त्रस्य ब्रह्मऋषि गायत्री छन्दः लँ बीजं, ह्रीं शक्तिं, ईं कीलकं श्री बगलामुखी देवताम्बा प्रसादसिद्ध्यर्थे (व्यक्ति का नाम बोलें) वशीकरण कवच पठे विनियोगः।

अथध्यानम् :

बन्धूककुसूमाभासां बुद्धिनाशनतत्पराम् ।
वन्देऽहं बगलां देवीं स्तम्भनास्त्राधिदेवताम् ॥1॥

क्रौञ्चभेदन उवाच :

नमस्ते गिरिजानाथ मन्त्रविद्यागमप्रभो।
अधुना चास्त्रविस्तारं वद मे करुणाकर ॥2॥

ईश्वर उवाच :

तारं च स्तब्धमायां च प्रासादं च तंतः परम् ।
पनुर्लिख्य स्तब्धमायां प्रंणवं च ततः परम् ॥3॥

बगलामुखिपदं चोक्त्वा सर्वदुष्टपदं वदेत् ।
न(ल?)कारं दीर्घसंयुक्तं बिन्दुना भूषितं तथा ॥4॥

बीजपञ्चकमुच्चार्य वाचं मुखं पदं वदेत् ।
स्तंभयद्वयमुच्चार्य पञ्चबीजानि चोच्चरेत् ॥5॥

जिह्वां कीलय उच्चार्य पञ्चबीजानि चोच्चरेत् ।
बुद्धिं विनाशययुगं पञ्चबीजानि चोच्चरेत् ॥6॥

वह्निजायासमायुक्त षष्टिवर्णात्मकं मनुम् ।
जातवेदमुखीमन्त्रं जगदाश्चर्यकारकम् ॥7॥

अर्कपञ्चकवर्णेन बद्धोऽयं मन्त्रनायकः ।
ऋषिः कालाग्निरुद्रस्तु पंक्तिश्छन्द उदाहृतम् ॥8॥

जातवेदमुखी मंत्रदेवता समूदाहृता ।
ॐ 'बीजं ह्रीं च शक्तिश्च हं कीलकमुदाहृतम् ॥9॥

पूर्ववन्न्यासविद्यां च ध्यानं वक्ष्यामि पुत्रक ।
जातवेदमुखी देवी देवता प्राणरूपिणी ॥10॥

भजेऽहं स्तम्भनार्थं च स्तम्भनी विश्वरूपिणीम् ।
एवं ध्यात्वा जपेन्मन्त्रं त्रिशल्लक्षं सुपावनम् ॥11॥

चर्मधृग्वसनो भूत्वा चिन्तितार्थप्रदं ध्रुवम् ।
गन्धर्वांश्चैव यक्षांश्च गरुडोरगपन्नगान् ॥12॥

वेतालडाकिनीप्रेतशाकिनीब्रह्मराक्षसान् ।
ऋषिदेवगणांश्चैव सिद्धानन्यांश्च पुत्रक ॥13॥

अधुना स्तम्भयत्येतत् सत्यं शङ्करभाषणम् ।
तारं च स्तब्धमायां च वह्निबीजं च पंचकम् ॥14॥

प्रस्फुरद्द्वितयं चैव बीजं चैव त्रयोदश ।
ज्वालामुखी पदं चोक्त्वा वदेद्बीजं त्रयोदश ॥15॥

सर्वशब्दं ततोच्चार्य दुष्टानां पदमुच्चरेत् ।
बीजं त्रयोदशं चोक्त्वा वाचं मुखं पदं वदेत् ॥16॥

स्तम्भयद्वितयं चोक्त्वा पुनर्बीजं त्रयोदश ।
जिह्वां कीलय चोच्चार्य पुनर्बीजं त्रयोदश ॥17॥

बुद्धिं 'विनाशयं चोक्त्वा' पुनर्बीजं त्रयोदश ।
वह्निजायासमायुक्तं ज्वालामुख्यमयं मनुः ॥18॥

शतोत्तरं भवेद्विंशद्बीजबद्धो मनुस्त्वयम् ।
अत्रिश्च ऋषिरेवात्र गायत्रीछन्द उच्यते ॥19॥

ज्वालामुखी देवता च स्तम्भनाय त्रिमुर्तिभिः ।
ध्यानं यत्नात् प्रवक्ष्यामि न्यासं पूर्ववदाचरेत् ॥20॥

स्तम्भन स्तवक विधि :-

साधक को जब शत्रु के सर्व कार्यो में अवरोध करना हो तो उसे स्तम्भन प्रयोग करना चाहिए।

स्तम्भनं रोधनं पुत्र सर्वकर्मसु निष्फलम् ॥

सांख्यायन तन्त्र में भगवान शिव कहते है कि हे पुत्र सभी कार्यो को स्थगित कर देना, समस्त कार्यो को निष्फल कर देना स्तम्भन शब्द से जाना जाता है। किन्तु साधक को इस बात का विशेष ध्यान रहना चाहिए कि क्षुद्र कार्यो की सिद्धि हेतु उक्त कार्य न करें।

श्लोक :

क्षुद्र प्रयोजनैः पुत्र न कर्त्तव्यं कदाचन्।
अज्ञानात्कुरूते यस्तु देवताशाप माप्नुयात् ॥

भावार्थ : तन्त्र शास्त्र में स्पष्ट लिखा है कि क्षुद्र कार्यो की सिद्धि हेतु उक्त प्रयोग नही करना चाहिए, यदि कोई भी साधक ऐसा कार्य करता है तो देवता के शाप का भाजन हो जाता है।

श्लोक :-

स्तम्भनेषु हुनेद्धीमान् तालकं धृतसम्प्लुतम्।
बदरीफलमात्रन्तु गुणायुतमनन्य धीः ॥

भावार्थ :- साधक स्तम्भन करने हेतु हरताल के पत्ते धृत से आद्र करके वेर समान आहुति प्रमाणं रखते हुए छः दिन अनन्य भाव से मूलमन्त्र द्वारा तीस

हजार आहुति पीताम्बरा के निमित्त समर्पित करे तो शत्रु का स्तम्भन होता है। स्तम्भन प्रयोगार्थ विशेष कुण्ड की आवश्यकता होती है। जैसा कि -

श्लोक :-

दशोन्द्रिय स्तम्भने तु दिव्यै गन्धैस्तथैव च।
त्रिकोण कुण्डे जुहुयाद् गुरुमार्गेण बुद्धिमान्॥

भावार्थ :- दश इन्द्रियों को स्तम्भित करने हेतु दिव्यगन्धय युत त्रिकोणाकृति का कुण्ड निर्मित करना चाहिए। यदि कुण्ड की व्यवस्था न हो सके तो स्थण्डिल पर ही होम करना चाहिए।

विद्वेषणे स्तम्भने च जुहुयाद् अष्ट कोणके।

भावार्थ :- विद्वेषण और स्तम्भन कार्यो में अष्टकोण के स्थण्डिल पर ही होम करना चाहिए।

सवत्रै वोन्नतं पुत्र प्रादेशं स्थाण्डिल क्रमम्।

सभी कार्यो में उन्नत वं प्रादेश मात्र का स्थण्डिल ही बनाना चाहिए। द्वितीय विधि :-

श्लोक :

प्रेतभस्म रवौ ग्राह्यं बगला मन्त्र राजतः।
सहस्रं मन्त्रयेच्छत्रो रात्रौ नग्नोऽथ भौमके॥

भावार्थ :- साधक श्री बगलामुखी मन्त्र से रविवार अथवा मंगलवार की रात्रि को श्मशान में जाकर निंवस्त्र होकर चिता की भस्म ग्रहण करे। तत् पश्चात् उसे बगलामुखी मन्त्र से एक हजार बार अभिमन्त्रित करें।

श्लोक :

खाने पाने च तद् भस्म दातव्यं शत्रुमण्डले।
वाक् पाणिपादपयुश्च नेत्रश्रोत्र मतिस्तथा॥

स्तम्भनं भवेच्छीघ्रं बृहस्पति समोऽपि च।
किं पुनर्मानवादीनां स्तम्भनं क्रौञ्च भेदन॥

भावार्थ :- भोजन अथवा पेय में उस भस्म को यदि साधक शत्रु को खिला

देता है तो उसकी वाणी, हाथ, पैर, गुदा, आंख, कान, बुद्धि सभी इन्द्रियाँ कार्य करना बन्द कर देती है। चाहे बृहस्पति समान ही व्यक्ति क्यो न हो फिर साधरण मनुष्यों का तो कहना ही क्या अति शीघ्र स्तम्भित हो जाते है।

विभोतकोद्‌भवं पुष्पमाहरेद् भौमवासरे ।
पूजयेत् पूर्ववत् पुत्र नानास्तम्भनकर्मणि ॥

भावार्थ :- विभीतक (वहेडा का) पुष्प मंगलवार के दिन लाकर यदि साधक विधिवत् यन्त्र की उक्त पुष्पों स पूजा करें तो शत्रु के अनेक कार्यो में स्तम्भन होता है।

यन्त्र लेपन द्वारा स्तम्भन :-

हरिद्र तालकं चैव अर्क क्षीरेण मर्द्दितम्।
त्रिकालं लेपयेन्नित्यं त्रिसहस्रं जपेद्दिने ॥

महास्तंभनमाप्नाति कर्णाक्षि वाक्पतिस्तुवा।

भावार्थ :- स्तम्भन क्रियार्थ हल्दी और हरताल को पीसकर अर्क (आकडा) के दूध में मिलाकर प्रातः मध्यान्ह सांयकाल तीनों समय यन्त्र का लेप करके प्रतिदिन तीन हजार मन्त्र का जप करने से बड़े से बड़े व्यक्ति का भी स्तम्भन किया जा सकता है।

श्लोक :- तर्पणाजिह्वा स्तम्भन

मोहिनी द्रव्य सम्मिश्रं जलेनैवतु तर्पणम्।
नेत्रायुतः तर्पणेन जिह्वा स्तम्भन कृद् भवेत् ॥

भावार्थ :- केले का फल गाय का दूध और शक्कर तीनों का बराबर बराबर लेकर इन चीजों को जल में मिलाकर बीस तर्पण करने पर जिह्वा का स्तम्भन होता है। इन प्रयोगों के अतिरिक्त भी बगलास्त्र महामन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित करके स्तम्भन प्रयोग होता है।

श्लोक :

दन्तधावनकाष्ठं च मन्त्रयेत् त्रिसहस्रकम्।
तत्काष्ठेन रिपोः पुत्र दन्तधावन मात्रतः ॥

जिह्वा वाणीं च बुद्धिं च मनः पादादिकं तथा।
स्तम्भनं च भवेत्छीघ्रं शिवस्य वचनं यथाम्॥

भावार्थ :- ॐ ह्लीं हुं ग्लौं ह्लीं बगलामुखि मम शत्रून् ग्रस ग्रस खाहि खाहि भक्ष भक्ष शोणितं पिब पिब बगलामुखि ह्लीं ग्लौं हुं फट् स्वाहा।

मन्त्र से साधक यदि दातुन करने वाले काष्ठ को तीन हजार बार अभिमन्त्रित कर दे। और यदि उस काष्ठ से शत्रु दातुन करें तो उसकी जिह्वा, वाणी, बुद्धि, मन, पैर इत्यादि सभी स्तम्भित हो जाते है। ऐसा पीताम्बरा तन्त्र में भगवान शिव ने कहा है।

अन्य विधि - श्लोक :

रवौ रात्रौ च संगृह्य चिताभस्म समादरात्।
बगलाष्टाक्षरी मन्त्रम् अयुतं मन्त्रयेत् सुत॥

खाने पाने च तद् भस्म दातव्यं वैरिणस्तथा।
जिह्वा मुखं च कार्णादिपादादिस्तंभनं भवेत्॥

भावार्थ :- साधक रविवार की रात्री को चिता की भस्म लाकर उसको श्रीबगलाष्टाक्षरी मन्त्र "ॐ आं ह्लीं हुं फट् स्वाहा" मन्त्र से दस हजार बार अभिमन्त्रित करके उस भस्म को शत्रु को किसी माध्यम से खान पान में खिला दे तो सुनिश्चित ही शत्रु की जिह्वा, मुख, कर्ण, पादादि स्तम्भित हो जाते है। ऐसा श्री बगलामुखी तन्त्र में लिखा है।

बगला स्तम्भन स्तवक :-

संकल्प :-

ॐ अस्य श्री बगलामुखी देवता महामन्त्रस्य ब्रह्मऋषि गायत्री छन्दः लँ बीजं, ह्रीं शक्तिं, ईं कीलकं श्री बगलामुखी देवताम्बा प्रसादसिद्ध्यर्थे (शत्रु का नाम बोलें) स्तम्भन कवच पाठं पठे विनियोगः।

ध्यानम :-

पीत वर्णां मदाघूर्णां दृढपीनयोधराम् ।
वन्देऽहं बगलां देवीं स्तम्भनास्त्रस्वरूपिणीम् ॥1॥

क्रष्ठचभेदन उवाच :-

राजराज स वै श्रीमान् रजताद्रिनिकेतन ।
पञ्चास्त्रविद्यां वद मे स्तांभनाख्यान्सपवनान् ॥2॥

ईश्वर उवाच :-

आद्यास्त्रं बगलानाम्नी रणस्तम्भनकारणम् ।
उल्कामुखी द्वितीयं च स्तम्भनं भुवनत्रये ॥3॥

ज्वालामुखी तृतीयस्त्रं स्तम्भनं त्रिपु दैवतैः ।
जातवदमुखी चैव चतुर्थास्त्रं कुमारक ॥4॥

ब्रह्मविष्णुमहेशानां स्तंभनं नात्र संशयः ।
बृहद्भानुमुखी चास्त्रं पञ्चमं तु कुमारक ॥5॥

षट्पञ्चकोटिचामुण्डा कालिकादिशतं सूत ।
सपादकोटि त्रिपुरा स्तंभनास्त्रं च उत्तमम् ॥6॥

पञ्चास्त्रोद्धारमतुलं तत्प्रयोगविधि तथा ।
वक्ष्ये तस्योपसंहारं साम्प्रतं पुत्रक ॥7॥

तारं च विलिखेत् पूर्व स्तब्धमायामतः परम् ।
वाराहं शक्तिवाराहं बगलामुखि चोच्चरेत् ॥8॥

ह्लां ह्लीं ह्लूँ च ततोच्चार्य सर्वदुष्टपदं वदेत् ।
लंकारं दीर्घसंयुक्तं बिन्दुनादविभूषितम् ॥9॥

ह्लै ह्लौं ह्लश्च ततश्चैव 'वाचं मुखं पदं' वदेत् ।
स्तम्भयद्वितयं प्रोक्त्वा ह्लः ह्लौं ह्लै च ततो वदेत् ॥10॥

जिह्वां कीलय उच्चार्य ह्लूं ह्लीं ह्लां च ततः परम् ।
बुद्धिं विनाशयोच्चार्य शक्तिवाराहमुच्चरेत् ॥11॥

वाराहं बगलाबीजं तारवर्मास्त्रसंयुतम् ।
रणस्तम्भनबाणं च दुर्लभं भुवि पुत्रक ॥12॥

पञ्चाशदुत्तरं पञ्चबीजबद्धं सुपावनम् ।
ऋषिरेवास्य मंत्रस्य वसिष्ठः छन्दसां पुनः ॥13॥

पञ्चास्यदेवतामन्त्र रणस्तम्भनकारिणी ।
न्यासविद्यां च कर्त्तव्यं पूर्वोक्तं मन्त्रराजवत् ॥14॥

ध्यानं यत्नात् प्रवक्ष्यामि बगलामुखिदेवता ।
पीताम्बरधरां देवीं द्विसहस्त्रभुजान्विताम् ॥15॥

अर्द्धजिह्वां गदा चार्द्ध धारयन्तीं शिवां भजे ।
एवं ध्यात्वा जपेन्मंत्रमर्कलक्षं सुबुद्धिमान् ॥16॥

तालकेन हुनेल्लक्षं ब्राह्मणान् भोजयेत्ततः ।
गजाश्वरथसामन्तकोटिकोटिबलं तथा ॥17॥

निवीर्यो जायते सद्यो मृतशेषः मलायते ।
प्रयोगान्ते समभ्यर्च्य मन्त्रसंस्कारमाचरेत् ॥8॥

संस्कारेण विना मन्त्रं साधकस्य प्रमादकृत ।
लोकालोकस्तंभनं च नाम्ना उल्कामुखी तथा ॥19॥

मन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि शरजन्मन् समासतः ।
तारं च स्तब्धमायां च शक्तिवाराहमेव च ॥20॥

वगलामुखोपदं चोक्त्वा बीजत्रयं तु सर्व च।
दुष्टानां पदमुच्चार्य पूर्वबीजत्रयं वदेत् ॥21॥

वाचं मुखं पदं चोक्त्वा पूर्वबीजत्रयं वदेत् ।
स्तम्भयद्वितयं चोक्त्वा बीजत्रयं ततो वदेत् ॥22॥

जिह्वां कीलय उच्चार्य पुनर्बीजत्रयं वदेत् ।
बुद्धिं विनाशयोच्चार्य पूर्वबीजत्रयं वदेत् ॥23॥

प्रणवं वह्निजायां च उल्कामुख्या अयं मनुः ।
पञ्चाशदूर्द्ध्वं चैवाष्टबीजबद्धं सुपावनम् ॥24॥

ऋषिश्चाप्यग्निवाराहश्छन्दः ककुभमेव च ।
उल्कामुखी देवता च जगत्स्तम्भनकारिणी ॥25॥

बीजं च वगलाबीजं शक्तिः स्वाहासमन्वितम् ।
कीलकं शक्तिवाराहं न्यासं पूर्ववदाचरेत् ॥26॥

ध्यानं यत्नात् प्रवक्ष्यामि मन्त्रभेद कुमारक ।
विलयानलसंकाशां वीरवेषेण संस्थिताम् ॥27॥

वीराम्नायमहादेवीं स्तम्भनार्थं भजाम्यहम् ।
एवं ध्यात्वा जपेन्मन्त्रं मनुलक्षं कुमारक ॥28॥

प्रपञ्चस्तम्भनं कृत्वा स्वविद्यां च प्रकाशयेत् ।
तालकेन हुनेत् पुत्र लक्षमेकं हुताशने ॥29॥

मंत्रसिद्धिर्भवेत् पुत्र त्रैलोक्ये कीत्तिमान् भवेत् ।
तस्याज्ञया जगत्सर्वं स्थावरं जङ्गमात्मकम् ॥30॥

कुमारक प्रवर्त्तन्ते सर्वाश्चर्यकरं भूवि ।
सिद्धि चतुर्विधां' चैव एतन्मन्त्रस्य जापके ॥31॥

उच्चाटन स्तवक :-

विधि :-

शान्ति, वशीकरण, स्तम्भन, विद्वेषण, उच्चाटन, मारणादि प्रयोगों में तन्त्र शास्त्र में शत्रु का उच्चाटन करना भी एक प्रयोग है। जब शत्रु किसी तरह अपनी शक्ति से पराभूत न हो सके तो उसका उच्चाटन कर देना चाहिए। उच्चाटन से तात्पर्य :-

"चलबुद्धिभ्रमेणोक्तमुच्चाटनमिदं भुवि।"

अर्थात् शत्रु की बुद्धि में जब साधक किसी तान्त्रिक प्रयोग द्वारा चंचलता या भ्रम पैदा कर देता है तो उसे उच्चाटन शब्द से अभिव्यक्त किया जाता है। उच्चाटन करने पर व्यक्ति की किसी भी कार्य को करने की इच्छा नही होती यदि करेगा भी तो उल्टा करेगा। फलतः उसका अपने घर में बिल्कुल मन नही लगता। परिवार का कोई भी व्यक्ति उसे अच्छा नही लगता। और वह बिल्कुल निष्क्रिय हो जाता है। इस तरह साधक उच्चाटन द्वारा शत्रु पर सफलता प्राप्त कर लेता है। होम द्वारा शत्रु का उच्चाटन :-

श्लोक :

उलूककाकयोर्पत्रैर्बाणायुतमखडिभिः ।
जुहुयाच्च ततो रात्रौ भवदेच्चाटनं सुतः ॥

भावार्थ :- उलूक और कौआ के पंखों से साठ हजार आहुति एक पक्ष में मूलमन्त्र द्वारा रात्रि को बगलामुखी के नितित्त प्रदान करने पर शत्रु का सुनिश्चित उच्चाटन होता है। कुण्ड विशेष में ही आहुति प्रदान करें ।

"उच्चाटने तु जुहुयात् षटकोणाख्ये तु कुण्डके" ।

अर्थात :- उच्चाटन करने हेतु षटकोण का ही कुण्ड बनायें यदि कुण्ड न होतो षट् का स्थण्डिल बनायें ।

मारणोचाटने पुत्र षट्कोणेषु विधीयते।

अभिमन्त्रित भस्म द्वारा उच्चाटन :-

श्लोक :-

उष्ट्रारूढं रिपुं ध्यात्वाअग्र दण्डेन मन्त्रयेत्।
उच्चाटनं भवेत् सत्यं शिवस्य वचनं यथा॥

भावार्थ :- रिपु (शत्रु) का उष्टारूढ (ऊँट पर बैठा हुआ) ऐसा ध्यान करके दण्डे के अग्र भाग से मुर्दे की भस्म का मन्त्र का उच्चारण करके अभिमन्त्रित करके सात बार आवृत्ति करें तथा शत्रु के घर में सात रात्रि डालें तो उसका निश्चित उच्चाटन हो जाता है।

यन्त्र पूजन द्वारा उच्चाटन :-

श्लोकः

धत्तुरं कुसुमेनैव पूर्ववत् पूजयेत् सुतः ।
उच्चाटनं भवेत् सत्यं नान्यथा शिवभाषणम्॥

भावार्थ :- धत्तुरा (धतुरा) के फूलों से यदि विधिवत् श्रीपीताम्बरा यन्त्र की अर्चना की जाए तथा शत्रु का उच्चाटन हो जाता है। ऐसा श्रीबगला यन्त्र में भगवान शंकर ने कहा है।

यन्त्र लेपन द्वारा उच्चाटन :-

श्लोकः

धत्तुरं तिन्दुकं बीजं तालकेन समन्वितम्,
निम्बपत्र द्रवेनैव मर्दयेल्लेपयेन्त्रिधा ।

एवं मास प्रयोगेण नगरं ग्राममेव च,
रजे वा राजगेहे वा शीघ्रमुच्चाटनं भवेत्॥

भावार्थ :- धत्तुर और तिन्दुक और हरताल के बीजों को नीम के रस में निचोड़ कर उस द्रव्य से मास पर्यन्त दिन में तीन तीन बार लेपन किया जाये तो शत्रु कहीं पर भी हो तो उसका उच्चाटन हो जाता है।

तर्पण द्वारा उच्चाटन :-

श्लोकः

वज्रार्क क्षीरमिश्रं च कान्ता च तर्पणेन च ।
उच्चाटनं भवेच्छत्रोरयुतत्रयमादरात् ॥

भावार्थ :- अर्क और दूध को मिश्रित करके तीस हजार बार तर्पण करने पर शत्रु का उच्चाटन हो जाता है।

छागरक्तेन संमिश्रं चर्चितं तैलतर्पणात् ।
भ्रमज्ञानं व्यापोहंत्ति नान्यथा शिवभाषणम् ॥

भावार्थ :- बकरी के रक्त (खून) से पूजा करके पीली सरसों के तेल से श्रीबगलामुखी यन्त्र का तर्पण करने पर शत्रु शीघ्र ही भ्रमित हो जाता है। ऐसा श्रीबगला यन्त्र में भगवान शिव वचन उपलब्ध होता है।

मन्त्र जप द्वारा उच्चाटन विधि :-

श्लोक

जपेच्च वायुबीजादि गायत्रीं बगलाह्वयाम् ।
क्षिप्रमुच्चाटनं चैव भवेच्छङ्कर भाषणम् ॥

भावार्थ :-

''ॐ ह्रीं ब्रह्मास्त्राय विद्महे स्तम्भनवारणायधीमहि तन्नो बगला प्रचोदयात् ।''

इस श्रीबगला गायत्री मन्त्र का साधक शत्रु के नाम से चार लाख जप करे तो शीघ्र उच्चाटन हो जाता है। ऐसा भगवान शंकर का वचन श्री पीताम्बरा तन्त्र में उपलब्ध होता है। मन्त्र जप विधि आगे उल्लेखित है।

उच्चाटन स्तोत्र -

संकल्प :-

ॐ अस्य श्री बगलामुखी देवता महामन्त्रस्य ब्रह्मऋषि

गायत्री छन्दः लँ बीजं, ह्रीं शक्तिं, ईं कीलकं श्री बगलामुखी देवताम्बा प्रसादसिद्ध्यर्थे (शत्रु का नाम बोलें) उच्चाटन कवच पाठं पठे विनियोगः ।

ध्यानम् :-

जिह्वाग्रमादाय करेणदेवीं वामे शत्रून् परिपीड़यन्तीम् ।
पीताम्बरां पीनपयोधराढ्यां,सदास्मरेऽहंबगलाम्बिकां हृदि ॥

ईश्वर उवाच् :-

मन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि पुरश्चर्याविधिं तथा ।
प्रयोगं चोपसंहारं वक्ष्येऽहं तव पुत्रक ॥3॥

स्तब्धमायां च वाग्बीजं माया मन्मथमेव च।
श्रीबीजं शक्तिवाराहं वगलामुखि चोच्चरेत् ॥4॥

स्फुरद्वयं तथा चोक्त्वा सर्वशब्दं ततोच्चरेत् ।
दुष्टानां पदमुच्चार्य वाचं मुखं पदं वदेत् ॥5॥

संस्तम्भयद्वयमुच्चार्य प्रस्फुरद्वयमुच्चरेत् ।
विकटाङ्गीपदं चोक्त्वा घोररूपीपदं वदेत् ॥6॥

जिह्वां कीलय उच्चार्य महाशब्दं ततोच्चरेत्।
पश्चाद्भ्रमकरी चैव बुद्धिं नाशय उच्चरेत् ॥7॥

विरामयपदं चोक्त्वा 'सर्वप्रज्ञामयीति च' ।
प्रज्ञां नाशय उच्चार्य उन्मादीकुरु युग्मकम् ॥8॥

मनोपहारिणीं चोक्त्वा स्तंभमायां समुच्चरेत् ।
शक्तिवाराहबीजं च लक्ष्मीबीजं ततः परम् ॥9॥

कामराजं च हृल्लेखां वाग्भवं तदनन्तरम् ।
स्तब्धमायां ततोच्चार्य वह्निजायासमन्वितम् ॥10॥

शताक्षरीमहामन्त्रं वगलानाम पावनम् ।
ब्रह्मा ऋषिश्च छन्दोऽस्य गायत्री समुदाहृता ॥11॥

देवता वगलानाम्नी जगत्स्तम्भनकारिणी ।
ह् ल्रीं बीजं शक्तिरित्यववं वाग्भवं कीलकं तथा ॥12॥

पूर्वोक्तां न्यासविद्यां च वगलापञ्जरादयः ।
न्यासानुक्तक्रमेणैव 'जपाद्यां पचं एव च' ॥13॥

पीताम्बरधरां सौत्यां पीतभूषणभषिताम् ।
स्वर्णसिहासनस्थां च मूले कल्पतरोरधः ॥14॥

वैरिजिह्वाभेदनार्थ छूरिकां बिभ्रती शिवाम् ।
पानपात्रं गदां पाशं धारयन्तीं भजाम्यहम् ॥15॥

एवं ध्यात्वा जपेन्मन्त्रमर्कलक्षं क्षपाशनः ।
तर्प्पयेद्धेतुमिश्रेण वारिणा वाथ पुत्रक ॥16॥

'जातिपंचकसंमिश्रजलेन' च कुमारक ।
पूजायुतं च सन्तर्प्य ह्यर्चितेन जलेन च ॥17॥

त्रिमध्वक्तं पायसेन अथवा पायसाज्ययोः ।
वरुणा वा हुनेत् पुत्र सहस्रं तत्त्वसंख्यया ॥18॥

नानादेहजरोगांश्च कृत्रिमग्रहसंभवान् ।
यावकांश्च प्रयोगांश्च तुल्यधातुसमुद्भवान् ॥19॥

सद्योनाशनमायन्ति मन्त्रहोमेन साधकः ।
'साज्यसक्तुघृताक्त' च शमन्तकुसुमेन वा ॥20॥

षट्सहस्रं हुनेत् पुत्र स्थण्डिले वाथ कुण्डके ।
वशीकरं च समोहं कीत्तिः प्रज्ञा भवेद् ध्रुवम् ॥21॥

तालकेन हुनेत् पुत्र सहस्रं वसुसंख्यया।
कुण्डे चैव भगाकारे राजताग्नौ कलौ निशा ॥22॥

स्तम्भनं च भवेत् पुत्र नात्र कार्या विचारणा।
अर्कैश्च पिचुमर्दैश्च समिधः संग्रहेन्नरः ॥23॥

प्रत्येकं त्रिसहस्रं च प्रादेशसमिधा क्रमः ।
मन्त्रं सर्व समुच्चार्यं समिधांद्वयमेव च ॥24॥

हुनेद् ध्यानसमायुक्तः सद्यो विद्वेषणं भवेत् ।
विभीतकस्य समिधो ग्राह्यास्तु त्रिसहस्रकम् ॥25॥

षट्कोणकुण्डे जुहुयान्निशायां कृष्णपक्षके ।
स्थावरांश्च गिरीश्चैव नदीपादपसंकुलान ॥26॥

क्षणादुच्चाटनं कुर्याद् होमस्यास्य प्रभावतः ।
निम्बतैलेन संयुक्त शाल्मलीकुसुमं तथा ॥27॥

जुहुयाद्देवतां ध्यात्वा मारणं भवति ध्रुवम् ।

षटकर्म निर्माणमिद सुसिद्धं,
शताक्षरीमन्त्रमशेष दुःखहम्।
होमेन संस्तम्भनमाचरेद् बुधो,
विद्यासुसिद्धं मुनि गुह्यमादरात् ॥28॥

चतुर्थोअध्यायः

मारणस्तवक

विधि :-

इस संसार में व्यक्ति अपने शत्रु पर विजय प्राप्त करने हेतु अनेकों उपाय करता है। जब लौकिक उपायों द्वारा शत्रु का दमन करने में असमर्थ होता है तब अलौलिक उपायों का आश्रय लेता है। अलौलिक, षट्कर्म, शान्ति, वशीकरण, स्तम्भन, उच्चाटन, विद्वेषण, मारणादि प्रयोगों द्वारा सतत प्रयास करता रहता है।

जब किसी तरह वह सक्षम नही हो पाता तब ''मारण'' प्रयोग को गुरू की सन्निधि में करता है यह बहुत ही अकाट्य व अचुक प्रयोग है। किसी क्षुद्र स्वार्थ की पूर्ति हेतु नही करना चाहिए। जिसके मारने पर हजारों व्यक्तियों का हित हो तब यह प्रयोग करना चाहिए। यह प्रयोग अधार्मिक, पापी, दुराचारी, अत्याचारी व्यक्तियों को दण्डित करने के लिए है।

मारण से तात्पर्य -

प्राणिनां प्राणहरणं मारणं समुदाहृतम् ॥

अर्थात् प्राणियों के प्राणो का हनन ही मारण कहा जाता है। सर्व प्रथम साधक षट्कोण कुण्ड निर्मित करें क्योकि मारण प्रयोग में षट्कोण कुण्ड का प्रावधान है।

''मारणोच्चाटने पुत्र षट्कोणेषु विधीयते'' ॥

अर्थात् मारण और उच्चाटन में षटकोण का प्रावधान है।

श्लोकः

तिललैल समायुक्तं शाल्मली कुसुमं तथा।
लक्षमकं हुनेत् रात्रौ प्रेतागनौ प्रेतकानने ॥

नग्नः प्रेतमुखें भौमे प्रेतकाष्ठे च बुद्धिमान्।
मृकष्डु सदृशं चैव मारणं भवति ध्रुवम् ॥

भावार्थ :- रात्री में मंगलवार के दिन निर्वस्त्र होकर साधक श्मशान में जाकर चिता की अग्नि लाकर षट्कोण कुण्ड में स्थापित करें। तथा तिल के

पीताम्बरा हेतु प्रदान करें तो निश्चय ही शत्रु की मृत्यु हो जाती है। ऐसा बगलामुखी तन्त्र में प्रमाण है।

एक अन्य मारण प्रयोग -

श्लोकः

अनाथस्य चितौ रात्रौ शत्रु प्रकृति लिखेत्।
हृदये नाम आलिख्य मारयेति ललाटके ॥

भावार्थ :- निशाकाल में अनाथ व्यक्ति की चिता में शत्रु की प्रकृति लिखें। हृदय देश पर नाम लिखे तथा मारय शब्द ललाट पर लिखे।

श्लोकः

दहयुग्मं लिखेद बाहौ ऊर्वोस्तस्य कुरुद्धयम्।
एवञ्च विलिखेत् सम्यक् सरात्रोर्वणमाद रात् ॥

भावार्थ :- दह दहः शब्द दोनों भुजाओं पर लिखें, ऊरु प्रदेश पर कुरु कुरु शब्द लिखें इस तरह सशत्रु का सम्यक् आलेख करें।

श्लोकः

ताडयेद् हृदये मन्त्रौ शतमष्टोत्तरं जपेत्।
तद् भस्म संग्रहे धीमान् गोपायेन्नगराद् बहिः ॥

भावार्थ :- तत् पश्चात मूल मन्त्र में ताडयेत् शब्द जोडकर 108 बार जप करें तदनन्तर उस चिता की भस्म को लाकर नगर से बाहर रखें।

श्लोकः

पुनर्भौम निशाकाले मन्त्रयेन्मूलमन्त्रतः।
अष्टोत्तर सहस्त्रञ्च शत्रुमूर्द्धनि विःनिक्षिपेद्,
सशत्रुः सप्त रात्रेण म्रियते नात्र संशयः ॥

भावार्थ :- साधक मंगलवार के दिन उस भस्म बगलामुखी मूल मन्त्र से एक हजार आठ बार अभिमन्त्रित करें और शत्रु के शिर पर प्रक्षेपण करे तो सात रात्री में शत्रु मर जाता है। इसमें कोई भी संशय नही है। अथवा

श्लोक:

तिल तैलेन संयुक्तं माषहोमं गुणायुतम्।
प्रेताग्नौ प्रेतकाष्ठं स जुहुयात् प्रेतकानने॥

भावार्थ :- साधक चिता की लकड़िया लेकर तथा चिता की ही अग्नि लेकर षट्कोण स्थडिल पर श्मशान में ही तिल के तेल और उड़द से चालीस हजार आहुति पीताम्बरा के निमित्त प्रदान करें। किस दिन प्रारम्भ करे इसमें प्रमाण दर्शाते हुए लिखा है कि -

श्लोक :

भौमवारे निशा नग्नो जुहुयात् प्रेत उन्मुखे।
सद्योमारण माप्नोति मृकण्डु सद्दशोऽपिवा॥

भावार्थ :- भौमवार के दिन निशा काल में निंवस्त्र होकर ही होम करें इस तरह प्रयोग करने पर ब्रह्मा के समान शत्रु भी मृत्यु का शिकार हो जाता है।

(चमत्कारिक विशिष्ट प्रयोग)

बलीवर्द प्रयोग :

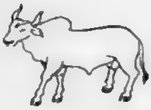

पीताम्बरा देवी के उपासक इस प्रयोग को शत्रु को परास्त करने हेतु करते है। कारगार में पीड़ित, पदच्युत, राजधर्म द्वारा दण्डित, राज बल द्वारा सेवा से निष्कासित, प्रजा द्वारा बहिष्कृत, दाम्पत्य कलह, पारिवारिक कलह, उच्चाधिकारियों, मंत्रीयों तथा शासकों का मर्दन करने के लिए व विजय प्राप्त करने के लिए बगलामुखी अनुष्ठान में बलीवर्द प्रयोग का विधान है।

बलीवर्द प्रयोग विधि :

बलीवर्द प्रयोग करने के लिए पीली मिट्टी का बना हुआ बैल लेकर बलीवर्द के सम्पूर्ण शरीर को हरिद्रा व पीत चन्दन के द्वारा (केसर युक्त) लेपन करना चाहिए। तथा बलीवर्द की नाभि के स्थान में गोल छिद्र करके उदर मे भोजपत्र पर हरिद्रा एवं गोरोचन के रस से व अनार की लेखनी से बगलामुखी यन्त्र निर्माण कर यन्त्र के मध्य में बगलामुखी मूल मन्त्र का लेखन कर शत्रु का नाम व गोत्र भी यन्त्र व मन्त्र के मध्य स्थापित करें तदुपरान्त भोजपत्र पर निर्मित बगलामुखी यन्त्र में दिशाओं का अंकन करे तथा शत्रु पक्षका जिस दिशा में आवास, कार्यालय, अथवा बन्दी जिस स्थान पर हो उस दिशा को बगलामुखी यन्त्र के मध्य भाग को उस दिशा से जोड़े। उसके बाद भोजपत्र पर लिखित यन्त्र को चार परतों में मोड़कर बलीवर्द के उदर रूपी छिद्र में स्थापित करें व आर्द्र पीली मिट्टी से उस छिद्र को पूर्णरुप से बन्द करें।

इस प्रयोग को रविवार के दिन अथवा गुरुवार के दिन रोहिणी या पुष्य नक्षत्र में विशेष रूप से साधक को करना चाहिए। उक्त वार नक्षत्र को ही बलीवर्द को पीत वस्त्र से आच्छादित करे व षोडशोपचार पूजन व पीत सामग्रियों द्वारा करना चाहिए।

विजय प्राप्ति व बन्धन से मुक्त होने के लिए बलीवर्द प्रयोग ग्यारह दिन तक निरन्तर रात्रि काल में पीताम्बरा कवच का पाठ व मन्त्र का जाप घी का दीपक जलाकर व सरसों के तेल का दीपक जलाकर बगलामुखी दीक्षित आचार्य के द्वारा सम्पादित कराया जाना चाहिए।

बिल्व फल का प्रयोगः

दश महाविद्याओं में बगलामुखी का महत्व सर्वोपरि माना गया है। तथा बगलामुखी देवी को कतिपय लोग तान्त्रिक देवी के रुप में मानते है। परन्तु विशेषतः शत्रु मर्दन के लिए बगलामुखी देवी को तामसी माना गया है।

परन्तु बगलामुखी देवी को अपर विद्या श्री देवी के नाम से भी ख्याति प्राप्त है जो कि वर्तमान युग में उत्पन्न गृहस्थियों की समस्याओं में जैसे कि वास्तुदोष, मकान में वायुप्रकोप, स्थिर लक्ष्मी प्राप्ति के लिए व्यापार वृद्धि के लिए श्री वृद्धयर्थ कीलित व्यापार (फेक्ट्री आदि) अथवा कीलित मकान को कीलन से मुक्त करने के लिए विल्व फल अनुष्ठान का विधान सोमवार अथवा शुक्रवार श्रवण अथवा पुष्य नक्षत्र में पके हुए विल्व फल लेकर 108 विल्व फलों की संख्या हो तथा प्रत्येक विल्व फल के मध्य भाग में गोल छिद्र करे वह छिद्र मध्य तक होना चाहिए और उसमें वास्तु दोष हेतु सामग्री :-

घी, जायफल, लवंग, लोहवान, पीत पुष्प, नौसादर आदि को एकत्रित कर विल्व फलों के छिद्र को सामग्री से पूर्ण करें। तथा खेजड़े की समिधा व बगलामुखी मूल मन्त्र के साथ घृत युक्त आहुति से स्वाहाकार करें। इसी प्रकार मकान में वायुप्रकोप शान्ति हेतु अथवा रोगोपशमन हेतु सामग्री-गुग्गल, लोहवान, कालीमिर्च, बूरा, नौसादर, जायफल, पीत चन्दन का बुरादा व सरसों का तेल हवन सामग्री में मिलावें तथा उक्त सामग्री को बतायी विधि के अनुसार विल्व फलों के छिद्र में भरकर बगलामुखी के मूल मन्त्र से 108 बार स्वाहाकार करें।

स्थिर लक्ष्मी प्राप्ति के लिए :

विल्व फल का बुरादा, भोजपत्र, जायफल, लोहवान, बूरा, तथा पीत अम्बर बेल आदि को घृत में मिलाकर श्री यन्त्र को वेदी के मध्य भाग में स्थापित करें व मूल मन्त्र के साथ सम्पुटित श्रीसूक्त का हवन करें व हवन शान्ति के बाद श्री यन्त्र को पूजा में स्थापित करें यह प्रयोग विशेषतः श्रवण पुष्य व स्वाति नक्षत्रों में ही करना चाहिए।

श्री वृद्धि के लिए भी उपर्युक्त हवन विधि के साथ पीताम्बरा श्री सूक्त का सम्पुटित अनुष्ठान दीपावली के दिन अथवा चन्द्र ग्रहण के दिन 101 पाठों का अनुष्ठान कर हवन करना चाहिए। इसके करने से श्री वृद्धि होती है।

व्यापार वृद्धि हेतु इस हवन प्रक्रिया में ही विशेष रूप से बगलामुखी यन्त्र में स्थापित श्री यन्त्र को पांच यन्त्रों की संख्या में लेकर हवन वेदिका में स्थापित करे व शुद्धि व सिद्धि होने के उपरान्त मकान व्यापार (फेक्ट्री) आदि चारों कोनों में स्थापित करें तथा पष्ठचम श्री यन्त्र को पूजा स्थल में स्थापित करें। फेक्ट्री अथवा कीलित मकान को कीलिन से मुक्ति हेतु व्यापार अथवा वास्तु (मकान) कीलन मुक्ति के लिए भगवती बगलामखी देवी के कवच के 108 पाठ करके उपर्युक्त विधि के अनुसार हवन व कीलन मुक्ति हेतु विशिष्ट संकल्प का उच्चारण कर हवन करे। तथा कीलन मुक्ति हेतु अनुष्ठान व हवन बगलामुखी दीक्षित आचार्य के द्वारा ही करना चाहिए क्यो कि कीलन मुक्ति हेतु विशेष प्रयोगो का उल्लेख यहाँ नही किया जा रहा है। वह गोपनीय है।

कुष्माण्ड प्रयोग :

आज का युग द्वेष प्रधान युग है जो कि मनुष्य अन्य व्यक्ति के सुख को देखकर के व्यथित होता है और वह पड़ौसी, रिश्तेदार, भाई बन्धु इतना ही नही अपने परिवार की वृद्धि को देखकरके भी वह ईर्ष्यालु हो जाता है। पर सुख से असहनीय होने से वह स्वयं व्यथित होकर के अन्य को भी दुःखी करना चाहता है।

इसके लिए वह कूष्माण्ड मूठ आदि का प्रयोग करवाता है। इसके बचाव के लिए कूष्माण्ड के प्रयोग को कूष्माण्ड द्वारा ही शान्त किया जाता है। तथा कूष्माण्ड के अभाव में नीबू का प्रयोग करके भी रोगोपशमन, वायु प्रकोप, मारण प्रयोग, जिह्वा कीलन आदि से मुक्त किया जाता है। अतिशय गोपनीय होने के कारण अर्थात् यन्त्र मन्त्र व तन्त्र के प्रभाव हीन हो जाने के भय से साधक ने विशेष रूप से उल्लेख नही किया है।

पञ्चमोअध्यायः

वज्रपञ्जर कवच स्तोत्रम्

अथध्यानम् :

नमः पापविदूराय नमस्ते चन्द्रशेखर ।
बगलां चोपसंहारविद्यां वद सुपावनीम् ॥

शिव उवाच -

पञ्जरं तत्प्रवक्ष्यामि देव्याः पापप्रणाशनम् ।
यं प्रविश्य न बाधन्ते बाणैरपि नरा भुवि ॥1॥

ॐ ऐं हं श्रीं श्रीमत्पीताम्बरा देवी बगला बुद्धिवर्द्धिनी ।
पातु मामनिशं साक्षात् सहस्रार्कयुतद्युतिः ॥2॥

शिखादिपादपर्य्यन्तं वज्रपञ्जरधारिणी ।
श्रीब्रह्मास्त्रविद्या या पीताम्बरविभूषिता ॥3॥

बगला मामवत्वत्र मूर्द्धभागं महेश्वरी ।
कामाङ्कुशा कला पातु बगला शास्त्रबोधिनी ॥4॥

पीताम्बरा सहस्राक्षी ललाटे कामितार्थदा ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीः (मे) पातु पीताम्बरसुधारिणी ॥5॥

कर्णायोश्चैव युगपदतिरत्नप्रपूजिता ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पातु बगला नासिकां मे गुणाकरा ॥6॥

पीतपुष्पैः पीतवस्त्रैः पूजिता वेददायिनी ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पातु बगला ब्रह्मविष्ण्वादिसेविता ॥7॥

पीताम्बरा प्रसन्नास्या नेत्रयोर्युगपद्भ्रुवोः ।
ॐ ऐं ह्लीं श्री पातु बगला बलदा पीतवस्त्रधृक् ॥8॥

अधरोष्ठौ तथा दन्तान् जिह्वां च मुखगा मम।
ॐ ऐं ह्लीं श्री पातु बगला पीताम्बरसुधारिण॥9॥

गले हस्ता तथा बाहौ युगपद्बुद्धिदा सताम्।
ॐ ऐं ह्लीं श्री पातु बगला पीतवस्त्रावृता घना॥10॥

जङ्घायां च तथा चोरौ गुल्फयोश्चातिवेगिनी।
अनुक्तमपि यत्स्थानं त्वक्केशनखलोम मे॥11॥

श्रीशिव उवाच -

असृग्मांसं तथास्थीनि सन्धयश्चाति मे परा।
इत्येतद्वरदं गोप्यं कलावपि विशेषतः॥12॥

पञ्जरं बगलादेव्या दीर्घदारिद्र्यनाशनम्।
पञ्जर यः पठेद्भक्त्या स विघ्नैर्नाभिभूयते॥13॥

अव्याहतगतिश्चापि ब्रह्माविष्ण्वादिसत्पुरे ।
स्वर्गे मर्त्ये च पाताले नारयस्तं कदाचन॥14॥

प्रबान्धते नरं व्याघ्राः पञ्जरस्थं कदाचन।
अतोभक्तैः कौलिकैश्च स्वरक्षार्थं सदैव हि ॥15॥

पठनीयं प्रयत्नेन सर्वानर्थविनाशनम्।
महादाद्रियशमनं सर्वमाङ्गल्यवर्द्धनम्॥16॥

विद्याविनयसत्सौख्यं महासिद्धिकरं परम्।
इदं ब्रह्मास्त्रविद्यायाः पञ्जरं साधु गोपितम्॥17॥

पठेत् स्मरेद् ध्यानसंस्थः स जीयान्मरणं नरः।
यः पञ्जरं प्रविश्यैवं मन्त्रं जपति वै भुवि ॥18॥

कौलको व कौशिको वा व्यासवद् विचरेद् भुवि।
चन्द्रसूर्यप्रभूर्भूत्वा वसेत् कल्पायुतं दिवि ॥19॥

सूत उवाच -

इति कथितमशेषं श्रेयसामादिबीजं,
भवशतदुरितघ्नं ध्वस्तमोहान्धकारम् ।
स्मरणमतिशयेन प्रातरेवात्र मर्त्यो,
यदि विशति सदा यः पञ्जरं पण्डितः स्यात् ॥20॥

"इति श्रीबगला परमरहस्याति रहस्ये श्री पीताम्बरायाः पञ्जरं स्तोत्रम्"

विशेष :- इस पञ्चर स्तोत्र के पाठ करने के बाद पाठक को निम्नलिखित मन्त्र का जाप अवश्य करना चाहिए।

"ॐ क्षीं नमो भगवते पक्षिराजायअभिचारध्वंसकाय हुँ फट् स्वाहा"

॥ अथ श्रीपीताम्बरारत्नावलीस्तोत्रम् ॥

॥ श्री गणेशाय नमः॥ ॥ श्रीपीताम्बरायै नमः॥

ओङ्कारद्वयसम्पुटान्तरपुटं मायास्थिराद्वन्द्वितं,
तन्मध्ये बगलामुखीति विमलं सम्बोधनं सर्व च ।
दुष्टानामथ वाचमाशु च-मुखं संस्तम्भयेत्यक्षरं,
जिह्वां कीलय कीलयेति च लिखेद् बुद्धिं तथा नाशय ॥1॥

ब्रह्मास्त्रं सकलार्थसिद्धिजनकं षट्त्रिंशदवर्णात्मकं -
प्रोक्तं पद्मभुवा हिताय जगतां यन्नारदाग्रे पुरा ।
जीवन्मुक्तपदे विभान्ति सुधियो येषां मुखे भासते,
निर्द्वन्द्वामृतसागरेन्दुकिरणाहाराश्चकोरास्तु ते ॥2॥

ओमित्यादिस्वरूपं जपति तव शिवे शब्दतन्मात्रगर्भा-
वाचो यस्मात् परार्थप्रकटितपटवो वर्णरूपा निरीयुः ।
ब्रह्माद्यैः पञ्चतत्वैः परिवृतमनघं चित्प्रबोधाधिगम्यं,
दुर्ज्ञेयं योगयुक्तैः कथमपि मनसा योगिभिर्गृह्यमाणम् ॥3॥

ह्रीं बीजं 'हृदि यस्य' भाति विमलं लक्ष्मीः स्थिरा तद्गृहे,
धैर्यं तस्य कलेवरेऽपि विशते दीर्घायुषो भूतले ।
कल्पान्तेष्वपि वृद्धिमेति विमला तद्वंशवल्ली परा,
शौर्यं स्थैर्यमुपैति तस्य पुरतस्त्रस्यन्ति वादीश्वराः ॥4॥

बद्धुं वारिधिमुद्यतो जनकजानाथोऽपि पीताम्बरे !
त्वां ध्यात्वाऽर्णवशोषणे कृतमतिः सेतुं प्रचक्रेद्रुतम् ।
जित्वा रावणमुग्रशत्रुमबलान् वन्दीन् विमुच्याऽमरान्,
कीर्तिं लोकसुखोदयां व्यरचयत् कल्पस्थिराममम्बिके ॥5॥

गर्वी खर्वति रङ्कति क्षितिपतिर्मूकायते वाक्पति-
र्वह्नीः शीतति दुर्जनः सुजनते पुष्पायते वासुकिः।
श्रीनित्ये बगले तवाक्षरपदैर्यन्त्रीकृता यन्त्रिताः,
के के नो निपतन्ति स्रस्तमुकुटाश्चन्द्रार्कतुल्या अपि ॥6॥

लावण्यामृतपूरिते तव कृपापाङ्गे निमग्ना नरा,
ब्रह्मेशादिदिगीशवृन्दमपि ते जानन्ति गुञ्जोपमम् ।
येषां चेतसि संस्थिताऽसि बगले! ते विश्वरक्षाक्षमाः,
प्रारब्धं द्रढयन्ति सत्वरतरं विघ्नैरविघ्नीकृताः ॥7॥

मुख्यत्वं समुपैति संसदि तवाऽपाङ्गावलोके नरः,
किं तच्चित्रमहो स्वयं प्रभवते सृष्टिस्थितिध्वंसने।
यश्चित्ते तव 'भाति मामक इति' त्वद्दर्शनं यस्य वा,
तं सर्वा ह्यणिमादयोऽप्यतितरामाराधयन्ते ध्रुवम् ॥8॥

क्षीणानां बलदायिनीं जलनिधौ 'पोतस्थितौ नाविकां',
तत्त्राणं घनकुञ्जगह्वरगिरिव्याघ्रादिभीतेष्वपि ।
त्वां पीताम्बरधारिणीं 'परशिवां चन्द्रर्द्धचूडां गदा-
हस्तां वामकरे प्रतीपरसनामुन्मीलयन्तीं भजे ॥9॥

स्वेच्छं ये प्रणमन्ति पादयुगलं पीताम्बरे! तावकं,
ते वाञ्छाधिकमर्थमाप्य सकलां सिद्धिं भजन्ते पुनः।
यद्यत्कर्त्तुमुरीकरोति बगले! त्वत्साधकोऽत्राधुना,
तत्सञ्जातमिवेक्षते तव कृपाऽपाङ्गावलोके क्षणात् ॥10॥

वाणी सूक्तिसुधारसद्रवमयी सालङ्कृतिस्तन्मुखे,
शापानुग्रहकारिणी कविजनानन्दैकसंविर्द्धिनी ।
व्याकर्तुं क्षमते विशालमतिमांस्त्वत्सेवको वाङ्मयं,
किं चित्रं यदि सृष्टिमाशु रचते ब्रह्माण्डकोट्यायते ॥11॥

देवि ! त्वद्भक्तदृष्ट्या तुहिनगिरिमुखाः पर्वताः पांसुतुल्या
ज्वालामालाश्च चन्द्रामृतकरसदृशाः पुष्पतां यान्ति नागाः ।
मूकत्वं वाक्पतीन्द्राः सरसि समतुलामाश्रयन्ते समुद्रा
राजानो रङ्कभावं रणभूवि रिपवो विद्रवन्ते विशस्त्राः ॥12 ॥

लेख्यं तावकमन्त्रवीजममलं दुष्टौघसंस्तम्भन,
वश्याकर्षणमारणप्रमथनप्रक्षोभणोच्चाटने ।
व्यक्तं वज्रमिवापरं यदि मुखे जागर्त्ति तस्याग्रतः,
पादान्तः परिसञ्चरन्ति रिपवो ये सप्तद्वीपेश्वराः ॥13 ॥

नानारत्नविभूषितामलमणिद्वीपे सुधासागरे,
कल्पानोकहकाननान्तरगता या रत्नवेदी परा ।
तत्राकारित पञ्चप्रेतकमये सिंहासने संस्थितां,
ध्यायेऽहं करुणाकरां हरिहराराध्यामशेषार्थदाम् ॥14 ॥

वाग्देवी वदने वसत्यविरतं नेत्रे च लक्ष्मीः करे,
दानं दीनकृपालुता च हृदये वीरत्वमाजौ सदा ।
त्वद्भक्तस्य भवाब्धिपारतरणे तत्त्वोदयो जायते,
तेनेदं नलिनीदलोपरि जलाकारं जगद् भासते ॥15 ॥

चञ्चत्काञ्चनतुल्यपीतवसनां चन्द्रावतंसोज्ज्वलां,
केयूराङ्गदहारकुण्डलधरां भक्तोदयायोद्यताम् ।
त्वां ध्यायामि चतुर्भुजां त्रिनयनामुग्रारिजिह्वां करे,
कर्षन्तीमहमम्ब पाहि बगले ! त्राणं त्वमेवासि मे ॥16 ॥

मातस्ते महिमानमुग्रमधिकं प्रोक्तं स्वयं मानवै-
र्वाक्यं सन्द्रियते श्रमेण यदि वा शक्त्यां गुणाम्भोनिधेः ।
नो निश्शेषतया सुरैरविदितप्रान्तस्य पद्मालये,
तस्मात् सर्वगता त्वमेव सदसद्रुपा सदा गीयते ॥17 ॥

खड्गं तार्क्ष्यसमोद्यमं प्रकुरुते तार्क्ष्यं च खड्गाधिकं,
वान्त स्तम्भयते जलाग्निशमने याऽव्यक्तशक्तिः शिवे।
तद्बीजं बगलेति मेऽस्तु रसनालग्नं सदैवामलं,
यद्ब्रह्मादिसुदुर्लभ भुवि नरैः सत् प्राक्तनैर्लभ्यते ॥18॥

स्तम्भत्वं पवनोऽपि याति भवती भक्तस्य पीताम्बरे,
कि चित्रं यदि वारिधिः स्थलपदं मेरुस्तु माषोपमाम्।
कल्पानोकहकामधेनुप्रसुखै रत्नैरलिन्दस्थितै-
वञ्छार्थाधिकदानमाशु कुरुते दीनेष्वदीनेष्वपि ॥19॥

भाग्याद्यस्य मुखे विभाति विमला विद्या विशेषाधिका,
षट्त्रिशद्भिरथोदिता बहुगुणैर्बीजैस्तु सर्वार्थदा।
तं सर्वे प्रणमन्ति मानवममी सेन्द्राः सुरा भूसुराः,
क्रन्ताशेषमहोदयं स्वकलनाक्रान्तत्रिलोकालयम् ॥20॥

यत्किञ्चिद्भुवने विभाति विमलं रत्नं महानन्दनं,
यां यां वृत्तिरुदारतां जनयते यद्यत्परं सुन्दरम्।
यत्किञ्चिद्भुवनेऽथवा नु महता शब्देन वा कीर्त्यते,
तत्सर्वं तव रूपमेव बगले! संसारपारप्रदे ॥21॥

जाग्रत्पूर्णकृपामृतौघभरिते श्रीमत्कटाक्षेक्षणे,
सर्वार्थप्रतिपादकव्रतधरे ये ये निमग्ना नराः।
तेषां भाग्यमतीन्दिय निगदितुं ब्रह्मादयो न क्षमा
ये संङ्कल्पविकल्पमात्ररचनाः प्राणात्यये हेतवः ॥22॥

हस्ते संगृह्य चापं शरधरनिकरैर्यत्किरातं महाजौ,
पार्थो ब्रह्मास्त्रविद्याभ्यसनपटुमतिर्द्वन्द्वयुद्धे तुतोष।
तत्सर्वं दववृन्देरथा रिपुनिवहवाक्षित सिद्धलोक-
धैर्यं शौर्यं च सर्वं तव वरजनितं भाति पीताम्बरेऽत्र ॥23॥

पीतां पीतजटाधरां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीं,
हेमाभाङ्गरुचिं शशाङ्कमुकुटां सच्चम्पकस्रग्युताम्।
हस्तैर्मुद्गरवज्रवैरिरसनां संबिभ्रतीमादरात्,
दीप्ताङ्गी बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तये ॥24॥

कर्णालम्बितलोलकुण्डलयुगां श्वेतेन्दुमौलि करैः,
केयूराङ्गदपाशमुद्गरगदावज्रादिकान् बिभ्रतीम्।
देवीं पीतविभूषणामरिकुलध्वंसोद्यतां ये नरा ध्यायन्त्याशु
लभन्ति सिद्धिमतुलां ते बालिशाःस्युःकथम् ॥25॥

लब्धवा मातरशेषकान्तिभरितानन्दं कृपावीक्षणं,
वर्षीयानपि मोहितुं प्रभवति स्त्रीवृन्दमून्मीलितुम्।
किं तच्चित्रमनेकधा भ्रमयते दृष्ट्या त्रिलोकीमिमां,
सूर्येन्दुस्तनधारिणीमपि बलात् कन्दर्पदर्पाधिकः ॥26॥

यन्त्रं जैत्रमनेकदुःखशमनं पीताम्बरे ! तावक-
मोङ्कारद्वयसम्पुटेन पुटितं शिष्टैस्तथावेष्टितम्।
तद्बाह्ये स्थिरमाययाष्टपुटितं पाशङ्कुशाद्यावृतं,
येषां चेतसि 'भाग्यतो निवसते ते विश्वसर्गक्षमाः' ॥27॥

कर्पूरागुरुचन्दनैर्मृगमदैर्गोरोचनाकेशरैस्त्वत्पादाम्बुजमर्च -
यन्ति बगले ! ये प्रत्यहं मानवाः।
ते लब्ध्वा श्रियमद्भुतामपि चिरं भोगांश्च भुक्त्वाऽवनौ,
सायुज्यालयमाविशन्ति परमानन्दोऽस्ति यत्राधिकः ॥28॥

लब्ध्वा पादयुगे रतिं तव शिवे क्षुद्रोऽपि देवन्द्रता-
मासाद्यामरसुन्दरीभिरमलैर्भोगैर्दिवि क्रीडति।
ये हित्वा तव भक्तिमन्यभजनानन्दाश्चिरं ते नरा
भ्रष्टा धर्मपराङ्मुखाभ्रमधियो भारं वहन्ते भुवि ॥29॥

यामाराध्य हरो हरत्वमभजद् विष्णुस्तु विश्वात्मतां,
चक्रे सृष्टिमजोऽप्यवोचदखिलं वेदादिसद्वाङ्मयम्।
ध्यात्वा ध्वान्तमशेषमाशु हरते सूर्योऽपि पीताम्बरे।
तीव्रं तापमपाकरोति रजनीनाथोऽपि चूडाश्रितः ॥30॥

इत्थं ये बगलामुखी पदगतिं लब्ध्वा पठिष्यन्ति ते,
यन्त्रारूढमिबारिवृन्दमखिलं कर्त्तुं समर्थाः सदा॥31॥

ध्यात्वा त्वां बगले! पुरा गिरिसुता चक्रे शिवं स्वं वरं,
प्रोक्तं नार्पयितुं शिवेन गदिता संकल्पनागनौ तदा।
त्यक्ताग्निर्गलितााविलिं गिरिसुतात् त्यक्त्वा गलस्तन्मुखात्,
तस्मात् त्वं बगलामुखी निगदिता नित्या परा योगिनी॥32॥

नागेन्द्रैर्देवसिद्धैर्मुनवरनिवर्हैदानवै राक्षसेन्द्रै-
दिक्पालैदिवकरीन्द्रैर्दिनकर प्रमुखैः सद्ग्रहैस्मारकाद्यैः।
ब्रह्माद्यैः स्थूलसूक्ष्मैरविदितमुदिता त्वं परा चोत्मनी त्वं,
नित्या पीताम्बरा त्वं रिपुभयशमनी भक्तिचित्तासनस्था॥33॥

शम्भुर्यद्गुणगाननोद्यतमतिर्नाट्योत्सवैस्ताण्डवे,
चक्रे चन्द्रमयूखकम्पनकरां नीराजनां पादयोः।
हेमाम्भोजदलैर्जटाजलभरैरानन्दितैमौलिभिः,
पूजां प्रत्यहमातनोति नटयन् स्वैर्हस्ततालादिभिः॥34॥

यां दध्रे चतुराननोऽपि वदने चित्तारविन्दस्थितां,
यां वक्षःस्थलसंस्थितां हरिरजामालिङ्ग्य पीताम्बराम्।
यद्देहार्धमुरीचकार पुरजित् सौन्दर्यसाराधिकां,
षट्चक्राक्षररूपिणीं भज सखे! देवीं जगत्पालिकाम॥35॥

हस्ते भाति गदा सदार्त्तिशमनी रत्नावली त्वद्भुजे,
पादे नूपुरमीशमौलिमणिभिर्नीराजितं राजते।

ताटङ्कं श्रवणे कुचोपरि सदा कस्तूरिकालेपनं,
काश्मीरद्रवमङ्गरागमधिकां पीतच्छवि तन्वते ॥36॥

ॐकारद्वयसम्पुटेन पुटितां 'विद्यागमे संस्थितां',
षट्चक्राक्षरबीजसाररचितां षट्त्रिशदर्णात्मिकाम्।
ये जानन्ति जपन्ति सन्ततमभिध्यायन्ति गायन्ति वा,
ते वन्द्या विबुधैश्चरन्ति भुवने सिद्धार्चिताः सिद्धये ॥37॥

स्वाहाशक्तिरुपासने तव ऋषिः श्रीनारदो देवता,
नित्या श्रीबगलामुखी निगदिता छन्दो भवेत् त्रिष्टुभम्।
बीजं तु स्थिरमायया विरचित नानाविधस्तम्भने,
प्रोक्तं पद्मभुवाऽखिलाप्तिविनियोगोऽप्यच्युताकारता ॥38॥

हृद्य सर्वसुरेश्वरैश्च ऋषिभिर्दुष्प्राप्यमेवाद्भुतं,
स्तोत्रं गोप्यतमं स्वभाग्यवशतः प्राप्तं पठिष्यन्ति ये।
सूक्त्या देवगुरुं 'धनेन धनदं' जित्वा चिरञ्जीवितां,
षण्मासात् सुखसागरे शिवसमाक्रीडां करिष्यन्ति ते ॥39॥

देवी स्वप्नगता स्वयैव लिखितं मुह्यं ददावद्भुतं,
दिव्यास्त्रं पुरतः पठस्व विमलं सिन्दूरवर्णैः करैः।
रोमाञ्चाङ्कितहर्षमाप्य लुलितैरङ्गैः पठन्तं नर-
प्राप्तोऽहं परमादयप्रदमिदं ज्ञानं कवीन्द्रादिदम् ॥40॥

प्राप्ता श्रीबगलामुखीवदनतः स्वप्ने सुविद्या मया,
षट्त्रिंशद्भिरिमैः सुवर्णनिचयैः सद्बीजरत्नावली।
येषां कण्ठगता विभाति जगतीपीठे प्रयोगक्षमा,
वश्याकर्षणमाहमारणविधौ स्तम्भे तथोच्चाटने ॥41॥

चलत्कनकमुण्डलोल्लसितचारुगण्डस्थलाम्,
लसत्कनकचम्पकद्युतिविराजिचन्द्राननाम्।

गदाहतविपक्षकां कलितलोलजिह्वाञ्चलां,
स्मरामि बगलामुखीं विमुखवाङ्मुखस्तम्भिनीम् ॥42॥

।। श्रीपीताम्बरारत्नावलीस्तोत्रम् सम्पूर्णम् ।।

॥अथ बगलामुखीत्रैलोक्यविजयं नाम कवचम्॥

श्रीभैरव उवाच-

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि स्वरहस्यं च कामदम्।
श्रुत्वा गुप्ततमं गोप्यं कुरु गुप्तं सुरेश्वरि॥1॥

कवचं बगलामुख्याः सकलेष्टप्रदं कलौ।
यत्सर्वं च परं गुह्यं गुप्तं च शरजन्मनः॥2॥

त्रैलोक्यविजयं नाम कवचेशं मनोरमम्।
मन्त्रगर्भं मन्त्ररूप सर्वसिद्धिविनायकम्॥3॥

रहस्यं परमं ज्ञेय साक्षादमृतरूपिणम्।
ब्रह्मविद्यामयं वर्म दुर्लभं प्राणिनां कलौ॥4॥

पूर्णमेकोनपञ्चाशद्वर्णैमन्त्रयैर्युतम्।
त्वद्भक्त्या वच्मि देवेशि गोपनीयं स्वयोनिवत्॥5॥

श्रीदेव्युवाच -

भगवन् करुणासागर विश्वनाथ सुरेश्वर।
कर्मणा मनसा वाच्यं न वच्म्यग्निभुवोऽपि च॥6॥

भैरव उवाच -

त्रैलोक्यविजयाख्यस्य कवचस्यास्य पार्वति।
मन्त्रगर्भस्य मु(सू?) क्तस्य ऋषिर्देवस्तु भैरवः॥7॥

उष्णिक छन्दः समाख्यातं देवी क्लीं (च?) बगलामुखी।
बीजं क्लीं ओं च शक्तिः स्यात् स्वाहा कीलकमुच्यते॥8॥

विनियोगः समाख्यातस्त्रिवर्गफलसाधने ।
देवी ध्यात्वा पठेद्वर्म मन्त्रगर्भ सुरेश्वरि ॥9॥

विना ध्यानेन नो सिद्धिः सत्यं जानीहि पार्वति ।
चन्द्रोद्भासितपूर्द्धजां रिपुरसां मुण्डाक्षमालाकरां,
बालां पीतस्रगुज्वलां मधुमदारक्तां जटाजूटिनीम्।
शत्रुस्तम्भनकारिणीं शशिमुखीं पीताम्बरोद्भासितां,
प्रेतस्थां बगलामुखीं भगवतीं कारुण्यरूपां भजे ॥10॥

ॐ क्लीं मम शिरसि पातु देवी ह्लीं बगलामुखी।
ॐ क्लीं पातु मे भाले देवी स्तम्भनकारिणी ॥11॥

ॐ अँ ईं हं भ्रुवौ पातु बगला क्लेशहारिणी।
ॐ हं क्षं पातु मे नेत्रे नारसिंही शुभङ्करी ॥12॥

ॐ ह्रीं श्रीं पातु मे जङ्घे अं आं इं भुवनेश्वरी।
ॐ क्लीं सः मे श्रुतीं पातु ईं उं ऊं ॠं मुखेश्वरी ॥13॥

ॐ ह्रीं क्रीं ह्रीं सदाव्यान्मे नासां ॠं लृं सरस्वती।
ॐ ह्रीं ह्रां मे मुखं पातु लृं एं ऐं छिन्नमस्तका ॥14॥

ॐ श्रीं मे अधरौ पातु ओं औ दक्षिणकालिका ।
ॐ ह्रीं हूं मे दन्तान् पातु अं अः मे भद्रकालिका ॥15॥

ॐ क्रीं श्रीं रसनां पातु कं खं गं घं चरात्मिका।
ॐ ऐं सौः मे हनौ पातु ङं चं छं जं च जानकी ॥16॥

ॐ श्रीं ग्रीं (क्लीं) मे गलं पातुं झं ञं टं ठं गणेश्वरी।
ॐ ह्रीं स्कन्धौ सदाव्यान्मे डं ढं णं चैव तोतला ॥17॥

ॐ ह्रीं मे भुजौ पातु तं थं दं वरवर्णिनी ।
ॐ क्लीं सौः मे स्तनौ पातु धं नं पं परमेश्वरी ॥18॥

ॐ जूं क्रों मे रक्ष वक्षः फं बं भं भगवासिनी।
ॐ क्रौं ह्लां पातु मे कुक्षि मं यं रं चक्रिवल्लभा ॥19॥

ॐ श्रीं ह्रूं पातु मे पार्श्वौ लं वं लम्बोदरप्रसूः।
ॐ क्रों ह्रूं पातु मे नाभि शं षं षणमुखपालिनी ॥20॥

ॐ क्रौं सौः पातु मे पृष्ठं सं हं हाटकरूपिणी।
ॐ क्लीं ऐं पातु मे शिश्नं पङ्क क्षं हं तत्वरूपिणी ॥21॥

ॐ क्लीं ह्रूं मे कटि पातु पञ्चाशद्वर्णमातृका।
ॐ ऐं क्लीं पातु मे गुह्यं अं आं कं गुह्यकेश्वरी ॥22॥

ॐ श्रीं ऊरू सदाव्यान्मे इं ईं खं रंगगामिनी।
ॐ जूं सः पातु मे जानू उं ऊं गं गणवल्लभा ॥23॥

ॐ श्रीं ह्रीं पातु मे जङ्घे ऋं ॠं घं च महारिणी।
ॐ श्री सः पातु मे गुल्फौ लृं लॄं ङं चं च कालिका ॥24॥

ॐ ऐं ह्रीं पातु मे सन्धी एं ऐं छं जं जगत् प्रिया।
ॐ श्रीं क्लीं पातु मे पादौ ओं औं झं ञ भगादरी ॥25॥

ॐ ह्रीं मे सर्ववपुः पातु अं अः ह्रीं त्रिपुरेश्वरी।
ॐ श्रीं पूर्वे सदाव्यान्मां अं आँ टं ठं शिखामुखी ॥26॥

ॐ ह्रीं याम्यां सदाव्यान्मां इ डं ढं णं च तारिणी।
ॐ ह्रीं मां पातु वारुण्यां ईं तं थं दं च खेश्वरी ॥27॥

ॐ यं मां पातु कौवेर्यां उं धं नं पं पिलंपिला।
ॐ श्री पातु चैशान्यां ऊं फं बं वैन्दवेश्वरी ॥28॥

ॐ श्रीं मां पातु चाग्नेय्यां ऋं भं मं यं च योगिनी।
ॐ ऐं मां पातु नैर्ऋत्यां ॠं रं राजेश्वरी सदा ॥29॥

ॐ श्रीं मां पातु वायव्यां लृं लं लम्बितकेशिनी।
ॐ प्रभाते च मां पातु लृ वं वागीश्वरी सदा ॥30॥

ॐ मध्याह्ने च मां पातु एं शं शङ्करवल्लभा।
ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं पातु मां सायं ऐं षं शाबरी सदा ॥31॥

ह्रीं निशादौ च मां पातु ओं सं सागरशायिनी।
क्लीं निशीथे च मां पातु औं हं हरिहरेश्वरी ॥32॥

क्लीं ब्राह्मे मां मुहूर्त्तेऽव्यादं पङ्क त्रिपुरसुन्दरी।
विस्मारितं च यत्स्थानं वर्जितं कवचेन तु ॥33॥

ह्रीं तन्मे सकलं पातु अः क्षः क्लीं बगलामुखी।
इतीदं कवचं गुह्यं मन्त्राक्षरमयं परम् ॥34॥

त्रैलोक्यविजयं नाम सर्ववर्णमयं स्मृतम्।
अप्रकाश्यमदातव्यं न श्रोतव्यमवाचकम् ॥35॥

दुर्जनायाकुलीनाय दीक्षाहीनायं पार्वति।
न दातव्यं न दातव्यमित्याज्ञा परमेश्वरि ॥36॥

अदीक्षित उपाध्यायविहीनः शक्तिभक्तिमान्।
कवचस्यास्य पठनात् साधको दीक्षितो भवेत ॥37॥

कवचेशमिदं गोप्यं सिद्धविद्यामयं परम्।
ब्रह्मविद्यामयमिदं यथाभीष्टफलप्रदम ॥38॥

न कस्य कथितं चैतत् त्रैलोक्यविजयेश्वरी।
यस्य स्मरणमात्रेण देवी सद्यो वशीभवेत् ॥39॥

पठनाद्धारणाच्चास्य कवचेशस्य साधकः।
कलौ विचरते वीरो यथा ह्रीं बगलामुखी ॥40॥

इमं मन्त्रं स्मरन्मन्त्री संग्रामं प्रविशद् यथा।
त्रिः पठेत् कवचेशन्तु युयुत्सुः साधकोत्तमः ॥41॥

शत्रून् कालसमानान् तु जित्वा स्वगृहमेष्यति।
मूर्ध्नि धृत्वा तु कवचं मन्त्रगर्भं तु साधकः ॥42॥

ब्रह्माद्यानमरान् सर्वान् सहसा वशमानयेत्।
धृत्वा गले तु कवचं साधकस्य महेश्वरि ॥43॥

वशमायान्ति सहसा रम्भाद्यप्सरसां गणाः।
उत्पातेषु च घोरेषु भयेषु विविधेषु च ॥44॥

रोगेषु कवचेशं च मन्त्रगर्भं पठेन्नरः।
कर्मणा मनसा वाचा तद्भयं शान्तिमेष्यति ॥45॥

श्रीदेव्या बगलामुख्याः कवचेशं मया स्मृतम्।
त्रैलोक्यविजयं नाम पुत्रपौत्रधनप्रदम् ॥46॥

ऋणहर्त्तारमेतत्स्याल्लक्ष्मीभोगविवर्द्धनम्।
वन्ध्या धारयते कुक्षौ पुत्रं पश्यति नान्यथा ॥47॥

मृतवत्सा च विभृत्याथ कवचं बगले सदा।
दीर्घायुर्व्याधिहीनस्तु तत्पुत्रस्तु भविष्यति ॥48॥

इतीदं बगलामुख्याः कवचेशं सुदुर्लभम्।
त्रैलाक्यविजयं नाम न देयं यस्य कस्यचित ॥49॥

अकुलीनाय मूढाय भक्तिहीनाय देहिने।
लोभयुक्ताय देवेशि न दातव्यं कदाचन ॥50॥

शिष्याय भक्तियुक्ताय गुरुभक्तिपराय च।
लोभदन्तविहीनाय कवचेशं प्रदीयताम ॥51॥

अभक्तेभ्यो विपुत्रेभ्यो दत्वा कुष्ठी भवेन्नरः।
फलं गृहं न चाप्नोति परं च नरकं व्रजेत्॥52॥

दीपमुज्ज्वाल्य मूलेन पठेद्धर्मेदमुत्तमम्।
प्राप्ते कन्यार्कवारे च राजा तद्गृहमेष्यति॥53॥

मण्डलेशो महेशानि सत्यं सत्यं न संशयः।
इदं तु कवचेशं तु मया दिव्यं नगात्मने॥54॥

पूजनात् पठनाच्चास्य चतुर्वर्गफलप्रदम्।
गोप्यं गुप्ततरं देवि गोपनीयं स्वयोनिवत ॥55॥

इति श्रीबगलामुखीत्रैलोक्यविजयं नाम कवचम्

विशेष :- इस कवच का पाठ न्यायालय, शासन, प्रशासनिक, पुलिस बन्धन, कारागार से मुक्ति आदि के लिए करवाना चाहिए।

नानाविध साँख्यायन बगलामन्त्र :

1. एकाक्षरीबगलामन्त्र-ह्लीं ।

ॐ अस्य श्रीबगलामुख्येकाक्षरीमहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्रीछन्दः श्रीबगलामुखी देवता लँ बीजं, ह्लीं शक्ति, ईं कीलकं श्रीबगलामुखीदेवताम्बा प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः - ब्रह्मर्षये नमः शिरसि, गायत्रीछन्दसे नमो मुखे, श्रीबगलामुखीदेवतायै नमो हृदि, लँ बीजाय नमो गुह्ये, ह्लीं शक्तये नमः पादयोः, रँ कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः - ॐ ह्लाँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ह्लीं तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ ह्लूँ मध्यमाभ्यां वषट्, ॐ ह्लैं अनामिकाभ्यां हुम्, ॐ ह्लौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, ॐ ह्लः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

हृदयादिन्यासः - ॐ ह्लाँ हृदयाय नमः, ॐ ह्लीं शिरसे स्वाहा, ॐ ह्लूं शिखायै वषट्, ॐ ह्लैं कवचाय हुम्, ॐ ह्लौं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ह्लः अस्त्राय फट्।

ध्यानम् -

वादी मूकति रङ्कति क्षितिपतिर्वैश्वानरः शीतति,
क्रोधी शान्तति दुर्जनः सुजनति क्षिप्रानुगः खञ्जति।
गर्वी खर्वति सर्वविच्च जडति त्वद्यन्त्रिणा यन्त्रितः,
श्रीनित्ये बगलामुखि प्रतिदिनं कल्याणि तुभ्यं नमः॥

2. श्रीबगलाषट्त्रिशदक्षरीविद्यामन्त्रः

ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लौं ॐ स्वाहा। ॐ अस्य श्रीबगलामुखीषट्त्रिंशदक्षरीविद्यामहामन्त्रस्य श्रीनारदऋषिः, बृहतीछन्दः, श्रीबगलामुखीदेवता, लँ बीजं, हँ शक्तिः, ईं कीलकं, श्रीबगलामुखीदेवताप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः - श्रीनारदर्षये नमः शिरसि, बृहतीछन्दसे नमो मुखे, श्रीबगलामुखीदेवतायै नमो हृदये, लँ बीजाय नमो गुह्ये, हँ शक्तये नमः पादयोः, ईं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः - ॐ ह्लीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ह्लीं बगलामुखि तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ ह्लीं सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां वषट् ॐ ह्लीं वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां हुँ, ॐ ह्लीं जिह्वां कीलय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, ॐ ह्लीं बुद्धिं विनाशय ह्ली ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

हृदयादिन्यासः - ॐ ह्लीं हृदयाय नमः, ॐ ह्लीं बगलामुखि शिरसे स्वाहा, ॐ ह्लीं सर्वदुष्टानां शिखायै वषट्, ॐ ह्लीं वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय हुं, ॐ ह्लीं जिह्वां कीलय नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ह्लीं बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्।

ध्यानम् -

चतुर्भुजां त्रिनयनां कमलासनसंस्थिताम्।
त्रिशूल पानपात्रं च गदां जिह्वां च बिभ्रतीम्॥

बिम्बोष्ठीं कम्बुकण्ठीं च समपीनपयोधराम्।
पीताम्बरां मदाघूर्णां ध्यायेद् ब्रह्मास्त्रदेवताम्॥

3. श्रीबगलामुखीगायत्रीमन्त्र

ॐ ह्लीं ब्रह्मास्त्राय विद्महे स्तम्भनबाणाय धीमहि तन्नो बगला प्रचोदयात्।

ॐ अस्य श्रीबगलागायत्रीमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्रीछन्दः, ब्रह्मास्त्र बगलादेवता, ॐ बीज, ह्लीं शक्तिः, विद्महे कीलकं, श्रीबगलामुखीदेवताप्रसाद सिद्धये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः - श्रीब्रह्मर्षये नमः शिरसि, गायत्रीछन्दसे नमो मुखे, श्रीब्रह्मास्त्रबगलामुखीदेवतायै नमो हृदये, ॐ बीजाय नमो गुह्ये, ह्लीं शक्तये नमः पादयोः, विद्महे कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ।

करन्यासः - ॐ ह्लीं ब्रह्मास्त्राय विद्महे अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, स्तम्भन

बाणायधीमहि तर्जनीभ्यां स्वाहा, तन्नो बगला प्रचोदयात् मध्यमाभ्यां वषट्, ॐ ह्लीं ब्रह्मास्त्राय विद्महे अनामिकाभ्यां हुम्, स्तम्भनबाणाय धीमहि कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, तन्नो बगला प्रचोदयात् करतलकर- पृष्ठाभ्यां फट्।

हृदयादिन्यासः - ॐ ह्लीं ब्रह्मास्त्राय विद्महे हृदयाय नमः, स्तम्भन बाणाय धीमहि शिरसे स्वाहा, तन्नो बगला प्रचोदयात् शिखायै वषट्, ॐ ह्लीं ब्रह्मास्त्राय विद्महे कवचाय हुम, स्तम्भनबाणाय धीमहि नेत्रत्रयाय वौषट्, तन्नो बगला प्रचोदयात् अस्त्राय फट्।

4. पञ्चपञ्चाशदक्षरो बगलामुखीपञ्चास्त्रमन्त्रः

ॐ ह्लीं हूं ग्लौं बगलामुखि ह्लाँ ह्लीं ह्लूँ सर्वदुष्टानां ह्लैं ह्लौं ह्लः वाचं मुखं पदं स्तम्भय स्तम्भय ह्लः ह्लौं ह्लैं जिह्वां कीलय ह्लूँ ह्लीं ह्लाँ बुद्धिं विनाशय ग्लौं हूँ ह्लीं ॐ स्वाहा।

ॐ अस्य श्रीबगलामुखीपञ्चास्त्रमहामन्त्रस्य वशिष्ठऋषिः, पङ्क्तिश्छन्दः, रणास्तम्भनकारिणी बगलामुखी देवता, लँ बीजं, ह्लीं शक्तिः, रं कीलकं श्रीबगलामुखीदेवताम्बाप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः - श्रीनारदऋषये नमः शिरसि, श्रीबगलामुखी देवतायै नमो हृदये, लँ बीजाय नमो गुह्ये, हँ शक्तये नमः पादयोः ईं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः - ॐ ह्लीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ह्लीं बगलामुखी तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ ह्लीं सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां वषट्, ॐ ह्लीं वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां हुम्, ॐ ह्लीं जिह्वां कीलय कनिष्ठकाभ्यां वौषट्, ॐ ह्लीं बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा करतलकर- पृष्ठाभ्यां फट्। एवं हृदयादिन्यासः।

ध्यानम् -

पीताम्बरधरां देवीं द्विसहस्त्रभुजान्विताम्।
सान्द्रजिह्वां गदां चास्त्रं धारयन्तीं शिवां भजेत्॥

5. अष्टपञ्चाशदक्षर उल्कामुख्यस्त्रमन्त्रः

ॐ ह्लीं ग्लौं बगलामुखी ॐ ह्लीं ग्लौं सर्वदुष्टानां ॐ ह्लीं ग्लौं वाचं मुखं पदं ॐ ह्लीं ग्लौं स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्लीं ग्लौं जिह्वां कीलय ॐ ह्लीं ग्लौं बुद्धिं विनाशय ॐ ह्लीं ग्लौं ह्लीं ॐ स्वाहा।

" ॐ ह्लीं हूँ ग्लौं बगलामुखी ह्लाँ ह्लीं ह्लूँ सर्वदुष्टानां ह्लाँ ह्लीं ह्लः वाचं मुखं पदं स्तम्भय ह्लः ह्लें ह्लें जिह्वां कीलय ह्लाँ ह्लौं ह्लों बुद्धि विनाशय ह्लाँ ह्लीं ह्लूँ ग्लौं हूँ ह्लीं ॐ स्वाहा" इत्येदंविधो मन्त्रोऽत्यन्यत्र दृश्यते।

" ॐ ह्लीं ग्लौं बगलामुखि सर्वदुष्टानां ॐ ह्लीं ग्लौं वाचं मुखं पदं ॐ ह्लीं ग्लौं स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्लीं ग्लौं जिह्वां कीलयं कीलय ॐ ह्लीं ग्लौं बुद्धिं नाशय नाशय ॐ ह्लीं ग्लौं स्वाहा" इत्यपि मन्त्रभेदो दृश्यतेऽन्यत्र।

ॐ अस्य श्रीउल्कामुख्यस्त्रमन्त्रस्य श्रीअग्निवराह ऋषिः, ककुप् छन्दः, श्रीउल्कामुखी देवता, ह्लीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, ग्लौं कीलकं, जगत्स्तम्भनकारिणी श्रीउल्कामुखीदेवताम्बाप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः - श्रीवराहर्षये नमः शिरसि, अनुष्टुप्छन्दसे नमो मुखे, श्रीउल्कामुखीदेवतायै नमो हृदि, ह्लीं बीजाय नमो गुह्ये, स्वाहाशक्तये नमः पादयोः, ग्लौं कीलकाय नमः सर्वाङ्गें।

करन्यासः - ॐ ह्लीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ह्लीं बगलामुखि तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ ह्लीं सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां वषट् ॐ ह्लीं वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां हुं, ॐ ह्लीं जिह्वां कीलय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, ॐ ह्लीं बुद्धिं विनाशय ह्ली ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

हृदयादिन्यासः - ॐ ह्लीं हृदयाय नमः, ॐ ह्लीं बगलामुखि शिरसे स्वाहा, ॐ ह्लीं सर्वदुष्टानां शिखायै वषट्, ॐ ह्लीं वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय हुं, ॐ ह्लीं जिह्वां कीलय नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ह्लीं बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्।

ध्यानम् -

विलयानलसंकाशां वीरां वेदसमन्विताम्।
विराणमयीं महादेवीं स्तम्भनार्थं भजाम्यहम्॥

6. षष्टिवर्णात्मकः श्रीजातवेदमुख्यस्त्रमन्त्रः

ॐ ह्लीं ह्सौं ह्लीं ॐ बगलामुखि सर्वदुष्टानां ॐ ह्लीं ह्सौं ह्लीं ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्लीं ह्सौं ह्लीं ॐ जिह्वां कीलय ॐ ह्लीं ह्सौं ह्लीं ॐ बुद्धिं नाशय नाशय ॐ ह्लीं ह्सौं ॐ स्वाहा।

ॐ अस्य श्रीजातवेदमुख्यस्त्रमन्त्रस्य श्रीकालाग्निरुद्र ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, श्रीजातवेदमुखी देवता, ॐ बीजं, ह्लीं शक्तिः, हँ कीलकम्, मम श्रीजातवेदमुखीदेवताम्बाप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः - श्रीकालाग्निरुद्रर्षये नमः शिरसि, पंक्तिच्छन्दसे नमो मुखे, श्रीजातवेदमुखीदेवतायै नमो हृदये, ॐ बीजाय नमो गुह्ये, ह्लीं शक्तये नमः पादयोः, हँ कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः - ॐ ह्लीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ह्लीं बगलामुखि तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ ह्लीं सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां वषट् ॐ ह्लीं वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां हुँ, ॐ ह्लीं जिह्वां कीलय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, ॐ ह्लीं बुद्धिं विनाशय ह्ली ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

हृदयादिन्यासः - ॐ ह्लीं हृदयाय नमः, ॐ ह्लीं बगलामुखि शिरसे स्वाहा, ॐ ह्लीं सर्वदुष्टानां शिखायै वषट्, ॐ ह्लीं वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय हुँ, ॐ ह्लीं जिह्वां कीलय नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ह्लीं बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्।

ध्यानम् -

जातवेदमुखीं देवीं देवतां प्राणरूपिणीम्।
भजेऽहं स्तम्भनार्थं च स्तंभिनीं विश्वरूपिणीम्॥

मन्त्रोऽयं सूत्रानुसारेण तु द्वाषष्टिवर्णात्मको जायते किन्त्वन्यत्र निम्नोद्धतरीत्या दृश्यते षष्टिवर्णाः - '' ॐ ह्लीं हौं ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां ॐ ह्लीं हौं ह्ली ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्लीं हौं ह्ली ॐ जिह्वां कीलय ॐ ह्लीं हौं ॐ बुद्धिं नाशय नाशय ॐ ह्लीं हौं ह्ली ॐ स्वाहा'' ।

---

7. विंशोत्तरशतवर्णात्मको ज्वालामुख्यास्त्रमन्त्रः

ॐ ह्लीं राँ रीं रूँ रैं रौं प्रस्फुर प्रस्फुर बगलामुखि ॐ ह्लीं राँ रीं रूँ रैं रौं प्रस्फुर प्रस्फुर सर्वदुष्टानां ॐ ह्लीं राँ रीं रूँ रैं रौं प्रस्फुर प्रस्फुर वाचं मुखं पदं स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्लीं राँ रीं रूँ रैं रौं प्रस्फुर प्रस्फुर जिह्वां कीलय कीलय ॐ ह्लीं राँ रीं रूँ रैं रौं प्रस्फुर प्रस्फुर बुद्धिं विनाशय विनाशय ॐ ह्लीं राँ रीं रूँ रैं रौं प्रस्फुर प्रस्फुर स्वाहा।

ॐ अस्य श्रीज्वालामुख्यस्त्रमन्त्रस्य श्रीअत्रि ऋषिर्गायत्री छन्दः, श्रीज्वालामुखी देवता, ॐ बीजं ह्लीं शक्तिः, हँ कीलक श्रीज्वाला- मुखीदेवताम्बाप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः - श्री अत्रिऋषये नमः शिरसि, गायत्रीछन्दसे नमो मुखे, श्रीज्वालामुखीदेवतायै नमो हृदि, ॐ बीजय नमो गुह्ये, ह्लीं शक्तये नमः पादयोः, हँ कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः - ॐ ह्लीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ह्लीं बगलामुखि तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ ह्लीं सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां वषट् ॐ ह्लीं वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां हुँ, ॐ ह्लीं जिह्वां कीलय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, ॐ ह्लीं बुद्धिं विनाशय ह्ली ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

हृदयादिन्यासः - ॐ ह्लीं हृदयाय नमः, ॐ ह्लीं बगलामुखि शिरसे स्वाहा, ॐ ह्लीं सर्वदुष्टानां शिखायै वषट्, ॐ ह्लीं वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय हुँ, ॐ ह्लीं जिह्वां कीलय नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ह्लीं बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्।

ध्यानम् -

ज्वलत्पद्मासनायुक्तां कालानलसमप्रभाम्।
चिन्मयीं स्तम्भिनीं देवीं भजेऽहं विधिपूर्वकम्॥

8.षडुत्तरशताधिकवर्णात्मकः श्रीबृहद्भानुमुख्यस्त्रमन्त्रः

ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूँ ह्लैं ह्लौं ह्लः ह्लां ह्लीं ह्लूँ ह्लैं ह्लौं ह्लः ॐ बगलामुखी ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूँ ह्लैं ह्लौं ह्लः ह्लां ह्लीं ह्लूँ ह्लैं ह्लौं ह्लः ॐ सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय

पुस्तकालय
परिग्रहण सं० 23727
दि० 16.06.06

स्तम्भय ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूँ ह्लैं ह्लौं ह्लः ह्लां ह्लीं ह्लूँ ह्लैं ह्लौं ह्लः ॐ जिह्वां कीलय ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूँ ह्लैं ह्लौं ह्लः ह्लां ह्लीं ह्लूँ ह्लैं ह्लौं ह्लः ॐ बुद्धि नाशय ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूँ ह्लैं ह्लौं ह्लः ह्लां ह्लीं ह्लूँ ह्लैं ह्लौं ह्लः ॐ ह्लीं ॐ स्वाहा।

अन्यत्रैष मन्त्रश्चतुरुत्तरशतवर्णात्मकोऽपि दृश्यते यथा - ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूँ ह्लैं ह्लौं ह्लः ह्लां ह्लीं ह्लूँ ह्लैं ह्लौं ह्लः ॐ बगलामुखी ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूँ ह्लैं ह्लौं ह्लः ह्लां ह्लीं ह्लूँ ह्लैं ह्लौं ह्लः ॐ सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूँ ह्लैं ह्लौं ह्लः ह्लां ह्लीं ह्लूँ ह्लैं ह्लौं ह्लः ॐ जिह्वां कीलय ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूँ ह्लैं ह्लौं ह्लः ह्लां ह्लीं ह्लूँ ह्लैं ह्लौं ह्लः ॐ बुद्धि नाशय ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूँ ह्लैं ह्लौं ह्लः ह्लां ह्लीं ह्लूँ ह्लैं ह्लौं ह्लः ॐ ह्लीं ॐ स्वाहा॥

ॐ अस्य श्रीबृहद्भानुमुख्यस्त्रमन्त्रस्य श्रीसविता ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीबृहद्भानुमुखी देवता, ह्लीं बीजं , ह्लीं शक्तिः, ॐ कीलकं, श्रीबृहद्भानुमुखीदेवताम्बा प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः - श्री सवितृषये नमः शिरसि, गायत्रीछन्दसे नमो मुखे श्रीबृहद्भानुमुखीदेवतायै नमो हृदये, ह्लीं बीजाय नमो गुह्ये, ह्लीं शक्तये नमः पादयोः, ॐ कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः - ॐ ह्लीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ह्लीं बगलामुखि तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ ह्लीं सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां वषट् ॐ ह्लीं वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां हुँ, ॐ ह्लीं जिह्वां कीलय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, ॐ ह्लीं बुद्धिं विनाशय ह्ली ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

हृदयादिन्यासः - ॐ ह्लीं हृदयाय नमः, ॐ ह्लीं बगलामुखि शिरसे स्वाहा, ॐ ह्लीं सर्वदुष्टानां शिखायै वषट्, ॐ ह्लीं वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय हुँ, ॐ ह्लीं जिह्वां कीलय नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ह्लीं बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्।

ध्यानम् -

कालानलनिभां देवीं ज्वलत्पुञ्जशिरारुहाम्।
कोटिबाहुसमायुक्तां वैरिजिह्वासमन्विताम्॥1॥

स्तम्भनास्त्रमयीं देवीं दृढपीनपयोधराम्।
मदिरामदसंयुक्तां बृहद्भानुमुखीं भजे ॥2॥

9. श्रीबगलामुखीशताक्षरीमहामन्त्रः

ह्लीं ऐं ह्लीं ˝ क्लीं श्रीं ग्लौं ह्लीं बगलामुखि स्फुर स्फुर सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय स्तम्भय प्रस्फुर प्रस्फुर विकटाङ्गि घोररूपि जिह्वां कीलय महाभ्रमकरि बुद्धिं नाशय विराण्मयि सर्वप्रज्ञामयि प्रज्ञां नाशय उन्मादीकुरु कुरु मनोपहारिणि ह्लीं ग्लौं श्रीं क्लीं ह्लीं ऐं ह्लीं स्वाहा॥

ॐ अस्य श्रीबगलामुखीशताक्षरीमहामन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, गायत्रीछन्दः, जगत्स्तम्भनकारिणी श्रीबगलामुखी देवता, ह्लीं बीजं, ह्लीं शक्तिः, ऐं कीलकं, जगत्स्तम्भनकारिणी श्रीबगलामुखी- देवताम्बाप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

करन्यासः - ॐ ह्लीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ह्लीं बगलामुखि तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ ह्लीं सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां वषट् ॐ ह्लीं वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां हुँ, ॐ ह्लीं जिह्वां कीलय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, ॐ ह्लीं बुद्धिं विनाशय ह्ली ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

हृदयादिन्यासः - ॐ ह्लीं हृदयाय नमः, ॐ ह्लीं बगलामुखि शिरसे स्वाहा, ॐ ह्लीं सर्वदुष्टानां शिखायै वषट्, ॐ ह्लीं वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय हुँ, ॐ ह्लीं जिह्वां कीलय नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ह्लीं बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्।

ध्यानम् -

पीताम्बरधरां सौम्यां पीतभूषणभूषिताम्।
स्वर्णसिंहासनस्थां च मूले कल्पतरोरधः॥1॥

वैरिजिह्वाभेदनार्थं छुरिकां बिभ्रतीं शिवाम्।
पानपात्रं गदां पाशं धारयन्तीं भजाम्यहम्॥2॥

10. अष्टाविंशत्युत्तरैकशताक्षरः श्रीबगलामुखीपरविद्याभेदनमन्त्रः

ॐ ह्लीं श्रीं ह्लीं 'ग्लौं ऐं क्लीं हुं क्षीं' बगलामुखि परप्रयोगं ग्रस ग्रस ॐ ह्लीं श्रीं ह्लीं ग्लौं ऐं क्लीं हुं क्षीं ब्रह्मास्त्ररूपिणि परविद्याग्रसिनि भक्षय भक्षय ॐ ह्लीं श्रीं ह्लीं ग्लौं ऐं क्लीं हुं क्षीं परप्रज्ञाहारिणि प्रज्ञां भ्रंशय भ्रंशय ॐ ह्लीं श्रीं ह्लीं ग्लौं ऐं क्लीं हुं क्षीं स्तम्भनास्त्ररूपिणि बुद्धिं नाशय नाशय पञ्चेन्द्रियज्ञानं भक्ष भक्ष ॐ ह्लीं श्रीं ह्लीं ग्लौं ऐं क्लीं हुं क्षीं बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ अस्य श्रीपरविद्याभेदिनीबगलामन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, गायत्रीछन्दः, परविद्याभक्षिणी श्रीबगलामुखी देवता, आँ बीजं, ह्रीं शक्तिः क्रों कीलकं, श्रीबगलादेवीप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः - श्रीब्रह्मर्षये नमः शिरसि, गायत्रीछन्दसे नमो मुखे, परविद्याभक्षिणीश्रीबगलामुखीदेवतायै नमो हृदये, आं बीजाय नमो गुह्ये, ह्रीं शक्तये नमः पादयोः, क्रों कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः - आँ ह्रीं क्रों अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, वद वद तर्जनीभ्यां स्वाहा, वाग्वादिनि मध्यमाभ्यां वषट्, स्वाहा अनामिकाभ्यां हुँ, ऐं क्लीं सौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, ह्रीँ करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

हृदयादिन्यासः - आँ ह्रीं क्रों हृदयाय नमः, वद वद शिरसे स्वाहा, वाग्वादिनि शिखायै वषट्, स्वाहा कवचाय हुँ, ऐं क्लीं सौं नेत्रत्रयाय वौषट्, ह्रीं अस्त्राय फट्।

ध्यानम् -

सर्वमन्त्रमयीं देवीं सर्वाकर्षणकारिणीम्।
सर्वविद्याभक्षिणीं च भजेऽहं विधिपूर्वकम्॥

11. त्रिचत्वारिंशदक्षरी बगलास्त्रमन्त्रः

ॐ ह्रीं हुँ ग्लौं ह्रीं बगलामुखि मम शत्रुन् ग्रस ग्रस खाहि खाहि भक्ष भक्ष शोणितं पिब पिब बगलामुखि ह्रीं ग्लौं हुँ 'फट स्वाहा'।

ॐ अस्य श्रीबगलास्त्रमन्त्रस्य श्रीदुर्वासा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, अस्त्रः रूपिणीश्रीबगलामुखी देवता, ग्लौं बीजं, ह्रीं शक्तिः, फट् कीलकं श्रीअस्त्ररूपिणीबगलाम्बाप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः - श्रीदुर्वाससे ऋषये नमः शिरसि, अनुष्टुप्छन्दसे नमो मुखे, अस्त्ररूपिण्यै श्रीबगलादेवतायै नमो हृदये, ग्लौं बीजाय नमो गुह्ये, ह्रीं शक्तये नमः पादयोः, फट् कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः - ॐ ह्रीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, बगलामुखि तर्जनीभ्यां स्वाहा, सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां वषट्, वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां हुँ, जिह्वां

कीलय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

हृदयादिन्यासः - ॐ ह्लीं हृदयाय नमः, बगलामुखि शिरसे स्वाहा, सर्वदुष्टानां शिखायै वषट्, वाचं मुखें पदं स्तम्भय कवचाय हुँ, जिह्वां कीलय नेत्रत्रयाय वौषट्, बुद्धिं विनाशय ह्लौं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्।

ध्यानम् -

चतुर्भुजां त्रिनयनां पीनोन्नतपयोधराम् ।
जिह्वां खड्गं पानपात्र 'गदां धारयन्तीं पराम्'॥1॥

पीताम्बरधरां देवीं पीतपुष्पैरलङ्कृताम् ।
बिम्बोष्ठीं चारुवदनां मदघूर्णितलोचनाम् ॥2॥

सर्वविद्याकर्षिणीं च सर्वप्रज्ञापहारिणीम् ।
भजेऽहं चास्त्रबगलां सर्वाकर्षणकर्मसु ॥3॥

12. श्रीबगलाचतुरक्षरीमन्त्रः

ॐ आँ ह्लीं क्रों । ॐ अस्यं श्रीबगलाचतुरक्षरीमन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, गायत्रीछन्दः, श्रीबगला देवता, ह्लीं बीजं, आँ शक्तिः, क्रों कीलकं श्रीबगलामुखीदेवताम्बाप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः - श्रीब्रह्मर्षये नमः शिरसि, गायत्रीछन्दसे नमो मुखे, श्रीबगलादेवतायै नमो हृदये, ह्लीं बीजाय नमो गुह्ये, आं शक्तये नमः पादयोः, क्रों कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः - ॐ ह्लां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ह्लीं तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ ह्लूँ मध्यमाभ्यां वषट्, ॐ ह्लैं अनामिकाभ्यां हुँ, ॐ ह्लौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, ॐ ह्लः अस्त्राय फट्।

('गदामस्त्रं च बिभ्रतीं' तथा च 'गदां धारयन्तीं शिवाम्' इति पाठभेदौ।)

हृदयादिन्यासः - ॐ ह्लां हृदयाय नमः, ॐ ह्लीं शिरसे स्वाहा, ॐ ह्लूं शिखायै वषट्, ॐ ह्लैं कवचाय हुँ, ॐ ह्लौं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ह्लः अस्त्राय फट्।

ध्यानम् -

कुटिलालकसंयुक्तां मदाघूर्णितलोचनाम्।
मदिरामोदवदनां प्रवालसदृशाधराम्॥1॥

सुवर्णशैलसुप्रख्यंकठिनस्तनमण्डलाम्।
दक्षिणावर्त्तसन्नाभिसूक्ष्ममध्यमसंयुताम् ॥2॥

रम्भोरुपादपद्मां तां पीतवस्त्रसमावृताम् ।

13. अशीत्यक्षरात्मकः श्रीबगलाहृदयमन्त्रः

ॐ आं ह्लीं क्रों ग्लौं हुं ऐं क्लीं श्रीं ह्लीं बगलामुखि आवेशय आवेशय आं ह्लीं क्रों ब्रह्मास्त्ररूपिणि एहि एहि आं ह्लीं क्रों मम हृदये आवाहय आवाहय सन्निधिं कुरु कुरु आं ह्लीं क्रों मम हृदये चिरं तिष्ठ तिष्ठ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा।

करन्यासः - ॐ ह्लीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ह्लीं बगलामुखि तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ ह्लीं सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां वषट् ॐ ह्लीं वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां हुँ, ॐ ह्लीं जिह्वां कीलय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, ॐ ह्लीं बुद्धिं विनाशय ह्ली ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

हृदयादिन्यासः - ॐ ह्लीं हृदयाय नमः, ॐ ह्लीं बगलामुखि शिरसे स्वाहा, ॐ ह्लों सर्वदुष्टानां शिखायै वषट्, ॐ ह्लीं वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय हुँ, ॐ ह्लीं जिह्वां कीलय नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ह्लीं बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्।

मन्त्रः - ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा। ॐ अस्य श्रीबगलाष्टाक्षरात्मकमन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, गायत्रीछन्दः, श्रीबगलामुखी देवता, ॐ बीजं, ह्लीं ँ शक्तिः, क्रो ँ कीलकं श्रीबगलादेवताम्बाप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः - श्रीब्रह्मर्षये नमः शिरसि, गायत्रीछन्दसे नमो मुखे, श्रीबगलामुखीदेवतायै नमो हृदि, ॐ बीजाय नमो गुह्ये, ह्लीं शक्तये नमः पादयोः, क्रो ँ कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः - ॐ ह्लां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ह्लीं तर्जनीभ्यां स्वाहा,

ॐ ह्लूँ मध्यमाभ्यां वषट्, ॐ ह्लैं अनामिकाभ्यां हुँ, ॐ ह्लौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, ॐ ह्लः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

हृदयादिन्यासः - ॐ ह्लां हृदयाय नमः, ॐ ह्लीं शिरसे स्वाहा, ॐ ह्लूं शिखायै वषट्, ॐ ह्लैं कवचाय हुँ, ॐ ह्लौं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ह्लः अस्त्राय फट्।

ध्यानम् -

युवतीं च मदोद्रिक्तां पीताम्बरधरां शिवाम्।
पीतभूषणभूषाङ्गीं समपीनपयोधराम् ॥1॥

मदिरामोदवदनां प्रवालसदृशाधराम् ।
'पानपात्रं च शुद्धिं च' बिभ्रतीं बगलां स्मरेत्॥2॥

14. एकानषष्टिवर्णात्मकः श्रीबगलोपसंहारविद्यामन्त्रः

ग्लौं हुँ ऐं ह्रीं श्रीं कालि कालि महाकालि एहि एहि कालरात्री आवेशय आवेशय महामोहे महामोहे स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर स्तंभनास्त्रशमनि हुँ फट् स्वाहा।

ॐ अस्य श्रीबगलास्त्रोपसंहारविद्यामन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, गायत्रीछन्दः, स्तंभनास्त्रविभेदिनी श्रीकालिका देवता, क्रीं बीजं, फट् शक्तिः, स्वाहा कीलकं श्रीबगलाप्रसादसिद्धिद्वारा ब्रह्मास्त्रोपसंहारार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः - श्रीब्रह्मर्षये नमःशिरसि, गायत्रीछन्दसे नमो मुखे, स्तम्भनास्त्रविभेदिनीश्रीकालिकादेवतायै नमो हृदये, क्रीं बीजाय नमो गुह्ये, फट्शक्तये नमः पादयोः, स्वाहा कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः - ॐ क्राँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ॐ क्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ क्रूँ मध्यमाभ्यां वषट्, ॐ क्रैं अनामिकाभ्यां हूँ, ॐ क्रौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, ॐ क्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

हृदयादिन्यासः - ॐ क्राँ हृदयाय नमः, ॐ क्रीं शिरसे स्वाहा, ॐ क्रूं शिखायै वषट्, ॐ क्रैं कवचाय हूँ, ॐ क्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ क्रः अस्त्राय फट्।

ध्यानम् -

कालीं करालवदनां कलाधरधरां शिवाम्।
स्तम्भनास्त्रैकसंहारीं ज्ञानमुद्रसमन्विताम्॥1॥

वीणापुस्तकसंयुक्तां कालरात्रिं नमाम्यहम्।
बगलास्त्रोपसंहारीदेवतां विश्वतोमुखीम्॥2॥

भजेऽहं कालिकां देवीं जगद्वशकरां शिवाम्।

15. द्वात्रिंशद्वर्णात्मकस्ताक्ष्यमालामन्त्रः

ॐ क्ष्रीं नमो भगवते क्ष्रीं पक्षिराजाय सर्वाभिचारध्वंसकाय क्षीमों फट् स्वाहा।

बगलोत्कीलनविधिः

प्रणवं पूर्वमुच्चार्य कूर्चयुग्मं समुच्चरेत्।
कामत्रयं वाग्भवं च लज्जाषट्कं समुच्चरेत्॥1॥

क्रींकाराष्टकमुच्चार्य बगलाशापमुच्चरेत्।
उत्कीलनपदद्वन्द्वं अग्निजायां समुद्धरेत्॥2॥

शापोद्धारप्रकारोऽयं तन्त्रराजे प्रकीर्त्तितः।
उत्कीलिता ब्रह्मविद्या मन्त्रेनानेन सिद्ध्यति॥3॥

स्पष्टार्थः - ॐ हूँ हूँ क्लीं क्लीं ऐं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं बगलाशापमुत्कीलय उत्कीलय स्वाहा॥

विशेष :- इस श्लोक का पाठ एवं मन्त्र का उच्चारण किसी भी स्थान आदि के कीलन अथवा बाह्यवायु को स्थाई रूप से हटाने के लिए करना चाहिए।

॥ श्री भगवती बगलामुखी जी॥

आरती

जय पीताम्बरधारिणि जय सुखदे वरदे, मातर्जय वरदे।
भक्त जनानां क्लेशं, भक्त जनानां क्लेशं, सततं दूर करे।
जय देवि बगले।

असुरैपीडित देवास्तव शरणं प्राप्ताः, मातस्तव शरणं प्राप्ताः।
धृत्वा कौर्मशरीरं, धृत्वा कौर्मशरीरं, दूरीकृत दुखम्।
जय देवि बगले।

मुनिजन वन्दित चरणे जय विमले बगले, मातर्जय विमले बगले।
संसारर्णवभीर्तिं, संसारर्णवभीर्तिं नित्यं शान्त करे।
जय देवि बगले।

नारदसनक मुनीन्द्रैर्ध्यातं पदकमलं, मातर्ध्यातं पदकमलम्।
हरिहरद्रुहिणं सुरेन्द्रैः हरिहरद्रुहिणं सुरेन्द्रैः, सेवितपदयुगलम्।
जय देवि बगले।

काञ्चनपीठनिविष्टे मुद्गरपाशयुते, मातर्मुद्गरपाशयुते।,
जिव्हा वज्र सुशोभित जिव्हा वज्र सुशोभित, पीतांशुकलसिते।
जय देवि बगले।

विन्दुत्रिकोणषडस्त्रै रष्टदलोपरि ते, मारष्टदलोपरि ते।
षोडशदलगतपीठं, षोडषदलगतपीठं भूपूरवृत्तयुतम्।
जय देवि बगले।

इत्थंसाधक वृन्दश्चिन्तयते रूपं, मातश्चिन्तयते रूपम्।
शत्रुविनाशकवीजं, शत्रुविनाशकवीजं, धृत्वा हृत्कमले।
जय देवि बगले।

अणिमादिक बहुसिद्धिं लभते सौख्ययुतां, मातर्लभते सौख्ययुतां।
भोगान् भुक्त्वा सर्वान् गच्छति विष्णुपदम्।
जय देवि बगले।

पूजाकाले कोऽपि आर्तिक्यं पठते, मातरार्तिक्यं पठते।
धनधान्यादि समृद्धो धनधान्यादि समृद्धः सान्निध्यं लभते।
जय देवि बगले।

श्री बगलामुखी तन्त्र में उपयोग हेतु कुण्डों के चित्र

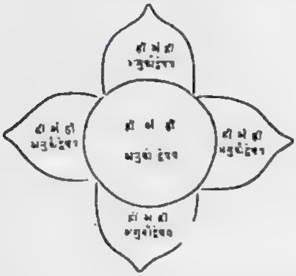

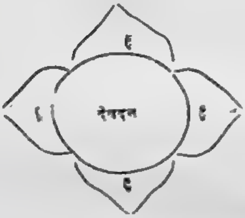

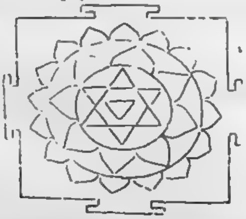

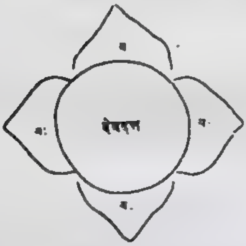

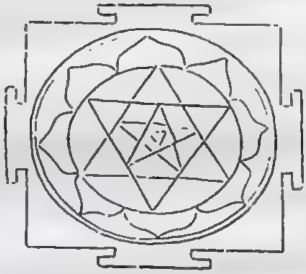

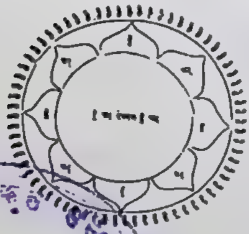

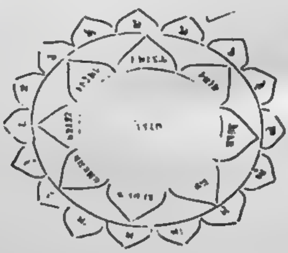

राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान
पुस्तकालय
परिग्रहण सं० 23727
दि० 16.06.08
नई दिल्ली.

वन्दना

डॉ. लक्ष्मीनारायण शास्त्री
व्याख्याता न्यायदर्शन
रा. म. आ. संस्कृत महाविद्यालय
गांधीनगर, जयपुर

या देवी
सर्वभूतेषुमातृ
रूपेणसंस्थिता
नमस्तस्यै
नमस्तस्यै
नमस्तस्यै
नमोनमः।।

प्राचीन चित्र पक्षीराज

लेखक परिचय

डॉ. लक्ष्मीनारायण शास्त्री का जन्म राजस्थान प्रान्त में जिला धौलपुर के ग्राम–बगचौलीखार में माता श्रीमती गंगा देवी पिता स्व. पं. श्री केशवदेव शास्त्री (व्याकरणाचार्य) के घर 10 सितम्बर 1968 को हुआ। प्रपितामह प. स्व. श्री भीमसेन शास्त्री म.प्र., उ.प्र. व धौलपुर जिले के प्रख्यात तॉन्त्रिक व ज्योतिषी थे।

शास्त्री जी ने अपने परदादा से तन्त्र एवं ज्योतिष तथा पिता स्व. श्री केशवदेव शास्त्री से व्याकरण शास्त्र का पारम्परिक ज्ञान प्राप्त किया। दर्शनशास्त्र, न्यायशास्त्र, धर्मशास्त्र, वास्तुशास्त्र, ज्योतिष एवं तन्त्रशास्त्र में इनके अनेक व्याख्यानों का प्रकाशन हुआ है।

गुरु परम्परा : त्रिदण्डी स्वामी 1008 श्री देवनारायण जी महाराज , प्रो. सी. एल. मिश्रा, डॉ. एस. एन. ताताचार्य (तिरूपति), प्रो. एस. पी. शुक्ला, डॉ. कमलनयन शर्मा (उपाचार्य केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ), डॉ. मण्डन शर्मा, प्रो. आनन्द पुरोहित (प्रार्चाय–राज. महा. आ. संस्कृत महाविद्यालय, जयपुर)।

शिक्षा : पी. एच. डी., दर्शन, न्याय , धर्म शास्त्र वेदाचार्य, शिक्षा शास्त्री

अनुभव : ज्योतिष, वास्तुशास्त्र, तन्त्रशास्त्र एवं पौरोहित्य

कार्यक्षेत्र : 1. न्यायशास्त्र व्याख्याता (राज. महा. आ. संस्कृत महाविद्यालय, जयपुर)

2. अध्यक्ष : राजस्थान वैदिक तांत्रिक शोध संस्थान जयुपर।

प्रकाशित ग्रन्थ : 1. वास्तुतत्त्वदीपिका 2. करगिलयुद्धेहुतराजस्थानम् 3. प्रज्ञासत्यवती 4. श्रीबगलामुखीतत्त्व विमर्श।

सहयोग आभार : श्री रामगोपाल शर्मा, श्री राधेश्याम शर्मा (ज्येष्ठ भ्रातरौ) श्रीमती इन्द्राशर्मा (लेखक पत्नी), रवि, सचिन (पुत्रौ), रश्मि (पुत्री), डॉ. कमल चोटिया, डॉ. अशोक झा, श्री सन्तोष कुमार गुप्ता।

पुस्तक प्राप्ति स्थल :

राजस्थान वैदिक तांत्रिक शोध संस्थान

4एफ एफ, जे.डी.ए. फ्लेट्स, चित्रकूट, अजमेर रोड़, जयपुर (राजस्थान)

मोबाईल : 91–9414228995